फरवरी-मार्च 2023 ▪ वर्ष : 68 ▪ अंक : 05-06 ▪ पृष्ठ : 100 ▪ मूल्य : ₹50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

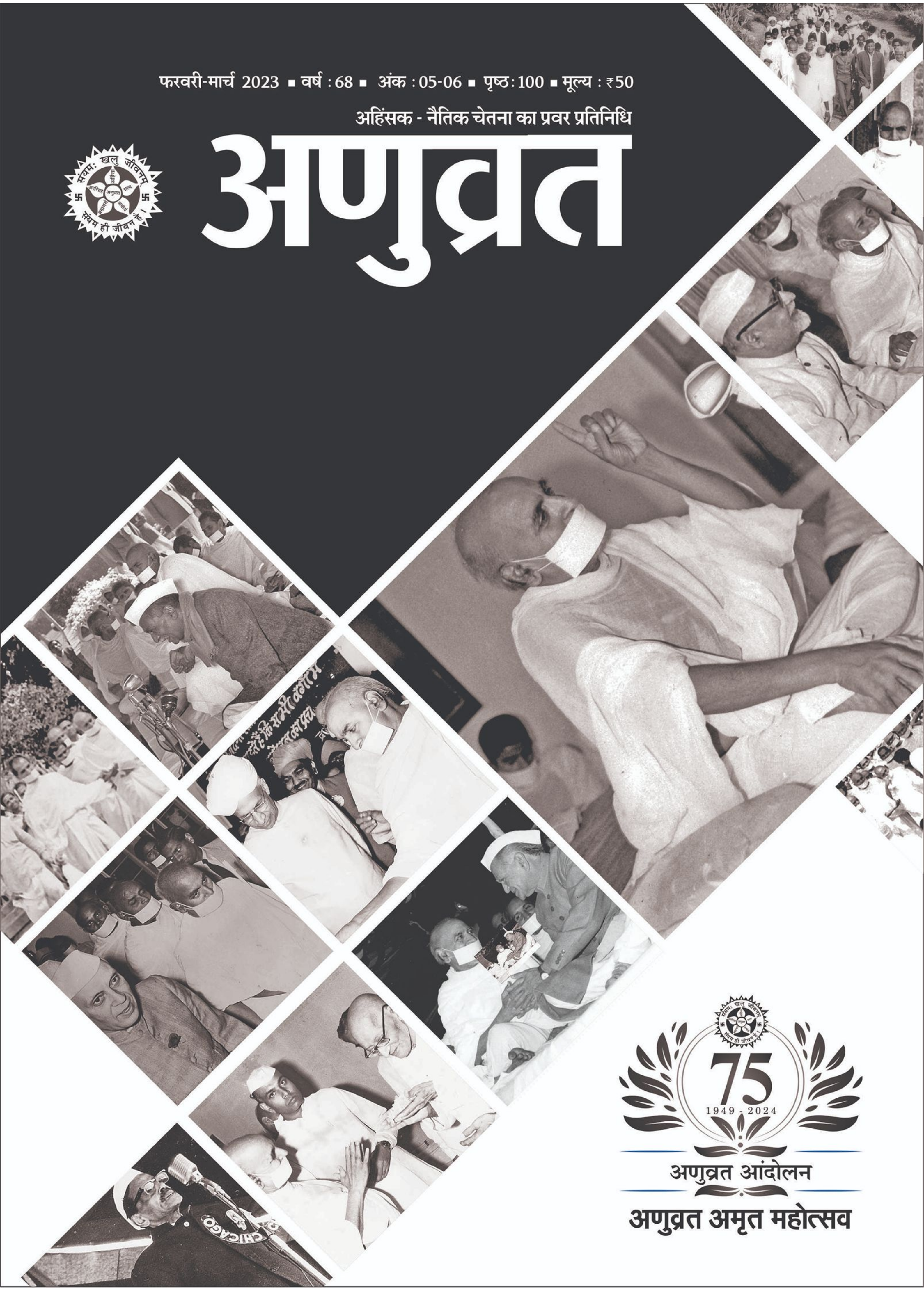

75

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत अनुशास्ता का मंगल संदेश

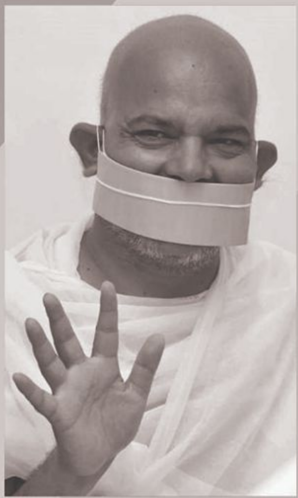

मानव के भीतर अशुभ संस्कार होते हैं और शुभ संस्कार भी उसमें होते हैं। जब अशुभ संस्कार उभर जाते हैं और शुभ संस्कार निस्तेज हो जाते हैं, तब आदमी हिंसा, असंयम और अपराध में प्रवृत्त हो जाता है तथा जब अशुभ संस्कार कमजोर पड़ते हैं और शुभ संस्कार बलवान बनते हैं, तब आदमी अहिंसक, संयमी और सदाचारी बन जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया और उसके द्वारा उन्होंने जनता को अहिंसा, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दिया। उनके नेतृत्व में चारित्रात्माओं और कार्यकर्ताओं ने भी इस अभियान में स्वयं को नियोजित किया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी अहिंसा यात्रा के द्वारा अणुव्रत के सिद्धान्तों को जनता में प्रसारित करने का प्रयास किया। वर्तमान में भी अणुव्रत का कार्य प्रगतिमान है।

अणुव्रत का प्रारंभ हुए 74 वर्ष संपन्न होने वाले हैं और 75वां वर्ष प्रारंभ होने वाला है। इस उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत अमृत महोत्सव मनाया जाना निर्णीत हुआ है। अणुव्रत का यह 75वां वर्ष अणुव्रत अभियान को विशेष गतिमत्ता प्रदान करने में योगभूत बने। चारित्रात्माओं, समणश्रेणी और गृहस्थ कार्यकर्ताओं तथा अणुव्रत के प्रति सद्भाव रखने वाले व्यक्तियों का मिला-जुला प्रयत्न इस वर्ष को सुफल बनाने वाला सिद्ध हो। शुभाशंसा।

13 जनवरी 2023
राजस्थान

आचार्य महाश्रमण

"

21 फरवरी, 2023 को
अणुव्रत अमृत महोत्सव शुभारंभ
समारोह में अपनी आगामी यात्रा
(21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024 तक)
को अणुव्रत यात्रा घोषित किया है।

शुभ संवाद...

अणुव्रत अमृत महोत्सव पर अणुव्रत अनुशास्ता की

अणुव्रत यात्रा

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन
अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा अणुव्रत यात्रा की घोषणा

आचार्य तुलसी द्वारा सन् 1949 में प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने घोषणा की है कि आगामी एक वर्ष तक वे अणुव्रत यात्रा के रूप में देश के विभिन्न भागों की पदयात्रा करेंगे। साबरकांठा (गुजरात) के खेरोज गाँव स्थित सुंदरम विद्या भवन विद्यालय में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से 21 फरवरी को आयोजित कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से समागत अणुव्रत कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में अणुव्रत अनुशास्ता ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारम्भ की घोषणा की। 21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024 (फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया) तक चलने वाले इस वार्षिक आयोजन में अहिंसक व शांतिपूर्ण समाज के निर्माण को लक्षित अनेक प्रकल्प संचालित होंगे।

आचार्य महाश्रमण ने आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी का स्मरण करते हुए उनकी दूरदर्शिता को नमन किया जिन्होंने भारत की आजादी के बाद असली आजादी का आह्वान करते हुए स्वस्थ समाज संरचना एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना के लिए अणुव्रत आंदोलन का आगाज किया था। आचार्य श्री ने कहा कि राजस्थान के सरदारशहर कस्बे में फाल्गुन शुक्ल द्वितीया विक्रम संवत् 2005, 01 मार्च, 1949 से प्रारम्भ हुए जाति, वर्ण, संप्रदाय से मुक्त इस नैतिकता के आंदोलन से प्रभावित होकर लाखों लोगों ने संयममय जीवनशैली की ओर अपने कदम बढ़ाये। उन्होंने मंगलकामना व्यक्त की कि अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष का आयोजन जन-जन में नैतिकता और मानवीय मूल्यों के उन्नयन का कार्य करेगा।

किसी सीमा में नहीं बंधा है अणुव्रत दर्शन

अपनी अमृत देशना में अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा - "आज अणुव्रत आंदोलन का पचहत्तरवां वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। प्रारम्भिक काल में इसके प्रचार-प्रसार के लिए आचार्य तुलसी ने कल्पनाशील मस्तिष्क से कितना चिंतन किया, योजनाएं बनायीं और लम्बी-लम्बी यात्राओं द्वारा उन्होंने इस नैतिक आंदोलन को आगे बढ़ाया। गरीब की झोपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक इसकी गूँज पहुँची। अणुव्रत का स्वरूप इतना व्यापक है कि बिना किसी जाति, धर्म व सम्प्रदाय के यह सबको मान्य है। इसकी कोई सीमा नहीं है। बच्चा, जवान व बूढ़ा कोई भी इसकी अनुपालना कर सकता है। बल्कि मेरा तो यहाँ तक मानना है कि कोई नास्तिक भी इस मानव धर्म को अपनाने में संकोच अनुभव नहीं करेगा।"

आचार्य महाश्रमण जी ने कहा कि अणुव्रत व मानवता को हम शुद्ध साध्य मानें तो उसकी प्राप्ति में आर्थिक शुचिता को एक शुद्ध साधन माना जा सकता है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी इस दिशा में जागरूक है, यह अच्छी बात है। साध्य और साधन दोनों शुद्ध हों, यह कार्य की सफलता के लिए अपेक्षित है। हमारी अहिंसा यात्रा से जुड़े सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति के उद्देश्य अणुव्रत के सिद्धांतों का ही हिस्सा रहे हैं। अणुव्रत अमृत वर्ष के सन्दर्भ में हम आगामी एक वर्ष की यात्रा को अणुव्रत यात्रा के रूप में घोषित कर रहे हैं। अणुव्रत के क्षेत्र में और कार्य हो, व्यापकता आये, यह काम्य है। अपने उद्बोधन के पश्चात् अचार्य प्रवर ने अणुव्रत गीत का संगान स्वयं अपने मुखारविन्द से किया। उपस्थित अणुव्रत कार्यकर्ताओं एवं जनमेदिनी ने आचार्य श्री के स्वर से अपने स्वर मिलाकर माहौल को अणुव्रतमय बना दिया।

इस अवसर पर मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी ने अणुव्रत की प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त करने के साथ ही अणुव्रत आधारित अपने सुमधुर गीत से सबको सम्मोहित कर दिया। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी ने अणुव्रत आचार संहिता और उसके साथ समाज के विभिन्न वर्गों के लिए बने वर्गीय अणुव्रतों को जन-जन के लिए उपयोगी बताते हुए जनजागरण के कार्य की आवश्यकता बतायी। साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने अणुव्रत की सारगर्भित विवेचना की। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार जी ने अपने वक्तव्य में आंदोलन के प्रारम्भ में इसके नींव के पत्थर रहे संतों व कार्यकर्ताओं को याद किया। खेरोज के उत्तर बुनियादी उच्चतर माध्यमिक आश्रमशाला में आयोजित इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुविभा अध्यक्ष ने फहराया अणुव्रत ध्वज

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत ध्वज फहराया और अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। देशभर से जमा हुए अणुव्रत कार्यकर्ताओं समेत उपस्थित जनसमूह ने मनोभाव से इन अणुव्रत नियमों का पुनःउच्चारण किया। अविनाश नाहर ने "अणुव्रत यात्रा" की अमृत उद्घोषणा हेतु अणुव्रत परिवार की ओर से आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने बताया कि देश भर में लगभग 160 अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों से जुड़े हजारों अणुव्रत कार्यकर्ता समर्पित भाव से इस मानवतावादी मिशन को जन-जन तक पहुँचाने में संलग्न हैं। नेपाल सहित विभिन्न देशों में भी श्रेष्ठ व्यक्ति निर्माण इस इस अभियान को गति मिल रही है। खेड़ब्रह्मा के विधायक तुषार चौधरी ने कहा कि वे न केवल अणुव्रत विचारधारा के समर्थक हैं बल्कि उन्होंने इसे अपने जीवन व्यवहार का भी हिस्सा बनाया है।

संयम दर्शन में विश्व की समस्याओं का समाधान

अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन ने कहा कि आज विश्व जिन समस्याओं से जूझ रहा है, उनका समाधान अणुव्रत के संयम दर्शन में छिपा है। उन्होंने अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण और कार्यकर्ता निर्माण के लिए लक्षित कायक्रमों की जानकारी दी। अणुविभा के उपाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक राजेश सुराणा ने कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट व्यक्तियों, आदिवासी समुदाय से समागत नागरिकों एवं स्कूली बच्चों का स्वागत किया।

शुभारम्भ समारोह की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया ने इस अवसर पर देशभर में 100 भी अधिक स्थानों पर अणुव्रत

अमृत रैली, संगोष्ठी और पत्रकार वार्ता आयोजित होने की जानकारी दी। अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने सभी का आभार व्यक्त किया। प्रारम्भ में ऋषि दुगड़ ने अणुव्रत अमृत महोत्सव गीत का संगान किया, जिनका साथ अणुविभा कार्यकर्ताओं ने दिया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। अतिथियों को गुजराती भाषा में अणुव्रत आचार संहिता के फ्रेम भेंट किये गये।

अणुव्रत पत्रिका जन-जन में जगाये संयम की चेतना

अणुविभा पदाधिकारियों ने अमृत महोत्सव पर प्रकाशित अणुव्रत पत्रिका का संयुक्तांक एवं अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2023 की सामग्री अणुव्रत अनुशास्ता को भेंट की। आचार्य श्री ने मंगलकामना व्यक्त की कि अणुव्रत पत्रिका में प्रकाशित सामग्री जन-जन में संयम की चेतना को जगाने में योगभूत बने। अणुव्रत से प्रभावित होकर क्षेत्रीय आदिवासियों समेत समागत अनेक व्यक्तियों ने जीवन की बेहतरी के लिए अणुव्रत अनुशास्ता से सामूहिक रूप से अणुव्रत संकल्पों को स्वीकार किया। समारोह में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के पोस्टर का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, माला कातरेला व विनोद कोठरी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, संगठन मंत्री कुसुम लुनिया व राजेश चावत, प्रकाशन मंत्री

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन
अणुव्रत अमृत महोत्सव

देवेंद्र डागलिया, गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, तेलंगाना प्रभारी तिलोक सिपानी, नेपाल प्रभारी भरत चोरडिया, विभिन्न प्रकल्पों के प्रभारी सुरेश दक, रमेश पटावरी, सुरेश कोठारी, डॉ. नीलम जैन, डॉ. कमलेश नाहर, पायल चोरड़िया, अशोक चोरड़िया, राकेश चौरड़िया, रमेश डोडावाला, साधना कोठारी, संजय चोरड़िया, प्रणीता तलेसरा, सुभद्रा लुणावत, सुरेश बागरेचा, सहित देशभर से समागत अणुव्रत कार्यकर्ता उपस्थित थे। आज के कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक राजेश सुराणा के साथ ही सह संयोजक राकेश चौरड़िया, शंकर पितलिया, सुरेश बागरेचा, अर्जुन मेड़तवाल व विपिन पितलिया की सक्रिय भूमिका रही।

अमृत रैली में अणुव्रत के नारों की गूँज

हडाद गाँव से पदयात्रा के खेरोज गाँव पधारने से पूर्व अणुव्रत कार्यकर्ता एवं स्थानीय विद्यार्थी अणुव्रत रैली के माध्यम से शांतिदूत की अगवानी को तैयार थे। इस अणुव्रत अमृत रैली का शुभारम्भ अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत झण्डा लहराकर किया। इस रैली में अणुव्रत आचार संहिता के 11 नियमों की गुजराती में छपी तख्तियां विशेष आकर्षण का केन्द्र थीं। अणुव्रत गीत "संयममय जीवन हो" संयम की चेतना जागृत कर रहा था। विद्यार्थियों द्वारा लगाये जा रहे अणुव्रत के नारे अणुव्रत विचार को अनुगूँजित कर रहे थे।

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन
अणुव्रत अमृत महोत्सव

■ ■ ■

आचार्य श्री एक पवित्र आत्मा हैं। उन्होंने मानवता के लिए अब तक जो भी कुछ किया है और करते हैं, वह अभिनन्दनीय है। आज अपेक्षा इस बात की है कि लोग आचार्य श्री के बताये हुए मार्ग पर चलें। उनके विचारों को जीवनगत करने से ही संपूर्ण राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। आज समूचे विश्व में भौतिक साधनों की प्राप्ति के लिए जो अंधी दौड़ चल रही है, उसके सम्मुख आचार्य श्री तुलसी ने लाल बत्ती दिखाकर सच्चा सुख कहां है, इसके लिए 'अणुव्रत' के माध्यम से मार्गदर्शन किया है।

- रविशंकर महाराज

■ ■ ■

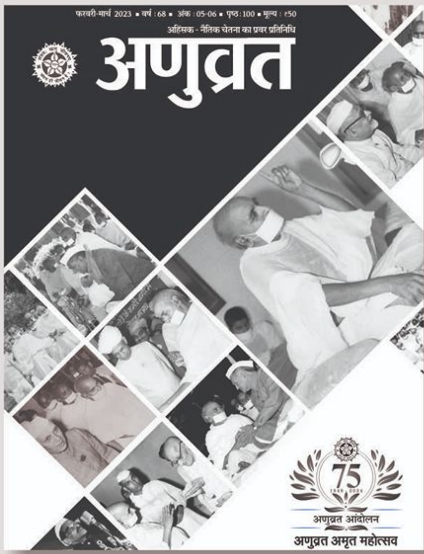

वर्ष 68 ● अंक 5–6 ● कुल पृष्ठ 100 ● फरवरी–मार्च, 2023

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट	क्रिएटिव्स	चित्रांकन
मनीष सोनी	**आशुतोष रॉय**	**मनोज त्रिवेदी**

अविनाश नाहर, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	– ₹ 60
त्रैवर्षीय	– ₹ 1800
पंचवर्षीय	– ₹ 3000
दसवर्षीय	– ₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs.)	– ₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::
https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- नयी कल्पनाएँ, नया चिन्तन — 12
  आचार्य तुलसी
- संयम और संकल्प की चेतना — 20
  आचार्य महाप्रज्ञ
- अणुव्रत : एक सार्वभौम धर्म — 28
  साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

आलेख

- अणुव्रत का अवदान : मानवता को वरदान — 32
  साध्वीश्री सम्बुद्धयशा
- अणुव्रत द्वारा मेरा रूपान्तरण — 36
  डॉ. सोहनलाल गांधी
- यूं समझा मैंने अणुव्रत को — 40
  डॉ. महेन्द्र कर्णावट
- सम्मेलनों से जुड़ी स्मृतियाँ — 42
  तेजकरण सुराणा
- अणुव्रत से जुड़ता चला गया — 46
  महावीर राज गेलड़ा
- अणुव्रत का मेरे जीवन पर प्रभाव — 48
  विजयराज सुराणा
- सर्वधर्म सद्‌भाव का सुंदर गुलदस्ता — 52
  जी.एल.नाहर
- नैतिक क्रांति की आचार संहिता — 54
  डॉ. भोपालचंद लोढ़ा
- अणुव्रत ने मुझे राष्ट्रीय पहचान दी — 56
  डॉ. हीरालाल श्रीमाली
- नैतिकता : अणुव्रत का प्राण — 58
  प्रेमसिंह चौधरी

- संपादकीय — 09
- अणुव्रत गीत — 10
- अध्यक्ष की कलम से — 11
- अणुव्रत संकल्प श्रृंखला — 26
- अणुव्रत चेतना गीत — 27
- जय जय अणुव्रत... — 35

- गौरवशाली अतीत के झरोखे से... — 61 से 83

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"।

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

जीवन नदिया में नैया है अणुव्रत

जो बूंद है
वो समंदर भी है
जो दूर है
वो निकट भी है
नजर फेरो जरा
जो बाहर है
वो अंदर भी है।

नज़र का कोण
जब विस्तार पाता है
दुनिया का स्वरूप
बदल सा जाता है
नजरिया ही जिंदगी की
तासीर गढ़ता है
लघुता में
विराट पाता है
और
विराट लघु में
सिमट जाता है।

दृष्टि का यह फेर...
गंदगी में
खूबसूरती ढूंढ़ लाता है
सपाट में आकार,
इनकार में स्वीकार
और
एकांत में अनेकांत का
दर्शन पाता है।
शोर में शांति,
ऊँचाई में गहराई,
विफलता में सफलता
विपन्नता में सम्पन्नता
और
आलोचना में प्रेरणा...

नजरिये का यह भेद
जब समझ आता है,
जीवन का नया स्वरूप
उभर आता है।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की बात करते हुए एक बार कहा था कि जीवन नदिया को पार करने के लिए अणुव्रत श्रेष्ठ नैया है। आचार्य तुलसी जिन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया, ताजन्म जन-जन को जीवन जीने का सद्मार्ग दिखाते हुए सामाजिक बदलाव के ऊर्जस्वी स्रोत बने रहे। आचार्य तुलसी ने धर्म के नाम पर प्रचलित वैचारिक संकीर्णताओं को तोड़ कर मानव धर्म की एक ऐसी बुनियाद रखी जो आज भी विश्व मानव का मार्गदर्शन कर रही है।

दुनिया को सदैव एक ऐसे धर्म की आवश्यकता महसूस होती रही है जो बाहरी विकर्षण से बचा कर इंसान को स्वयं से साक्षात्कार करने की कला सिखा सके। मानव-मानव के बीच नफरत की दीवारें गिरा कर आपस में मिल-जुल कर रहना सिखा सके। शुद्ध साध्य के लिए साधन की शुद्धता की वकालत करे और मानव जीवन में हिंसा की अनिवार्यता को न्यूनतम कर सके। सुविधावाद पर चोट कर पृथ्वी के पर्यावरण और प्रकृति के संतुलन को बचाये रखने में मददगार हो सके। एक सार्वभौम धर्म की कुछ ऐसी ही कसौटियों पर खरा उतरता है अणुव्रत का वैश्विक दर्शन।

1 मार्च 1949 को प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन अपनी 74 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पूर्ण कर "अणुव्रत अमृत महोत्सव" मनाने को उद्यत है। अणुव्रत आंदोलन से जुड़े और अणुव्रत दर्शन में भरोसा करने वाले हर एक व्यक्ति के लिए, भले ही वह दुनिया के किसी भी कोने में रहता हो, कोई भी भाषा बोलता हो, किसी भी जाति या लिंग का हो, किसी भी धर्म या धर्मग्रंथ को मानता हो अथवा न भी मानता हो, अणुव्रत अमृत महोत्सव का यह अवसर दुनिया को अहिंसा और शांति के पथ पर अग्रसर करने की अपनी प्रतिबद्धता को और अधिक संपुष्ट करने का अवसर है। मानव धर्म को अपनाने का बुलंद आह्वान है। यह अवसर है व्यक्ति को स्वयं अपने भीतर झांकने का और संयम के अभ्यास को अपना स्वभाव बनाने का।

संयम का दर्शन एक सार्वकालिक, सार्वजनीन और सार्वभौम दर्शन है। इस दर्शन की जरूरत हर युग में रही है और हर युग में रहेगी। इंसान जब भी किसी समस्या से दो-चार होगा, संयम के दर्शन में ही उसे समाधान का सूत्र मिलेगा। इस जीवन सत्य को पहचानने में व्यक्ति जितना प्रमाद करेगा, जितना विलम्ब करेगा, एक समस्या कई और नयी समस्याओं को जन्म देती रहेगी और समस्याओं से घिरा व्यक्ति स्वयं समस्या बन जाएगा। ऐसे व्यक्ति ही फिर समाज को और देश-दुनिया को समस्याग्रस्त बनाते रहेंगे।

हम अपने इर्द-गिर्द इस यथार्थ का साक्षात्कार आसानी से कर सकते हैं। व्यक्ति जितना भीतर समस्याग्रस्त है, बाहरी दुनिया में उसी अनुपात में से वह समस्याओं से घिरा हुआ है। समस्याओं का यह चक्रव्यूह सदैव मानव जीवन को दिग्भ्रमित करता रहा रहा है, किंतु आज परिस्थितियाँ अधिक विकराल रूप लेती जा रही हैं। इस परिदृश्य में इस बात से सहमत होना आसान नहीं है कि समस्याओं के इस मायाजाल से बाहर निकलने का रास्ता अणुव्रत से होकर गुजरता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि समस्या का समाधान वहीं छिपा होता है जहां समस्या की जड़ होती है। दुनिया की जिन मानवजनित समस्याओं की हम बात कर रहे हैं, उन समस्याओं के मूल में व्यक्ति है, तो समाधान भी व्यक्ति को स्वयं अपने में ही ढूँढ़ना होगा। व्यक्ति के बाहर समस्या का समाधान ढूँढ़ना बेमानी होगा। अणुव्रत का महत्व इसी यथार्थ में छिपा है। अणुव्रत व्यक्ति सुधार के माध्यम से समष्टि के सुधार की बात करता है।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के शुभारम्भ के अवसर पर प्रकाशित यह संयुक्तांक अणुव्रत के दर्शन को, अणुव्रत के इतिहास को और अणुव्रत के कार्यकारी पक्ष को सुधी पाठकवृंद के सम्मुख प्रस्तुत करने का एक विनम्र प्रयास है। इस वर्ष देश-विदेश में अणुव्रत के विभिन्न उपक्रमों की गूँज रहेगी। आइए, इन प्रयासों में सहभागिता कर एक नये समाज के निर्माण के इस मिशन में अपना यथाशक्ति योगदान दें।

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

अणुव्रत गीत

रचनाकार : आचार्य तुलसी

संयममय जीवन हो।
नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो।।

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे-छोटे संकल्पों से, मानस-परिवर्तन हो।
संयममय जीवन हो।।1।।

मैत्री-भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए।
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित, मात्र शुद्ध साधन हो ।
संयममय जीवन हो ।।2।।

विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी।
नर हो नारी बने नीतिमय, जीवनचर्या सारी।
कथनी-करनी की समानता, में गतिशील चरण हो ।
संयममय जीवन हो ।।3।।

प्रभु बनकर के ही हम, प्रभु की पूजा कर सकते हैं।
प्रामाणिक बनकर ही, संकट सागर तर सकते हैं।
शौर्य-वीर्य-बलवती अहिंसा, ही जीवन-दर्शन हो।
संयममय जीवन हो ।।4।।

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।
'तुलसी' अणुव्रत-सिंहनाद, सारे जग में प्रसरेगा।
मानवीय आचार-संहिता, में अर्पित तन-मन हो।
संयममय जीवन हो ।।5।।

अणुव्रत अमृत महोत्सव एक आह्वान

मानव मानव बना रहे, इसके लिए आवश्यक है कि उसमें संयम की चेतना का विकास हो। संयम के साथ जीने वाला व्यक्ति स्व-कल्याण के साथ-साथ पर-कल्याण में भी योगभूत बन सकता है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में अणुव्रत के सिद्धांत अत्यंत प्रभावकारी हैं। वर्ण, जाति, लिंग भेद से अलग अणुव्रत का यह आंदोलन सामान्य व्यक्ति से लेकर राष्ट्रपति तक पहुँचा है। अणव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी की दूरदृष्टि, साधु-साध्वियों एवं मनीषियों तथा अनेक समर्पित व जीवनदानी कार्यकर्ताओं के कारण ही यह संभव हुआ। अणुव्रत एक सुव्यवस्थित जीवनशैली है जिसे समझकर आत्मसात किया जाना आवश्यक है। जनमानस अणुव्रत की आचार संहिता को आत्मसात करने का सलक्ष्य प्रयास करे, सभी अणुव्रत कार्यकर्ताओं का यह उद्देश्य होना चाहिए।

अणुव्रत आंदोलन प्रादुर्भाव से प्रगति तक एक अविस्मरणीय और गौरवशाली इतिहास को अपने आप में समाहित किये हुए है। भारत की स्वतंत्रता के कुछ दिनों बाद ही अणुव्रत आंदोलन भी प्रारंभ हुआ था। यह एक सुखद संयोग ही कहा जा सकता है कि आजादी के अमृत महोत्सव की गौरवमयी वेला में भारत को इस वर्ष जी-20 के कार्यक्रमों के आयोजन का महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ है। अहिंसा और शांति का एक मजबूत पक्षधर है अणुव्रत जो जी-20 समूह के देशों के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व के मानव जीवन के सफल और श्रेष्ठ संचालन में योगभूत बन सकता है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के मार्गदर्शन में अणुविभा ने अणुव्रत अमृत महोत्सव के तहत वर्ष भर की कार्ययोजना तैयार करते हुए व्यक्ति-निर्माण और समाज-निर्माण के लिए कई कार्यक्रम निर्धारित किये हैं। इनमें व्यक्ति-निर्माण के लिए जन-जन को अणुव्रत आचार संहिता के प्रति संकल्पित करवाना तथा प्रत्येक मंगलवार को संयम दिवस के रूप में मनाना शामिल है। संयम दिवस के तहत संयमित जीवनशैली का अभ्यास करते हुए प्रत्येक मंगलवार को एक घंटा मौन साधना करना, नशे से मुक्त रहना और मांसाहार नहीं करना है। वहीं, व्यक्ति-निर्माण के तहत नयी पीढ़ी के सर्वांगीण एवं संतुलित विकास हेतु जीवन विज्ञान के शिक्षण-प्रशिक्षण का विस्तार करना है। अणुव्रत बालोदय कार्यक्रमों को व्यापक स्वरूप प्रदान करना इसको मजबूत आधार देगा।

समाज लक्षित कार्यक्रमों के तहत विभिन्न शहरों में अणुव्रत व्याख्यानमाला, परिचर्चा, संगोष्ठी के साथ ही अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया जाना है। नशे की लत धीमे जहर के रूप में मानवता को लीलने को तत्पर है। ऐसे में अणुव्रत कार्यकर्ताओं को नशामुक्ति के राष्ट्रव्यापी अभियान में जुट जाना जरूरी है। अणुव्रत का एक प्रमुख प्रकल्प है पर्यावरण शुद्धि। इस प्रकल्प के तहत अणुव्रत अमृत महोत्सव के दौरान लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाने के लिए व्यापक अभियान चलाना है।

अणुव्रत अनुशास्ताओं के मार्गदर्शन में कार्यकर्ताओं की समर्पित सेवा का ही प्रतिफल है कि अणुव्रत आंदोलन आज अमृत महोत्सव मना रहा है। इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए अणुविभा ने अणुव्रत प्रवक्ता, प्रबोधक और जीवनदानी कार्यकर्ता तैयार करने का लक्ष्य रखा है। इसके साथ ही अणुव्रत दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में नयी अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंच का गठन किया जाना है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन का गौरवशाली 75वां वर्ष शुरू होने के अवसर पर अणुव्रत समितियों के सदस्यों की कुल संख्या 75 हजार तक पहुँचानी है। अणुव्रत समितियों में महिलाओं, युवकों एवं विभिन्न जाति, धर्म, समुदाय के व्यक्तियों की सहभागिता बढ़ानी है।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने कहा था - "अणुव्रत स्वस्थ समाज संरचना की बुनियाद है। जो लोग अपने समाज को स्वस्थ बनाना चाहते हैं, वे व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन को अणुव्रत आचार संहिता के सांचे में ढालने का प्रयत्न करें। यह एक सामूहिक अनुष्ठान है।" गुरुदेव के इस कथन को हृदयंगम करते हुए हम सभी स्वस्थ समाज की संरचना में जुटकर अपने जीवन को सार्थक करें।

'अणुव्रत' पत्रिका का यह संयुक्त अंक पाठकों के लिए एक सुंदर दस्तावेज है। इसे पढ़कर पाठकों को आत्मतोष के साथ-साथ प्रेरणा प्राप्त होगी। इसमें अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास के पृष्ठों पर विहंगावलोकन के साथ ही अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गयी है। पत्रिका हेतु सामग्री के संयोजन में संपादकीय टीम का प्रयास निश्चित ही प्रशंसनीय है।

अविनाश नाहर
अध्यक्ष, अणुविभा

नयी कल्पनाएँ, नया चिन्तन

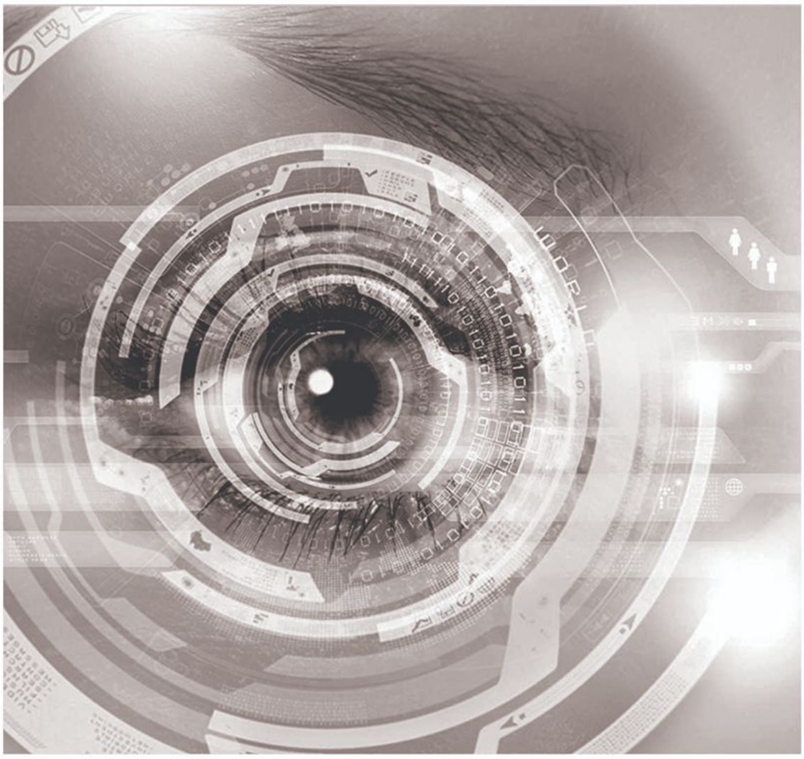

आचार्य तुलसी

आचार्य श्री तुलसी जानते थे कि नये चिन्तन का समाज में एक बार विरोध होगा। विरोध के भय से काम न किया जाये तो कभी कुछ होने का भी नहीं है। विरोध का प्रतिवाद किये बिना वे अपना काम करते रहे।

थली प्रदेश का मध्यवर्ती क्षेत्र रतनगढ़। वि.सं. 2004 (सन् 1947) का रतनगढ़ चातुर्मास्य नये विकास की पृष्ठभूमि का चातुर्मास्य था। वहां अनेक नये व्यक्ति सम्पर्क में आये। नया दृष्टिकोण निर्मित हुआ। नये चिन्तन के द्वार खुले और नयी प्रवृत्तियों की संभावना को लेकर समाज में नयी हलचल शुरू हो गयी।

उस समय देश में आजादी की चर्चा बहुत तीव्र थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में देशभक्त लोग आजादी की लड़ाई में संलग्न थे। महात्मा गांधी का अपना स्वतंत्र दर्शन था। वे हिंसा के बल पर देश को स्वतंत्र करने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने अहिंसा की क्षमता को पहचाना और उसी को हथियार बनाया। अंग्रेजों ने घुटने टेक दिये। 15 अगस्त 1947 को शताब्दियों की परतंत्रता के बाद हिन्दुस्तान आजाद हुआ। किन्तु स्वतंत्रता संग्राम के समय देश की जनता में जो एकता थी, वह टूट गयी। जाति और धर्म के नाम पर संघर्ष होने लगे। उस समय देश के नागरिकों को सम्बोधित कर मैंने एक गीत गाया - असली आजादी अपनाओ।

गीत में कोई नयी बात नहीं थी, एक सामाजिक प्रेरणा मात्र थी। वह श्रोताओं के मन को छू गयी। राजनीति में सक्रिय लोगों ने इस गीत को पसन्द किया। हमारे लिए वह एक नया अनुभव था।

आचार्य श्री तुलसी के गीत "असली आजादी अपनाओ" में एक सामाजिक प्रेरणा थी। वह श्रोताओं के मन को छू गयी।

असली आजादी अपनाओ,
मिली तुम्हें जो यह आजादी,
आगे कदम बढ़ाओ।।

■■

बंधन जो हैं परवशता के,
समझो अंतर-ज्योति जगा के,
तोड़ो अमित आत्मबल पा के,
ज्यों स्वतंत्र बन जाओ।।

■■

है गुलाम दुनिया स्वारथ की,
पराधीनता मन-मन्मथ की,
पग-पग ममता मोह बिछा है,
क्यों न नजर में लाओ।।

■■

रिश्वतखोरी जुआ-चोरी,
धधक रही हिंसा की होरी,
धर्म नाम पर बन नृशंस क्यों
जरा न दिल शरमाओ।।

■■

अपने पर अपना सुनियंत्रण,
सच्चे सुख को है आमंत्रण,
सही रूप में यह स्वतंत्रता,
जन-जन को समझाओ।।

■■

यह पंद्रह अगस्त का अवसर,
हो भारत का ओजस्वी स्वर,
''तुलसी'' सब आध्यात्मिकता के
अभिनव दीप जलाओ।।

तब तक देश, राजनीति, आजादी आदि विषयों पर हम लोग प्रायः नहीं बोलते थे। बदले हुए समय और परिवेश ने हमको प्रेरित किया। हमने अपनी सीमा में बोलना शुरू किया। राजनैतिक दासता से मुक्ति पाने के बाद अपनी दुष्प्रवृत्तियों से मुक्ति पाने का आह्वान लोगों को रुचिकर लगा। तेरापंथ समाज के लोगों के अतिरिक्त अन्य कौमों के लोग भी संपर्क में आने लगे। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता के एक सौ अड़सठ दिन शान्ति और आश्वस्ति के दिन नहीं थे। तनाव और कुण्ठा के वातावरण में 30 जनवरी 1948 का सूर्योदय हुआ। महात्मा गांधी प्रार्थना सभा में जा रहे थे। उनके शरीर पर गोली लगी और वे धराशायी हो गये। गोली दागने वाला एक हिन्दू था - नाथूराम गोडसे। उसके मन में या उसको प्रेरित करने वालों के मन में यह आशंका थी कि गांधी मुसलमानों के पक्ष में हैं। सचाई यह है कि उनके लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों समान थे। वे उनमें भ्रातृत्व भाव का विकास देखना चाहते थे। गांधी की हत्या ऐसे समय में हुई, जब हिन्दुस्तान को नया निर्माण करना था। निर्माण की वेला में ध्वंसात्मक संवाद से देश को बड़ा सदमा पहुँचा। पंडित जवाहरलाल नेहरू स्तब्ध रह गये। उनका बहुत बड़ा आलम्बन छूट गया। देश में व्यापक स्तर पर शोक मनाया गया। उन दिनों हम चाड़वास में थे। हत्या की सूचना वहां पहुँची। हमने उस दिन आगम का स्वाध्याय बन्द रखा। देश के विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु पर आगम का स्वाध्याय बन्द रखने की हमारी परम्परा है।

महात्मा गांधी के साथ हमारा साक्षात मिलन नहीं हो सका, पर हम उनके विचारों से परिचित और प्रभावित थे। हम उनसे मिलना भी चाहते थे। किन्तु उस समय तक हमारा विहार क्षेत्र बीकानेर रियासत तक सीमित था। जनसम्पर्क भी इतना व्यापक नहीं था। इस कारण गांधीजी से मिलने की बात मन में रह गयी। संभवत: वे भी ऐसी ही बात मन में लेकर गये होंगे। क्योंकि प्रत्यक्ष मिलन न होने पर भी साहित्य के माध्यम से हमारा मिलन हो चुका था। 'अशान्त विश्व को शान्ति का संदेश' और 'अहिंसा' - हमारी ये दो पुस्तिकाएं उनके पास पहुँचीं। उन्होंने उनका अध्ययन किया। कुछ स्थलों पर अपनी ओर से टिप्पणियां लिखीं। कुछ स्थलों पर प्रश्नचिह्न अंकित किये। अन्त में अपनी प्रतिक्रिया लिखी- "कितना अच्छा होता, इस महापुरुष द्वारा बताये सिद्धांतों पर संसार चलता।"

'अशान्त विश्व को शान्ति का संदेश' पुस्तिका का प्रकाशन लन्दन में हुए विश्व धर्म सम्मेलन के बाद काफी विलम्ब से हुआ था।

इस संदर्भ में गांधीजी ने लिखा- "ऐसी पुस्तक के प्रकाशन में विलम्ब क्यों हुआ?" उनके हाथ से की गयी टिप्पणियों वाली पुस्तिका संयोग से हमारे पास पहुँच गयी। उसे देखकर हमें इस बात का संतोष हुआ कि आमने-सामने बैठकर वार्तालाप का मौका हमें भले ही नहीं मिला, पर साहित्य के माध्यम से हमारा मिलन हो गया।

महात्मा गांधी ऐसे व्यक्ति थे, जिनके व्यक्तित्व में विलक्षणता थी। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने उनके बारे में लिखा है- "आने वाला युग विश्वास नहीं करेगा कि एक हाड़-मांस का पुतला ऐसा व्यक्ति कभी हुआ था, जिसके विचार उदार थे, चिन्तन व्यापक था और जीवन विशिष्ट था।" उनका सादगी भरा व्यक्तित्व इस पूरी सदी के लिए प्रेरणादीप था। वे गये, पर स्वाभाविक मौत से नहीं गये। उनकी हत्या का हादसा आज भी लोगों में सिहरन पैदा कर रहा है। गांधी रहते तो हिन्दुस्तान की छवि कुछ और ही होती, ऐसा अनेक लोगों का चिन्तन है, पर नियति का योग था। गांधीजी का युग असमय में ही समाप्त हो गया।

एक कुप्रथा की इतिश्री

उस समय मैं तरुण अवस्था में था। मन में नयी-नयी कल्पनाएँ उठ रही थीं। कल्पनाओं के आकाश में उड़ने की

आकांक्षा प्रबल थी। पंख आने शुरू हो गये, पर उनमें उड़ने का सामर्थ्य नहीं आया था। मैंने सोचा- जिस युग में हम जी रहे हैं, हमारी गतिविधियों में नवीनता आवश्यक है। अन्यथा हम युग से पिछड़ जाएंगे। एक साथ अनेक नयी बातों को समाज द्वारा पचाना संभव नहीं लगा। इस दृष्टि से खण्ड-खण्ड में कुछ काम शुरू किये।

उस युग में मृत्यु के बाद रूढ़ि रूप में रोने की परम्परा थी। गाँव के एक छोर पर किसी की मृत्यु होती और उसके दूसरे छोर पर किसी सम्बन्धी का घर होता तो उस घर की महिलाएँ रोती हुई पूरे गाँव को पार कर वहां पहुँचतीं, इससे गाँव का माहौल क्रन्दनपूर्ण हो उठता। मारवाड़ के पुरुषों में भी रोने की परम्परा थी। कहा जाता है कि बीकानेर में मृत्यु के प्रसंग पर रोने के लिए किराए की औरतें बुलायी जाती थीं।

अपने प्रियजन की मृत्यु पर दु:ख होना अस्वाभाविक नहीं है। दु:ख के क्षणों में आँखें द्रवित भी हो सकती हैं। विशेष स्थिति में सिसकियां भी बंध सकती हैं। किन्तु रूढ़ि रूप में रोने का क्या औचित्य है? गाँव की गलियों में रोते हुए जाने का क्या अर्थ है? इस प्रकार का चिन्तन समाज के सामने रखा तो वृद्ध लोग कहने लगे- "ये नये आचार्य नयी बातें कहां से लाये हैं? हमारे पूर्ववर्ती आचार्यों ने तो ऐसा कभी नहीं कहा। आज ये कहते हैं कि मृतक के पीछे रोओ मत, कल कहेंगे कि मृतकों को जलाओ मत। समाज में जो काम होते आये हैं, वे होंगे ही। सामाजिक कामों में इन्हें हस्तक्षेप करने की क्या जरूरत है?"

मैं जानता था कि नये चिन्तन का समाज में एक बार विरोध होगा। विरोध के भय से काम न किया जाये तो कभी कुछ होने का भी नहीं है। विरोध का प्रतिवाद किये बिना मैं अपना काम करता रहा। रोने की प्रथा का सम्बन्ध महिलाओं से था। उन्हें समझाने के लिए मैंने साध्वीप्रमुखा लाडांजी को निर्देश दिया। वे इस काम के पीछे पड़ गयीं। गाँव-गाँव, घर-घर में उन्होंने अलख जगा दी। धीरे-धीरे महिलाओं की मानसिकता बदली। पुरुषों ने इस परम्परा की व्यर्थता का अनुभव किया और एक कुप्रथा की कमर टूट गयी।

अस्पृश्यता के खिलाफ पहला कदम

वि.सं. 2004 के पौष महीने में हम छापर थे। श्रावक समाज में धर्मोपासना का सामान्य क्रम चल रहा था। एक दिन मन में विचार आया - भगवान महावीर ने धर्म के क्षेत्र में जात-पांत का कोई बंधन स्वीकार नहीं किया, फिर भी जैन धर्म प्राय: एक कौम विशेष में सीमित हो गया। हम जहां ठहरते हैं और प्रवचन करते हैं, वहां अन्य लोग आने में संकोच करते हैं। उनका संकोच दूर करने के लिए कभी-कभी सार्वजनिक स्थानों में प्रवचन होना चाहिए।

चिन्तन निर्णय में बदला और निर्णय की क्रियान्विति हो गयी। पौष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी का प्रवचन बाजार में रखा गया। गाँव में सब लोगों तक सूचना पहुँचा दी गयी। उस दिन अच्छी उपस्थिति थी। हरिजन लोग बड़ी संख्या में प्रवचन सुनने आये। धर्म के सार्वभौम स्वरूप की व्याख्या करते हुए मैंने आचरण सुधारने पर बल दिया। प्रसंगवश दारू और मांस के दुष्परिणामों की विस्तार से चर्चा की गयी।

समय की बात, प्रवचन में कही गयी बातें श्रोताओं के दिल को छू गयीं। उन्हें अपने दुर्व्यसनों से घृणा हुई। सैकड़ों हरिजन एक साथ उठे। उन्होंने दारू पीने और मांस खाने का परित्याग कर दिया। 80 परिवारों ने मिलकर यह निर्णय लिया कि उनके परिवारों में कोई भी व्यक्ति नियम तोड़ेगा, उसे जुर्माने के रूप में 151 रुपये देने होंगे। उस दिन के कार्यक्रम का लोगों पर व्यापक प्रभाव हुआ।

वह समय संक्रान्ति का समय था। युवा पीढ़ी के लोग कुरूढ़ियों, कट्टरताओं और अर्थहीन परम्पराओं को लेकर विद्रोही बन रहे थे। बुजुर्ग पीढ़ी के लोग पुरातनपन्थी थे। वे रूढ़िवाद के पक्ष में थे। उन पर जातिवाद का प्रभाव था। इस स्थिति का असर समाज पर तो था ही, धर्मसंघ भी तात्कालिक प्रभाव से मुक्त नहीं था। इस विषय में कोई नया चिन्तन भी नहीं था। एक धारणा बद्धमूल थी कि साधुसंघ अध्यात्म के क्षेत्र में काम करें। लौकिक परम्पराओं से उसका कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। कुछ लोगों ने समसामयिक प्रश्नों को मेरे सामने उपस्थित किया। मैंने भी आगे-पीछे का चिन्तन किये बिना स्पष्ट कह दिया - "समाज की जैसी भी स्थिति है, उसमें हम क्या कर सकते हैं? हमारी अपनी सीमाएं हैं। हम सीमा से बाहर नहीं जा सकते।"

जब तक चिन्तन की खिड़कियां बन्द रहती हैं, शुद्ध हवा का झोंका नहीं आ सकता। विकास की दिशाएं खुलती हैं तो हर नयी बात सामने आ जाती है। एक दिन मैं स्वयं सोचने लगा - धर्म की परिभाषा क्या है? आगम कहते हैं- 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो' - धर्म उत्कृष्ट मंगल है। उसका स्वरूप है- अहिंसा, संयम और तप। हम धार्मिक हैं। स्वयं अहिंसक रहते हैं, दूसरों को अहिंसा का उपदेश देते हैं। स्वयं संयम में रहते हैं, दूसरों को असंयम कम करने की प्रेरणा देते हैं, स्वयं तपस्या करते हैं, दूसरों को इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। बुराई हिंसा है, असंयम है। वह व्यक्ति, परिवार या समाज में कहीं हो, उसे दूर

समय की बात, प्रवचन में कही गयी बातें श्रोताओं के दिल को छू गयीं। उन्हें अपने दुर्व्यसनों से घृणा हुई। सैकड़ों हरिजन एक साथ उठे। उन्होंने दारू पीने और मांस खाने का परित्याग कर दिया।

जब तक चिन्तन की खिड़कियां बन्द रहती हैं, शुद्ध हवा का झोंका नहीं आ सकता। विकास की दिशाएं खुलती हैं तो हर नयी बात सामने आ जाती है।

करने का प्रयास धर्म कैसे नहीं करे? भगवान महावीर ने धर्मक्रान्ति की। जातिवाद, दासप्रथा आदि सामाजिक बुराइयों पर प्रहार किया। उन्होंने जो काम किया, हम क्यों नहीं कर सकते?

इस चिन्तन से दिमाग साफ हो गया। मार्ग प्रशस्त हो गया। आँखें खुल गयीं। मैंने तय कर लिया कि वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय जितनी भी बुराइयां हैं, उनको मिटाने के लिए हमें काम करना है। प्राथमिक रूप में सामाजिक बुराइयों या कुरूढ़ियों का जो चित्र मेरे सामने आया, उसमें पर्दाप्रथा, रूढ़ि रूप में रोना, दहेज का ठहराव व प्रदर्शन, जातिवाद आदि का रूप उभरा। ये सब ऐसी चीजें थीं, जिनको मिटाना सबको आवश्यक लग रहा था।

कुछ पुराने साधु-साध्वियों ने कहा- "हमारे पूर्वाचार्यों ने ये काम नहीं किये।" मैंने उनसे पूछा- "यह सही है कि हमारे पूर्वजों ने ये काम नहीं किये। आपके अभिमत से ये काम कैसे हैं?" इस प्रश्न के उत्तर में वे बोले- "काम तो ठीक है, पर हमारे यहां ऐसे काम कभी हुए नहीं।" मैंने उनको समझाते हुए कहा- "आज तक ऐसे काम कभी नहीं हुए, अब भी नहीं करेंगे तो ये कभी नहीं होंगे। जो काम हमें उचित लगते हैं, उन्हें क्यों नहीं करें?" मेरे समझाने से चिन्तन का क्रम बदलने लगा। उधर सार्वजनिक प्रवचन में हरिजनों की उपस्थिति और दुर्व्यसन छोड़ने में उनके उत्साह को देखकर मैंने सोचा- इस काम को आगे बढ़ाने के लिए हरिजनों के मोहल्लों में साधु-साध्वियों को भेजना चाहिए। मैंने इस सम्बन्ध में किसी के साथ कोई चर्चा नहीं की।

माघ कृष्ण पक्ष तृतीया के दिन मुनि सुपारसमलजी (बीदासर) को निर्देश दिया- "आज तुम हरिजनों के मोहल्ले में जाकर व्याख्यान करो।" निर्देश सुनते ही उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानों उन पर गाज गिर पड़ी हो। मुनि सुपारसमलजी अच्छे घर-घराने के थे। पढ़े-लिखे थे। प्रसिद्ध व्याख्यानी थे। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक था। उन्होंने सोचा, कहीं न कहीं मेरी गलती हुई है अथवा मेरे बारे में कोई शिकायत पहुँची है। अन्यथा ऐसा आदेश नहीं मिलता। मेरे जीवन में आज यह कैसा दिन आया है? हरिजनों के मोहल्ले में व्याख्यान दूँगा तो ये साधु क्या कहेंगे? इस प्रकार के उनके चिन्तन से उनके चेहरे पर खिन्नता के भाव उभर आये। तेरापंथ धर्मसंघ में गुरु के आदेश-निर्देश का अतिक्रमण करने की विधि नहीं है। इसी कारण वे प्रतिवाद नहीं कर पाये। एक साधु को साथ लेकर वे व्याख्यान देने गये, पर अन्यमनस्क भाव से गये। इधर छापर के लोगों को पता चला कि गोगामेड़ी में ढेढों की बस्ती में व्याख्यान देने के लिए साधु गये हैं तो पूरे गाँव में अजीब-सी हलचल मच गयी। आचार्य श्री क्या करने जा रहे हैं? साधुओं को कहां भेजा है? यह भी कोई करने का काम है? सबको एकमेक कर देंगे। क्या होगा? कैसे होगा? चारों ओर फुसफुसाहट शुरू हो गयी। बात मुझ तक भी पहुँची। मैंने कुछ नहीं कहा।

उधर हरिजन लोगों में नया उत्साह जागा। पूरा मोहल्ला एकत्रित हो गया। मुनि सुपारसमलजी ने अच्छा व्याख्यान दिया। लोग प्रभावित हुए। वे जुलूस बनाकर साधुओं के साथ हमारे आवास-स्थल पर आ गये। कुछ साधु और श्रावक कुतूहल से मेरे आसपास खड़े थे। वे देख रहे थे कि मैं हरिजनों को चरण स्पर्श करने दूँगा या नहीं? हरिजन भाई स्वयं भी संकोचवश दूर खड़े थे। मैंने कहा- "आप लोग दूर क्यों खड़े हैं? आपको नजदीक आने से कौन रोकता है?" उनका संकोच मिटा। वे निकट आये। उनके मन में पैर छूने की भावना थी। मैंने पाँव आगे कर दिया। एक-एक भाई आता गया और चरण स्पर्श कर एक ओर होता गया। दूर खड़े साधु यह दृश्य देखकर स्तब्ध रह गये। आने वाले लोग निहाल हो उठे। उन्होंने अपने सामर्थ्य के अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान भी किये। अस्पृश्यता निवारण की दिशा में हमारा वह पहला कदम था।

हरिजनों को मेरे द्वारा इतना प्रोत्साहन पाते देख मुनि सुपारसमलजी की मानसिकता बदल गयी। वे आये और बोले - "गुरुदेव! आपने मुझ पर बड़ी कृपा की। मुझे काम करने का मौका दिया। जब मैं यहां से गया, मेरा मन बहुत दु:खी था। मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो मैं किसी गलती का प्रायश्चित वहन कर रहा हूँ, पर अब यह छटा देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। जब कभी ऐसा काम हो, आप मुझे ही अवसर प्रदान करें।"

कोई भी नया काम हो, समाज में उसकी प्रतिक्रिया होती है। वह अनुकूल भी हो सकती है और प्रतिकूल भी। प्रगतिशील विचारों के लोग इस घटना से बहुत उत्साहित हुए। पर कुछ ऐसे लोग भी थे, जिन्होंने इस प्रसंग को आलोचना का मुद्दा बनाया। उन्होंने इस सन्दर्भ में कुछ लेख या संवाद प्रकाशित कराये। उनके शीर्षक थे- 'कौवा चले हंस की चाल', 'पुरानी बोतल में नयी शराब', 'ये चलेंगे गांधी की चाल' आदि। आलोचना के स्वर हमारे कानों तक आये। मैंने कहा- "यह दुनिया की रीत है। कोई चढ़कर चलता है तो लोग हँसते हैं और पैदल चलता है तो भी हँसते हैं। आलोचना और उपहास पर हम रुक गये तो कभी काम नहीं कर सकेंगे। हमें अपने ढंग से चिन्तन करना है। जो काम उचित लगता है, उसे हर हालत में करना है।" कुछ समय तक आलोचनाओं का दौर चलता रहा। धीरे-धीरे स्थिति सामान्य हो गयी।

समाज सुधार की नयी दिशाएँ

छापर में हरिजनों के बीच कार्यक्रम की सफलता के बाद हमने इस अभियान को तेज किया। इससे पहले प्राथमिक विद्यालयों में भी हमारे साधु-साध्वियों के वक्तव्य कभी नहीं हुए थे। उसके बाद सार्वजनिक कार्यक्रमों के द्वार खुल गये। भाषा की समस्या अवश्य थी। उस समय तक हम केवल मारवाड़ी में ही बोलते थे। फिर भी गाँव-गाँव में काम शुरू कर दिया। उन दिनों मैंने हिन्दी में दो-चार गीत लिखे थे। उनमें एक गीत था - अमर रहेगा धर्म हमारा।

यह गीत उन दिनों बहुत लोकप्रिय हुआ। जहां कहीं सार्वजनिक व्याख्यान होते, उक्त गीत को काम में लिया जाता। इससे जातिवाद की जमी हुई जड़ें उखड़ने लगीं।

अमर रहेगा धर्म हमारा,
जन-जन-मन-अधिनायक प्यारा,
विश्व विपिन का एक उजारा,
असहायों का एक सहारा,
सब मिल यही लगाओ नारा,
अमर रहेगा धर्म हमारा।।

■■

धर्म धरातल अतुल निराला,
सत्य अहिंसा स्वरूपवाला।
मैत्री का यह मधुमय प्याला,
सत्पुरुषों ने सदा रुखारा॥

■■

व्यक्ति-व्यक्ति में धर्म समाया,
जाति-पांति का भेद मिटाया।
निर्धन धनिक न अन्तर पाया,
जिसने धारा जन्म सुधारा॥

■■

राजनीति से पृथक् सदा है,
द्वेष-राग से धर्म जुदा है।
मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य यदा है,
आत्मशुद्धि की बहती धारा।।

■■

आडम्बर में धर्म कहां है?
स्वार्थसिद्धि में धर्म कहां है?
शुद्ध साधना धर्म वहां है,
करते हम हर वक्त इशारा।।

■■

धर्म नाम से शोषण करते,
धर्म नाम से निज घर भरते।
धर्म नाम से लड़ते-भिड़ते,
कैसा धर्म बना बेचारा।।

■■

प्रलयंकार पवन भी बाजे,
तूफानों की हों आवाजें।
पलटे सब जग रीति-रिवाजें,
पर इसका ध्रुव अटल सितारा।।

■■

धर्म नाम पर डटे रहेंगे,
सत्य शोध में सटे रहेंगे।
'तुलसी' सब कुछ स्वयं सहेंगे,
काटें कुटिल कर्म की कारा॥

उन दिनों एक बार हम लाडनूं गये। वहां दक्षिण दरवाजे के पास सरावगी वास में सार्वजनिक कार्यक्रम था। कुछ हरिजन प्रवचन सुनने आये। दिगम्बर समाज में छुआछूत कुछ अधिक थी। कुछ भाई बोले - "ये लोग कहां से आये हैं? यहां क्यों आये हैं?" मैंने कहा- "भाई, ये भी आदमी हैं। इन्हें प्रवचन सुनने दो।" मेरी बात सुन वे मौन हो गये, पर उनके मन में अजीब-सी कसमसाहट थी। यह बात उनके चेहरों पर आये उतार-चढ़ाव से स्पष्ट हो रही थी। मैंने सोचा- किसी को धर्मसंकट में क्यों डाला जाये? व्यापक कार्यक्रम हमें अपने धर्मस्थान में करने चाहिए।

लाडनूं तेरापंथ का प्रमुख स्थान है। मेरी जन्मभूमि है। मैंने वहां प्रवचन के समय एक हरिजन सम्मेलन आयोजित किया। हमारे सान्निध्य में कार्यक्रम था। लोग तेरापंथ में श्रद्धा रखने वाले थे। फिर भी कुछ लोग विद्रोह की भाषा बोलने लगे। उन्होंने कहा - "हम हरिजनों को अपने धर्मस्थान में नहीं आने देंगे। उन्हें अपने साथ नहीं बैठने देंगे।" यह बात मेरे कानों तक पहुँची। प्रवचन सभा में पहुँचकर मैंने कहा - "कुछ लोग हरिजनों को यहां आने से रोकना चाहते हैं। जो उन्हें आने से रोकेगा, वह हमें रोकेगा। जैन धर्म का जाति-पांति में कोई विश्वास नहीं है। इसके अनुसार हर व्यक्ति को धर्म की आराधना का अधिकार है। हम सब लोगों को व्याख्यान सुनाएंगे। सबके साथ बात करेंगे। हम जहां रहेंगे, वहां सब लोग आएंगे। यह जातिवाद का सिद्धान्त कहां से आया? गुरु आप हैं या हम? आप हमसे सीख लेंगे या हमें सीख देंगे?"

मन के अनुकूल बात न होने पर भी उन बुजुर्ग श्रावकों में लिहाज का भाव था। वे खुलकर सामने नहीं आये। मेरा उद्‌बोधन सुनकर मौन हो गये। कुछ समय बाद मैंने सुना कि कुछ वृद्ध श्राविकाएं कह रही हैं - "यदि ऐसा होगा, महाराज सबको भेल-संभेल कर देंगे तो हम साधु-साध्वियों को गोचरी के लिए अपने रसोईघर में नहीं आने देंगे।" वह एक तात्कालिक प्रतिक्रिया की बात थी। जातिवाद की अतात्त्विकता वाली बात धीरे-धीरे सबकी समझ में आ गयी।

"अमर रहेगा धर्म हमारा" गीत उन दिनों बहुत लोकप्रिय हुआ। जहां कहीं सार्वजनिक व्याख्यान होते, उक्त गीत को काम में लिया जाता। इससे जातिवाद की जमी हुई जड़ें उखड़ने लगीं।

साधु जीवन स्वीकार करते ही परिवार का विस्तार हो जाता है। दस-पाँच व्यक्तियों का परिवार छूटता है और हजारों-लाखों लोगों से सम्बन्ध जुड़ जाता है।

प्रवचन सुनने आये हरिजनों को सम्बोधित कर मैंने कहा- "भाइयो ! आप चाहते हैं कि आपका उत्थान हो, पर आप दूसरों के द्वारा अपना उत्थान चाहेंगे, यह अधूरी बात होगी। अपने कल्याण के लिए आप दूसरों का मुँह क्यों देखते हैं? आप स्वयं नहीं उठेंगे तो दूसरे आपको क्यों उठाएंगे? किसी व्यक्ति को पक्षाघात हो जाता है तो उसे कौन उठाता है? वह स्वयं पुरुषार्थ करता है तो उसे दूसरों का सहयोग मिल जाता है। आप अपने उत्थान के लिए पुरुषार्थ करें, आपको भी सहयोग मिल सकता है।"

मैंने देखा कि मेरी बात को आगन्तुक लोग पूरे ध्यान से सुन रहे हैं। एक और त्रासदी को लक्ष्य कर मैंने उनसे कहा- "आप लोग जूठन खाते हैं। क्यों? क्या यह आपकी हीनभावना नहीं है? जूठन खिलाना पाप है तो जूठन खाना भी पाप है। जूठन कौन खाता है? 'जूठी पत्तल दो भखे के वायस के श्वान' इस कहावत की ओर आपका ध्यान क्यों नहीं जाता है? आप जूठी पत्तलें नहीं खाएंगे तो लोग आपको कैसे खिलाएंगे?" उपस्थित श्रोताओं में से कुछ लोगों को यह बात लग गयी। वे खड़े हुए। उन्होंने जूठन खाने का त्याग कर दिया। कुछ ऐसे लोग भी खड़े हुए, जिन्होंने जूठन खिलाने का परित्याग किया।

प्रवचन के अगले चरण में मैंने शराब, मांस, तम्बाकू आदि दुर्व्यसन छोड़ने की प्रेरणा देते हुए कहा- "श्रम और सेवा करके आप जो पैसा कमाते हैं, उसे ये दुर्व्यसन खा जाते हैं। इतना श्रम करने पर भी आप गरीब रहते हैं। इसका दोष और किसी पर मढ़ने से समाधान नहीं निकलेगा। आप अपनी दुर्बलताओं को देखो और छोड़ो।" इस प्रेरणा का भी कुछ लोगों पर प्रभाव हुआ। कुछ लोग व्यसनमुक्त बने, पर अधिक लोग उस कारा से बाहर नहीं निकल पाये।

अणुव्रत आन्दोलन का सपना

साधु जीवन स्वीकार करते ही परिवार का विस्तार हो जाता है। दस-पाँच व्यक्तियों का परिवार छूटता है और हजारों-लाखों लोगों से सम्बन्ध जुड़ जाता है। दृष्टिकोण अधिक व्यापक और उदार हो तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' पूरी धरती कुनबा बन जाती है। ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण मानव जाति के हितों का चिन्तन हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। छापर प्रवास में एक दिन मस्तिष्क में बिजली-सी कौंधी। मन में नयी बात उभरी - हजारों व्यक्ति हमारे पास आते हैं। क्यों आते हैं? उनके लिए हम क्या करते हैं? उनको हम क्या देते हैं? यदि हमारे पास देने के लिए कुछ नहीं है तो वे लोग क्यों आएंगे? कोई बड़ी आशा लेकर आये और खाली हाथ लौट जाये, इसमें हमारा क्या वैशिष्ट्य है? इत्यादि प्रश्नों की लम्बी शृंखला ने विधायक मोड़ लिया।

हमने सोचा- कुछ करना चाहिए। हम और कुछ कर सकें या नहीं, लोगों को अच्छा जीवन जीने का रास्ता दिखा सकते हैं। जब तक लोगों का जीवन ऊँचा नहीं होगा, उनमें चरित्रनिष्ठा नहीं होगी। चरित्रनिष्ठा के अभाव में व्यक्ति पर धर्म का क्या प्रभाव होगा? इस चिन्तन को क्रियात्मक रूप देने के लिए हमने पहली बार समाज को लक्ष्य कर तेरह नियम बनाये। उन नियमों की प्रेरणा देने के लिए एक गीत लिखा - ऐ मानव! मानव-जीवन में कुछ किये बिना क्या जाना है? प्रवचन में उक्त गीत का संगान कर लोगों को नियम स्वीकार करने की प्रेरणा दी।

"ऐ मानव! मानव-जीवन में कुछ किये बिना क्या जाना है?
लो अणुव्रतों को अपनाओ, यह मानवता का बाना है।।

घरबारी हो व्यापारी हो, कृषिकारी हो संसारी हो,
फिर भी अनर्थ-हिंसा से तो आसानी से बच जाना है।।

विश्वास-घातमय घातक जो, कम-से-कम ऐसी झूठ तजो,
सौंपी या धरी धरोहर हित इन्कार नहीं हो जाना है।

जो पैसा बिना पसीने का, क्या होता खाने-पीने का?
जलता जिसमें दिल औरों का, चोरों का पाप पुराना है।।

हा! कितना नैतिक पतन हुआ, बाजारों का विश्वास गया,
लो खाद्य-वस्तु में खुली मिलावट, कैसा बुरा जमाना है?

ठग-विद्या कैसी तेरी है? गज छोटी-बड़ी पसेरी है,
यह माप-तोल का गोल-माल, बनिये! अब नहीं चलाना है।।

दुनिया की जूठन वह खाता, वेश्या से प्रेम किये जाता,
पर-नारी जिसको प्यारी है, उसका क्या ठौर-ठिकाना है?

है ब्रह्मचर्य में ओज भरा, यों जीवन केवल बोझ भरा,
जितना भी निभे निभाना, यह जीवन का खरा खजाना है।।

बेशक दहेज की मांग बुरी, कोमल कलियों पर खुली छुरी,
संतानों का क्रय-विक्रय कर, अपना पुरुषार्थ लजाना है।।

यह प्रजातंत्र का रोग नया, व्यापक बन सारे फैल गया,
वोटों की बिक्री हाय अरे! नोटों से खुद बिक जाना है।।

आस्वाद नहीं, आह्लाद नहीं, जीवन में सुख-संवाद नहीं,
पीकर शराब होकर खराब, इन्सानी शान गंवाना है।।

बिल्ली की आँखें आखू पर, बाबे की ताक तमाखू पर,
गांजा सुलफा और भंग-संग जीवन की खाक उड़ाना है।।

सिर कर्ज चढ़ा, घर नाज नहीं, बदबू अति वदन विराज रही,
है दागी हाथ, हाय! फिर भी घी बेच तमाखू लाना है।।

जो इतना त्याग दिया तुमने, व्रत में अनुराग किया तुमने,
अग्रिम विकास की सीढ़ी पर 'तुलसी' अब झट चढ़ जाना है।।"

मैं यह परीक्षण करना चाहता था कि जो बातें हम समाज के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, उन्हें समाज स्वीकार करेगा या नहीं? मैंने प्राथमिक रूप में ऐसे पच्चीस व्यक्तियों की माँग की, जो तेरह नियमों के सांचे में अपना जीवन ढाल सकें। कुछ व्यक्ति खड़े हुए।

उन्होंने नियम स्वीकार किये। उनका सुझाव रहा कि यह अभियान देश भर में चलाया जाये। सुझाव उचित लगा। उसे स्वीकार कर लिया गया। उसके अनुसार नियमों के परिपत्र तैयार कर देश भर में प्रसारित कर दिये गये। उससे वातावरण बना। लोगों की भावना बनी। उस वर्ष पूरे देश में पच्चीस सौ लोगों ने नियम स्वीकार कर लिये। इस अकल्पित सफलता के आधार पर हमारे मन में नया विश्वास जागा।

निष्ठा के साथ काम किया जाये तो सफलता मिल सकती है। इस संभावना को ध्यान में रखकर व्यवस्थित योजना बनायी गयी। राजनैतिक, व्यावसायिक, सामाजिक और धार्मिक सब प्रकार की बुराइयों या दुर्बलताओं को दूर करने के लिए 84 नियमों की एक योजना बनी। उस योजना को सामने रखकर नैतिक अभियान चलाने का चिन्तन स्थिर हो गया। उसके नाम और उसकी प्रक्रिया के बारे में भी चर्चा चली। चिन्तन और चर्चा के निष्कर्षों को गुप्त रखा गया। फिर भी समाज में एक अच्छी हलचल हो गयी।

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

अणुव्रत आंदोलन की उद्घोषणा

सरदारशहर पहुँचने के बाद हमने नये अभियान के बारे में सघन चिन्तन प्रारंभ कर दिया। द्वितीया तक दस-बारह दिनों का समय हमारे पास था। हमारी चिन्तन गोष्ठियों में कुछ साधुओं के साथ सुगनचन्द आंचलिया, हणूतमल सुराना, जयचन्दलाल दफ्तरी, मोहनलाल कठोतिया, नेमीचन्द गधैया, शुभकरण दसानी, जयचन्दलाल कोठारी, देवेन्द्र कुमार कर्णावट आदि श्रावकगण भी उपस्थित रहते थे। इस प्रसंग को लेकर समाज में अच्छी हलचल हो गयी। क्या करेंगे? कैसे करेंगे? क्यों करेंगे? आदि प्रश्नों का घेरा बढ़ता जा रहा था। कुछ लोग अटकलबाजियां लगा रहे थे, पर उनके पास कोई समाधान नहीं था। मैंने कुछ साधुओं को निर्देश दिया कि वे पूरी रूपरेखा बनाकर प्रस्तुत करें। निर्देश मिलते ही वे एक नये अभियान की रूपरेखा तैयार करने में संलग्न हो गये। उसे मानवीय आचार संहिता का रूप दिया गया। युगीन बुराइयों के सन्दर्भ में नियमों का निर्माण हो गया।

जैसे-जैसे द्वितीया का दिन निकट आ रहा था, वैसे-वैसे लोगों की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। कुछ व्यक्तियों का चिन्तन रहा कि नयी योजना को जनता के सामने रखना नहीं चाहिए। उसका हवाला देते हुए उसमें सम्मिलित होने का आह्वान किया जाये। मुझे यह चिन्तन ठीक नहीं लगा। मैंने कहा- "लोगों को अंधेरे में क्यों रखा जाये? आचार संहिता को समझे बिना अपना नाम कौन देगा?" कार्यकर्ता बोले- "योजना सुनकर लोग भड़क सकते हैं। एक साथ 84 नियम स्वीकार करने का साहस नहीं हो सकता। धीरे-धीरे नियम समझा दिए जाएंगे।" मैंने कहा-"हम नैतिक अभियान चलाना चाहते हैं। अनैतिकता की जितनी बातें और जितने प्रकल्प हैं, उन सबको सामने लाना चाहिए। हमें किसी को धोखे में नहीं रखना है। कोई व्यक्ति इस योजना के साथ जुड़े या नहीं, जनता के बीच पूरी स्पष्टता के साथ इसे रखना है।"

उस समय तक समाज में आशाजनक वातावरण नहीं बन पाया था। नैतिक संकल्प स्वीकार करने का अभ्यास भी नहीं था। यद्यपि समाज की जीवनशैली में बहुत अधिक विकृतियां नहीं थीं, फिर भी नयी बात को झटपट स्वीकार करने की मनोवृत्ति विकसित नहीं हुई थी। नयी योजना के अनुकूल वातावरण बनाने के लिए कई सार्वजनिक स्थानों पर प्रवचन हुए। हमने अपनी ओर से लोगों को पूरी प्रेरणा दी। इस नये अभियान के प्रति आकर्षण होने पर भी संकल्प-विकल्प की स्थिति बनी रही।

आखिर लोगों की प्रतीक्षा पूरी हुई। फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया (1 मार्च 1949) का दिन आया। सूर्योदय के साथ ही साध्वियों के मंगल-संगान से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। हजारों लोगों की उपस्थिति में जनता को एक नैतिक अभियान में सम्मिलित होने का आह्वान किया गया। तब तक उस अभियान के नाम और उसकी रूपरेखा के बारे में कोई उद्घोषणा नहीं की गयी। सामान्यत: अच्छा जीवन जीने की दिशा और विशेष उत्साह के साथ नये अभियान में संभागिता के लिए अभिप्रेरणा दी गयी। उससे जनता में नयी चेतना और स्फुरणा का संचार हो गया। नये अभियान के उद्घाटन की औपचारिकता के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता मिश्रित उत्सुकता की झलक देखी गयी। कार्यक्रम का दूसरा चरण प्रवचन के समय व्यापक रूप से मनाया गया। पहले से घोषणा होने के कारण उस दिन

> हजारों लोगों की उपस्थिति में जनता को एक नैतिक अभियान में सम्मिलित होने का आह्वान किया गया। उससे जनता में नयी चेतना और स्फुरणा का संचार हो गया।

आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "इस योजना का सम्बन्ध किसी जाति, सम्प्रदाय आदि के साथ नहीं है। कोई भी व्यक्ति इन नियमों को स्वीकार कर अणुव्रती संघ में सम्मिलित हो सकता है।"

प्रवचन के समय उपस्थिति बहुत अधिक थी। लोगों के ऊहापोह के बीच अणुव्रत के नियम पढ़कर सुनाये गये। नियमों की संख्या 84 थी। मैंने अपने प्रवचन में अणुव्रती संघ के उद्देश्यों और कार्यक्रमों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

कुछ व्यक्तियों ने अणुव्रती संघ के नाम पर आपत्ति की। उनकी दृष्टि से इस नाम में संकीर्णता की प्रतीति हो रही थी। मैंने अपना चिन्तन स्पष्ट करते हुए कहा- "माना कि अणुव्रत शब्द जैन धर्म का है, पर हम इसे व्यापक संदर्भ में ले रहे हैं। यह नाम छोटा भी है और उपयोगी भी है। अणुबम के युग में अणुव्रत शब्द का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी रहेगा।"

ज्यों-ज्यों समय बीत रहा था, श्रोताओं में उत्सुकता बढ़ रही थी। कार्यकर्ताओं के मन पर तब तक निराशा की धुंध छायी हुई थी। कुछ लोगों का चिन्तन था कि दस-बीस नाम आ जाएं तो कार्यक्रम सफल है।

मैंने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित कर कहा- "जो योजना आज आपके सामने आयी है, उसका सम्बन्ध किसी जाति, सम्प्रदाय आदि के साथ नहीं है। कोई भी व्यक्ति इन नियमों को स्वीकार कर अणुव्रती संघ में सम्मिलित हो सकता है। इसकी नियमावली का आधार अहिंसा, सत्य आदि पाँच व्रत और इस युग की दीखती बुराइयों का परिशोधन करने वाले तत्त्व हैं। आज जो व्यक्ति इस संघ में सम्मिलित होंगे, उनका नामांकन मैं स्वयं करूँगा।"

कॉपी और पेंसिल मेरे हाथ में थी। सामने था विशाल जनसमुदाय। मैंने एक बार फिर आह्वान किया। सभा में कुछ हलचल हुई। सबसे पहले गंगाशहर के सुगनचन्दजी आंचलिया और उनकी धर्मपत्नी मनोहरी देवी आंचलिया खड़ी हुईं। उन्होंने गहरे आत्मविश्वास के साथ अपने नाम दिये। हुलासी देवी भूतोड़िया (लाडनूं) ऐसे कामों में प्राय: आगे रहती थीं। वह भी खड़ी हो गईं। उसके बाद तो लोगों में खड़े होने की होड़ सी लग गयी। जयचन्दलाल दफ्तरी, नेमीचन्द गधैया, छोगमल चोपड़ा, जयचन्दलाल मुंसिफ तथा कुछ अजैन भाइयों ने उत्साह के साथ अपने नाम लिखाये। मैं लिखता जा रहा था।

एक-एक कर 73 नाम आ गये। जहां दस-बीस नाम आने की कल्पना नहीं थी, वहां नाम पर नाम आने लगे। लिखते-लिखते हाथ थक गया, पर लोग नहीं थके। आखिर मैंने ही अपनी ओर से विराम लगाया। दूसरे दिन के प्रवचन में भी चर्चा का यही विषय रहा। मध्याह्न में अणुव्रती भाई-बहनों की विशेष संगोष्ठी हुई, जिसमें उनकी जिज्ञासाओं को समाहित किया गया। अणुव्रत के विचार को मिले इस समर्थन से भविष्य की नयी दिशाएँ खुल गयीं। ■■■

नये मानव का निर्माण

अणुव्रत का एक संकल्प है नये मानव का निर्माण। वह राष्ट्रों, प्रान्तों, सम्प्रदायों, वर्गों और जातियों के दायरों से मुक्त होगा। वह मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, गुरुद्वारों और धर्मस्थानों में बन्दी आस्था को निर्बन्ध करेगा। वह हिंसा, आतंक, तस्करी, व्यसन, अश्लीलता आदि दुराचरणों से दूर रहेगा। वह कला, साहित्य, संगीत, नृत्य आदि सांस्कृतिक परम्पराओं में घुसपैठ करने वाली विकृतियों को मिटाकर सामाजिक स्वास्थ्य का संवर्धन करेगा। ऐसे मानव के निर्माण से एक नये युग का प्रारंभ होगा। वह युग अहिंसा का युग होगा, चरित्र-निर्माण का युग होगा, मानवता का युग होगा और होगा सही जीवनशैली से जीने वाले मानव का युग।

नये मानव की कल्पना से ही कुछ लोगों को रोमांच हो सकता है। वे सोचते होंगे कि नया मानव कौन होगा? उसका निर्माण कैसे होगा? क्या वह अति मानव होगा? क्या उसमें किसी प्रकार की मानवीय दुर्बलता नहीं होगी? इन सब प्रश्नों में उलझे बिना ही मैं अपनी कल्पना के मानव का मॉडल यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ-

- नया मानव जातिवाद और सम्प्रदायवाद की सरहदों से मुक्त होगा।
- नया मानव साम्प्रदायिक नहीं, धार्मिक होगा।
- नया मानव अहिंसा के प्रति आस्थाशील होगा। वह हिंसा के हथियार को तीखा नहीं करेगा।
- नया मानव लोकतंत्र की जड़ें काटेगा नहीं, वह उनको और अधिक गहराई तक पहुँचाएगा।
- नया मानव पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करेगा, उसकी सुरक्षा के लिए जागरूक रहेगा।
- नया मानव नशे की गिरफ्त से मुक्त होगा।
- नया मानव अर्थ को जीवन का साधन मानेगा, उसे साध्य मानकर नहीं रुकेगा।
- नया मानव युगशैली के प्रवाह में नहीं बहेगा, उसकी सुचिन्तित जीवनशैली होगी।

-आचार्य तुलसी

संयम और संकल्प की चेतना

आचार्य महाप्रज्ञ

व्रत का अर्थ है - आच्छादन करना। आदमी की आकांक्षाएं और लालसाएं जो खुली पड़ी हैं, उन्मुक्त हैं, उनको ढक दिया, उन पर आवरण डाल दिया, यह व्रत है। व्रतों के कारण आदमी अनेक बुराइयों से बचता रहा है।

आदमी परिवर्तन की बात दीर्घकाल से सोचता आ रहा है। वह अपने स्वभाव को बदलने के लिए लंबे समय से तत्पर है, सक्रिय है और उस दिशा में प्रयत्न भी कर रहा है। स्वभाव को बदलने के लिए अनेक तथ्य खोजे गये। उनमें एक तथ्य है भावना का प्रयोग, संकल्प-व्रत का प्रयोग।

जरूरी है इन्द्रिय संयम

व्रत अध्यात्म जगत की एक महत्वपूर्ण शक्ति है। आदमी में संकल्प की शिथिलता दो कारणों से हुई है - चित्त की चंचलता और इंद्रियों का असंयम। मैं मानता हूँ कि सभी व्यक्ति एकाग्र नहीं बन सकते और सबका चित्त समाहित नहीं हो सकता। चित्त की चंचलता रहती है, इंद्रियों का असंयम भी पूरा नष्ट नहीं होता, रहता है। किंतु इंद्रियों पर संयम पाना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है और उस व्यक्ति के लिए तो नितांत आवश्यक है जो अपना जीवन शांति और सुख से जीना चाहे।

चाणक्य ने राजनीतिशास्त्र में बताया - राजा के लिए यह अत्यन्त जरूरी है कि वह इन्द्रियों का संयम करे। यदि राजा

जब चित्त स्थिर नहीं रहता, तब संकल्प का बल बनता ही नहीं। संकल्प शक्तिशाली तब बनता है, जब चित्त कहीं एकाग्र हो।

इन्द्रिय-संयम को नहीं साधता है तो प्रजा उससे विपरीत हो जाती है और राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। राजा साधु या संन्यासी नहीं है। वह विलासी है, भोगी है, फिर भी उसके लिए इंद्रियों का संयम नितान्त आवश्यक है। जिन-जिन राजाओं ने इन्द्रिय-संयम को नकारा, उनका राज्य नष्ट हुआ और वे स्वयं नष्ट हो गये। जिन राजाओं ने संयम के साथ जीवन जीया, वे सुखी रहे, उनकी प्रजा सुखी रही, राज्य में संपन्नता बढ़ी और चारों ओर खुशहाली रही।

भावना या संकल्प-शक्ति के ह्रास का मूल कारण है इंद्रियों का असंयम। जब इंद्रियां उच्छृंखल होती हैं तब संकल्प का बल क्षीण हो जाता है। वह ऐसा प्रपात बनता है कि पानी नीचे की ओर ही बहता जाता है।

चित्त की चंचलता

संकल्प शक्ति के ह्रास का दूसरा कारण है - चित्त की चंचलता। जब चित्त स्थिर नहीं रहता, तब संकल्प का बल बनता ही नहीं। संकल्प शक्तिशाली तब बनता है, जब चित्त कहीं एकाग्र हो। सुबह संकल्प किया, मध्याह्न में टूट गया। विचार बदल गया। चित्त में इतने विकल्प आ गये कि संकल्प की बात बह गयी। आदमी इस स्थिति में दिन में पचास बार संकल्प करता है और पचास बार तोड़ता है।

अणुव्रत आंदोलन का गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत अमृत महोत्सव

व्रत का अर्थ

चित्त की चंचलता और इंद्रियों के असंयम से निपटने के लिए व्रत बहुत महत्वपूर्ण है। व्रत की साधना एक खुले दरवाजे को बंद करने की साधना है। जब दरवाजा खुला होता है तब आंधी भी आ सकती है, रेत और कूड़ा-करकट भी आ सकता है।

खुला दरवाजा अव्रत है, बंद दरवाजा व्रत है। ऊपर छत नहीं है तो वर्षा भी आएगी, आंधी भी आएगी, आदमी पानी से भीगेगा, धूल से मटमैला होगा। उसने कमरा बनाया, छत बनायी, दीवारें और दरवाजे बनाये। अब वह न पानी से भीगता है और न धूल से मलिन होता है। खुला आकाश अव्रत है और बंद आकाश व्रत।

व्रत का अर्थ है - आच्छादन करना। आदमी की आकांक्षाएं और लालसाएं जो खुली पड़ी हैं, उन्मुक्त हैं, उनको ढक दिया, उन पर आवरण डाल दिया, यह व्रत है।

व्रत की परंपरा भारतीय जीवन में बहुत महत्वपूर्ण रही है। व्रतों के कारण आदमी अनेक बुराइयों से बचता रहा है। व्रत के विकास से संकल्प-शक्ति का विकास होता है, यह स्पष्ट है।

जीवन में परिवर्तन घटित करने के लिए संकल्प-शक्ति का महत्वपूर्ण योग रहता है। जैसे ध्यान का प्रयोग परिवर्तन का हेतु बनता है, वैसे ही भावना और संकल्प का प्रयोग भी परिवर्तन का हेतु बनता है।

भावना का प्रयोग

आदमी बदलता है। बदलने के लिए दो स्थितियां अपेक्षित होती हैं। एक है सम्मोहन और दूसरी है बल-संवर्धन। भावना का प्रयोग सम्मोहन की प्रक्रिया है। एक सुझाव दिया जाता है और व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है। सम्मोहन का प्रयोग स्वयं के द्वारा स्वयं पर भी किया जाता है। यह आत्म-सम्मोहन की प्रक्रिया है। इसे ऑटो-सजेशन कहा जाता है। यह भावना का प्रयोग है। इससे भीतर परिवर्तन घटित होने लगता है। भावना द्वारा हम जिसका बीज-वपन करते हैं, वह जाने-अनजाने अंकुरित हो जाता है। हमारे चेतन मन में जितनी शक्ति है, उससे हजार गुना शक्ति है अवचेतन मन में। सुप्तावस्था में अर्थात् चेतन मन की निष्क्रिय अवस्था में जो भावना हमारे भीतर प्रवेश करती है, वह हमें सम्मोहित करती है और अवचेतन मन अपने आप सक्रिय हो जाता है और वह क्रिया संपन्न हो जाती है।

रहस्य दीर्घायु का

हम संकल्प का प्रयोग करें। संकल्प को पूरी आस्था और आत्मविश्वास के साथ दोहराएं। हमे अनुभव होगा कि असंभव लगने वाली बात संभव बनती जा रही है।

एक बार भारत के एक राजा ने अपने अधिकारियों को बुलाकर कहा- "तुम चीन देश में जाओ और इस रहस्य को ज्ञात करो कि भारत के राजा अल्पायु क्यों होते हैं और चीन के राजा दीर्घायु क्यों होते हैं? उनके आयुष्य में इतना बड़ा अंतर क्यों है?" अधिकारी वर्ग यहां से चला, चीन पहुँचा। राजा से मिला, अपने आगमन का प्रयोजन बताते हुए कहा- "हमारे सम्राट आपकी दीर्घायु का रहस्य जानना चाहते हैं, आप हमें बताएं।"

चीन के राजा ने कहा- "बताऊँगा, पर आज नहीं। आप सब मेरे अतिथिगृह में ठहरें।"

अधिकारियों ने दो दिन बाद पूछा- "हमारे प्रश्न का उत्तर कब मिलेगा?"

राजा ने कहा- "उस अतिथिगृह के ठीक सामने एक बरगद का बड़ा वृक्ष है। उस वृक्ष के पत्ते जब सूख जाएंगे, एक भी पत्ता

हरा नहीं रहेगा, उस दिन मैं आपको रहस्य बता दूँगा। तब तक आपको प्रतीक्षा करनी होगी। उस समय से पूर्व आप अपने देश भी नहीं जा सकेंगे।"

अधिकारी अवाक् रह गये। उन्होंने मन ही मन सोचा-कहां फँस गये। बरगद का हरा-भरा वृक्ष! इतने पत्ते! वे कब सूखेंगे और कब हम अपने देश जाएंगे! कब हम अपने पारिवारिकजनों से मिल पाएंगे! काल की सीमा नहीं। असीम काल! कैसा झंझट और बंधन!

सभी अधिकारी अतिथिगृह में चले गये। उन्होंने देखा, बरगद का बहुत विशाल वृक्ष हरे-भरे पत्तों से लहलहा रहा है। वे रोज बरामदे में बैठ जाते। सबकी दृष्टि बरगद पर टिक जाती। वे सोचते, इस बरगद के पत्ते कब सूखेंगे और कब हमें यहां से मुक्ति मिलेगी। यह बरगद का वृक्ष हमारे लिए शत्रु का काम कर रहा है। जल्दी क्यों नहीं सूख जाता? वे अधिकारी प्रतिदिन यह भावना करते और सोचते - सत्यानाश हो इस वृक्ष का। जल्दी सूखकर ठूंठ बन जाये तो अच्छा है। क्यों नहीं इसमें आग लग जाती! सब पत्ते झड़ क्यों नहीं जाते? उनके मन में रात-दिन एक ही भावना, एक ही संकल्प।

कुछ दिन बीते। देखते-देखते वह हरा-भरा विशाल बरगद का पेड़ सूख गया। पत्ते सूखकर झड़ गये। टहनियां टूट-टूटकर नीचे गिर पड़ीं। स्कंध मात्र रहा। वह श्रीहीन हो गया।

अधिकारी लोग प्रसन्न हुए। वे चीन के सम्राट के पास जाकर बोले- "सम्राट। अब हम भारत लौटना चाहते हैं। आपकी शर्त पूरी हो गयी। अब आप हमें रहस्य बताएं और हमारी यात्रा का इंतजाम करें।"

सम्राट बोला- "अभी तक रहस्य समझ में नहीं आया? गहराई से सोचा नहीं आपने। आपने देखा कि एक महीने पहले बरगद का जो पेड़ हरा-भरा था, हरे पत्तों से लहलहा रहा था, आज वह सूखकर ठूंठ बन गया है। इसका कारण आप लोगों ने नहीं पकड़ा। आप सब प्रतिदिन इसके विनाश की भावना करते थे, संकल्प करते थे। उस भावना के परमाणुओं ने इस पर असर किया और यह आज ठूंठ बन गया। इसी प्रकार भारत के राजा ऐसे काम करते हैं कि प्रजा की बददुआएं उन्हें मिलती हैं और हम यहां ऐसे काम करते हैं कि हमारी प्रजा हमें सदा अच्छी दुआएं देती हैं। हम निरंतर प्रजा का हित साधने की बात सोचते हैं, इसीलिए जनता की हमारे प्रति शुभ-भावना रहती है। इसी शुभ-भावना और अच्छी दुआ के कारण हमारे देश के राजा दीर्घायु होते हैं, बददुआ और अशुभ-भावना के कारण भारत के राजा अल्पायु होते हैं।"

भावना का प्रभाव चेतन मनुष्य पर ही नहीं, अन्य वस्तुओं पर भी होता है। संकल्प का प्रभाव अचूक होता है। प्रतिदिन आस्थापूर्वक किया जाने वाला संकल्प असंभव को संभव बना डालता है। आदमी जान नहीं पाता कि यह सब कैसे घटित हो गया, पर घटित होता अवश्य है। आज के मनोचिकित्सक सजेशन और

भावना का प्रभाव चेतन मनुष्य पर ही नहीं, अन्य वस्तुओं पर भी होता है। संकल्प का प्रभाव अचूक होता है। प्रतिदिन आस्थापूर्वक किया जाने वाला संकल्प असंभव को संभव बना डालता है।

ऑटो-सजेशन का प्रयोग करते हैं और उन्हें सफलता मिलती है। यदि आदमी प्रतिदिन यह भावना करता है कि मैं बीमार हूँ, बीमार हूँ, तो वह बीमार न होते हुए भी बीमार हो जाएगा। इसी प्रकार एक व्यक्ति यदि यह भावना करता है कि मैं स्वस्थ हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, तो वह स्वस्थ होने लगता है।

इतिहास संकल्प-शक्ति के विकास का

संकल्प-शक्ति और भावना का विकास - यह व्रत का महत्वपूर्ण अंग है। व्रत का अर्थ है अपनी संकल्प-शक्ति को इतना मजबूत बना लेना कि चाहे जैसी परिस्थिति आ जाये, परिस्थिति को भले ही झुकना पड़े, अपने आपको न झुकाये। व्रत की यह आस्था है। भारतीय साहित्य में ऐसे हजारों व्यक्तियों के जीवन प्रमाणभूत हैं जिनके सामने परिस्थितियों ने घुटने टेक दिये, व्यक्तियों का बाल भी बांका नहीं हुआ।

सम्राट सिकंदर विजय का अभियान पूरा कर अपने देश लौट रहा था। एक साधक के विषय में सुना और वह वहां गया। साधक अपने में मस्त था। सम्राट ने कहा- "देखो। तुम्हारे सामने विजेता सम्राट सिकंदर खड़ा है।"

साधक बोला- "मुझे क्या, खड़ा होगा।"

सम्राट बोला- "नहीं जानते तुम कि मेरे पास कितना वैभव है, कितनी सत्ता है, कितना सैन्य बल है।"

"होगा, मुझे क्या!"

"तुम मेरे साथ मेरे देश चलो। वहां तुम्हें सब सुविधाएं दूँगा।"

"मैं नहीं चल सकता।"

"चलना होगा तुम्हें। यह एक सम्राट की आज्ञा है।"

"नहीं चलूँगा और हरगिज नहीं चलूँगा।"

"आज्ञा का उल्लंघन करने का परिणाम है मौत, जानते हो

जिस व्यक्ति में अभय की चेतना जाग जाती है, व्रत और संकल्प की चेतना का जागरण हो जाता है, उस व्यक्ति को कोई शक्ति नहीं झुका सकती।

तुम? नहीं देखते मेरी चमचमाती तलवार को, जिसने हजारों को मौत के घाट उतार डाला।"

"तुम किसे मारोगे? मेरी आत्मा अमर है। उसे कोई नहीं मार सकता। शरीर को मारने में ही तुम समर्थ हो। मुझे इससे क्या?"

जो व्यक्ति मौत से नहीं डरता, मौत की परिस्थिति उत्पन्न कर देने पर भी जिसका एक रोम भी प्रकंपित नहीं होता, वहां सम्राट क्या कर सकता है। सम्राट आगे बढ़ा और साधक के पैरों में झुक गया।

जिस व्यक्ति में अभय की चेतना जाग जाती है, व्रत और संकल्प की चेतना का जागरण हो जाता है, उस व्यक्ति को कोई शक्ति नहीं झुका सकती। ऐसी एक नहीं, हजारों-हजारों घटनाएं भारतीय साहित्य में लिखी पड़ी हैं। प्रत्येक धर्म-परंपरा का इतिहास व्रत और संकल्प-शक्ति के विकास का इतिहास है। ऐसी एक भी धर्म-परंपरा नहीं होती, जिसमें किसी न किसी रूप में व्रत का विकास न हो या संकल्प-शक्ति के विकास की प्रेरणा न हो।

अमेरिका से एक व्यक्ति यहां आया। वह पहले ईसाई धर्म का अनुयायी था, फिर वह इस्लाम धर्म का अनुयायी हो गया। ध्यान की परंपरा का अध्ययन करने वह तुलसी अध्यात्म नीडम् में आया। उसके संकल्प को हमने देखा। मुसलमान रोजा करते हैं अमुक महीने में। किंतु यह व्यक्ति प्रतिदिन रोजा करता था। वहां जेठ के महीने में भयंकर गर्मी थी। फिर भी वह व्यक्ति दिन में न खाना खाता और न पानी पीता। वह पूरे दिन व्यस्त रहता। या तो वह प्रेक्षाध्यान की चर्चाएं करता, ध्यान करता या अन्यान्य दार्शनिक तत्त्वों की चर्चा करता। लोगों को आश्चर्य होता कि बिना पानी पीये, यह भयंकर गर्मी में कैसे रह पाता है! पर उसका संकल्प बल अटूट था।

प्रत्येक धर्म में संकल्प-शक्ति के विकास तथा व्रतों के विकास की प्रेरणाएं रही हैं और आज भी हैं।

मुख्य बन गया गौण मार्ग

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि वर्तमान में भारतीय जनता धर्म के व्रतात्मक रूप को विस्मृत कर उपासनात्मक धर्म को अपनाये हुए है। उपासना धर्म का प्रमुख घटक बन गयी। मैं उपासना को व्यर्थ नहीं मानता, किंतु जब नींव कमजोर होती है, तब छत का और दीवारों का इतना महत्व नहीं रहता। उपासना छत और दीवारों का काम कर सकती है, पर नींव का काम कभी नहीं कर सकती। नींव का काम कर सकती है व्रत-शक्ति या संकल्प-शक्ति। आज ऐसा लगता है कि धार्मिक जगत में संकल्प और व्रत की शक्ति का ह्रास हुआ है और प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। आज सुख-सुविधा का भाव बढ़ रहा है, अव्रत का भाव बढ़ता जा रहा है, उपासना का मार्ग मुख्य होता जा रहा है। उपासना का मार्ग मुख्य नहीं था, गौण मार्ग था। वह सहायक मार्ग था। हमारी उद्देश्यपूर्ति में वह सहयोगी था, पर चलते-चलते वह मुख्य बन गया। सहयोगी मुख्य बन गया और योगी गौण हो गया।

योग और सहयोग, योगी और सहयोगी। एक योग और उसके साथ काम करने वाला सहयोग, पर योगी गौण होकर पीछे चला गया और सहयोगी मुख्य बनकर आगे आ गया। यह तो ऐसा ही कुछ हो गया है कि वर तो है नहीं, और बराती मुख्य बनकर कन्या के विवाह के लिए आ गये हैं। कैसा विचित्र संयोग! एक वर नहीं है तो कुछ भी नहीं है। एक योगी नहीं है तो सहयोगियों की कतार से कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। योगी और सहयोगी - इनके प्रति हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट होना चाहिए, अवबोध स्पष्ट होना चाहिए। योगी प्रथम रहे, सहयोगी द्वयं रहे। जब सहयोगी प्रथम बन जाता है और योगी द्वयं हो जाता है तब सब-कुछ गड़बड़ा जाता है। वर के बिना कन्या किसके गले में वरमाला डाले? एक वर नहीं है, बराती अनेक हैं, पर उनसे क्या हो?

गौण गौण होता है और मुख्य मुख्य। आज का भारतीय मानस सहयोगी तत्त्वों को पकड़े हुए है और योगी को विस्मृत किये हुए है। माला जपना, ईश्वर का नाम-स्मरण करना, सामायिक करना - ये प्रतिदिन किये जा रहे हैं, पर मूल योगी का कहीं अता-पता ही नहीं है। अणुव्रत आंदोलन इसी आधार पर शुरू किया गया कि भारतीय मानस में यह विवेक जाग्रत हो कि जिसका प्रथम स्थान है उसे प्रथम स्थान दे और जिसका द्वयं स्थान है उसे द्वयं स्थान दे। स्थानों का व्यत्यय न करे। इसी में दोनों की सार्थकता है, अन्यथा दोनों व्यर्थ हो जाएंगे। यह विवेक स्पष्ट होना चाहिए। स्थान का विवेक और मर्यादा न हो तो बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती है।

एक ब्राह्मण यात्रा कर रहा था। रास्ते में उसे रसोई बनानी थी। उसने एक स्थान चुना। उस स्थान को बुहारा, गाय के गोबर से लीपा और वस्तुएं लाने चला गया। इतने में उधर से एक गधा आया और उस पर आकर बैठ गया। ब्राह्मण ने देखा कि उस लिपे-पुते स्थान पर गर्दभराज विराजमान हैं। वह गधे के समक्ष गया, हाथ जोड़कर बोला- "महाशय! यदि यहां कोई दूसरा आकर बैठता तो मैं कहता, बना-बनाया गधा है। पर अब मेरे सामने समस्या है कि आप खुद गर्दभराज आ गये हैं। आपको किस उपमा से उपमित करूं? दूसरे के लिए आपकी उपमा दी जाती है, पर आप तो अनुपम हैं, आपको कौन-सी उपमा दूं।"

व्रत की आत्मा

जब स्थान या मर्यादा का परिवर्तन हो जाता है, किसी के स्थान पर कोई दूसरा आकर बैठ जाता है तब अनेक समस्याएं पैदा हो जाती हैं। इस समस्या का समाधान यही है कि जिसका जो स्थान हो उसे वही स्थान दिया जाये। भारतीय मानस में जो व्रत का स्थान है, उसे व्रत का स्थान दें और जो उपासना का स्थान है, उसे उपासना का स्थान दें। एक-दूसरे के स्थान का परिवर्तन न करें।

व्रत का स्थान पहला होगा। उपासना का स्थान दूसरा होगा। उपासना व्रत का सहयोग करेगी, उसमें प्राण फूँकेगी, उसे शक्तिशाली बनाएगी। किंतु वह व्रत की आत्मा नहीं बन सकती। व्रत की आत्मा का संबंध हमारी आंतरिक चेतना से है और उपासना बाह्य चेतना को छूती है। अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन इसीलिए हुआ कि व्यक्ति व्रतों का वास्तविक मूल्य आंक सके और अपनी संकल्प-शक्ति को जगा सके। आज व्रतों का और संकल्प-शक्ति का मूल्य हमारी दृष्टि से ओझल हो चुका है, वह पुनः स्थापित हो और व्रत अपनी शक्ति की स्थापना करें।

विदेश के कुछ अर्थशास्त्रियों ने भारतीय धर्मों पर यह आरोप लगाया था कि भारतीय धर्मों में नैतिक आचार संहिता नहीं है। जहां अणुव्रत की आचार संहिता विद्यमान है, फिर नैतिकता की आचार संहिता कैसे नहीं? अणुव्रत आज का शब्द नहीं है। भगवान महावीर ने अपने समय में गृहस्थ के लिए बारह व्रतों की आचार संहिता दी थी। उसमें अणुव्रतों का समावेश था ही। उन्हीं व्रतों को आधारभूत मानकर, आज अणुव्रतों की आचार संहिता आचार्य श्री ने प्रस्तुत की है। यह गृहस्थ के लिए पूरी आचार संहिता है।

इतिहास अच्छाई और बुराई का

बुराइयों का इतिहास अच्छाइयों के इतिहास जितना ही पुराना है। प्राचीनकाल में अच्छाइयां थीं तो बुराइयां भी थीं। आज बुराइयां हैं तो अच्छाइयां भी हैं। मिलावट पहले भी होती थी, आज भी होती है। यह पुरानी बीमारी है। कोई भी बीमारी नयी नहीं होती। आदमी भी नया नहीं है। आदमी का स्वभाव भी नया नहीं है। हजारों-हजारों वर्षों से उसका इतिहास प्राप्त होता है। जो था, वह है। दो सौ वर्षों के पहले भी पिता पुत्र को कहता था - सावधान रहना, जमाना बड़ा खराब है। आज भी यही शब्द सुनने को मिलता है और आगे भी यही ध्वनि मिल सकती है।

मनुष्य की शाश्वत वृत्तियां कभी नहीं बदलतीं, पर हर युग में परिवर्तन की बात सोची जाती रही है और अनेक उपायों को खोजा जाता रहा है। इसी श्रृंखला में आज अणुव्रत आंदोलन प्रस्तुत हुआ है। आदमी को बदलना है। परिस्थितियों और युग को बहाना बनाकर परिवर्तन से मुँह नहीं मोड़ना है। हमारा काम है बदलने का प्रयत्न करना और कांटों को बुहार कर मार्ग को साफ करना।

यदि रेगिस्तान का आदमी यह सोचे कि यहां तो रेत आती ही रहती है, आंधियां चलती ही रहती हैं, मैं क्यों रेत को साफ करूं, तो क्या दशा होगी? वह धूलमय बन जाएगा। पर आदमी प्रयत्न में विश्वास करता है। वह प्रयत्न कभी नहीं छोड़ता। जितनी बार रेत आती है, आंधियां आती हैं, वह बुहारता है, साफ-सफाई करता है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि रेत आये ही नहीं, आंधियां चलें ही नहीं। रेत आएगी, बुहारी लगेगी, सफाई होगी। यही वास्तविक प्रक्रिया है। दोनों बराबर चलेंगे - रेत का स्वभाव है आना, आदमी का काम है सफाई करना।

संक्रमणों और परिस्थितियों से आने वाले विचलनों की उपेक्षा न करें। उनके साथ आँख-मिचौनी न खेलें। उनकी सफाई करें, सफाई करते जाएं, रुकें नहीं। यदि यह मानकर बैठा जाये कि बुराइयां बहुत हैं, भयंकर प्रकोप है बुराइयों का, तो आदमी उनसे भयंकर रूप में ग्रस्त हो जाएगा। आदमी आदमी ही नहीं रहेगा। सारा समाज रुग्ण बन जाएगा। हमारी दृष्टि साफ रहे कि बीमारी आये, हम उसकी चिकित्सा करें। चिकित्सा कर उसे मिटा दें। बुराई आये तो उसका प्रतिकार करें। अणुव्रत उसी दिशा का एक संकेत है कि आज जो शिथिलता का मनोभाव बन गया, स्वार्थ और सुविधावादी मनोवृत्ति विकसित हो गयी, उसका प्रतिकार किया जाये। जहां सुविधावादी मनोवृत्ति पनपती है, वहां व्रतों में विचलन आता है, व्रत की भावना फिसलने लग जाती है।

अणुव्रत : सुविधावादी प्रवृत्ति के प्रति विद्रोह

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु खड़े-खड़े प्रतिक्रमण करते थे। अवस्था सत्तर वर्ष की थी। किसी ने उन्हें सुझाया, आप बैठे-बैठे प्रतिक्रमण करें। आचार्य भिक्षु ने कहा - "मुझे सुविधावादी नहीं बनना है। कष्ट होता है तो भले हो। इससे मेरा संकल्प दृढ़ होता है। आज मैं इस अवस्था में खड़े-खड़े प्रतिक्रमण करता हूँ तो आने वाली पीढ़ी बैठे-बैठे तो करेगी और कभी संकल्प-शक्ति को विकसित करने का प्रयत्न तो करेगी।"

अणुव्रत सुविधावादी मनोवृत्ति के प्रति एक विद्रोह है। आदमी को सुविधाएं मिलें, यह भिन्न बात है और आदमी की मनोवृत्ति सुविधावादी हो, यह भिन्न बात है। आदमी को सुविधावादी नहीं बनना चाहिए, श्रम से नहीं कतराना चाहिए। कठिनाइयों के सामने उसे घुटने नहीं टेकने चाहिए। वह सहिष्णु बने, घबराये नहीं। यदि यह शक्ति जागती है तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे परास्त नहीं कर सकती। जिस समाज के लोग श्रम से कतराने लग जाते हैं, श्रम को नीचा समझने लग जाते हैं, असहिष्णु बन जाते हैं, कष्टों से घबरा जाते हैं, वे स्वयं परास्त हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं।

व्रत से बढ़ती है संकल्प शक्ति

"अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन इसीलिए हुआ कि व्यक्ति व्रतों का वास्तविक मूल्य आंक सके और अपनी संकल्प-शक्ति को जगा सके।

व्रत का स्थान पहला होगा। उपासना का स्थान दूसरा होगा। उपासना व्रत का सहयोग करेगी, उसमें प्राण फूँकेगी, उसे शक्तिशाली बनाएगी। किंतु वह व्रत की आत्मा नहीं बन सकती। व्रत की आत्मा का संबंध हमारी आंतरिक चेतना से है और उपासना बाह्य चेतना को छूती है। अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन इसीलिए हुआ कि व्यक्ति व्रतों का वास्तविक मूल्य आंक सके और अपनी संकल्प-शक्ति को जगा सके। आज व्रतों का और संकल्प-शक्ति का मूल्य हमारी दृष्टि से ओझल हो चुका है, वह पुनः स्थापित हो और व्रत अपनी शक्ति की स्थापना करें।

विदेश के कुछ अर्थशास्त्रियों ने भारतीय धर्मों पर यह आरोप लगाया था कि भारतीय धर्मों में नैतिक आचार संहिता नहीं है। जहां अणुव्रत की आचार संहिता विद्यमान है, फिर नैतिकता की आचार संहिता कैसे नहीं? अणुव्रत आज का शब्द नहीं है। भगवान महावीर ने अपने समय में गृहस्थ के लिए बारह व्रतों की आचार संहिता दी थी। उसमें अणुव्रतों का समावेश था ही। उन्हीं व्रतों को आधारभूत मानकर, आज अणुव्रतों की आचार संहिता आचार्य श्री ने प्रस्तुत की है। यह गृहस्थ के लिए पूरी आचार संहिता है।

इतिहास अच्छाई और बुराई का

बुराइयों का इतिहास अच्छाइयों के इतिहास जितना ही पुराना है। प्राचीनकाल में अच्छाइयां थीं तो बुराइयां भी थीं। आज बुराइयां हैं तो अच्छाइयां भी हैं। मिलावट पहले भी होती थी, आज भी होती है। यह पुरानी बीमारी है। कोई भी बीमारी नयी नहीं होती। आदमी भी नया नहीं है। आदमी का स्वभाव भी नया नहीं है। हजारों-हजारों वर्षों से उसका इतिहास प्राप्त होता है। जो था, वह है। दो सौ वर्षों के पहले भी पिता पुत्र को कहता था - सावधान रहना, जमाना बड़ा खराब है। आज भी यही शब्द सुनने को मिलता है और आगे भी यही ध्वनि मिल सकती है।

मनुष्य की शाश्वत वृत्तियां कभी नहीं बदलतीं, पर हर युग में परिवर्तन की बात सोची जाती रही है और अनेक उपायों को खोजा जाता रहा है। इसी शृंखला में आज अणुव्रत आंदोलन प्रस्तुत हुआ है। आदमी को बदलना है। परिस्थितियों और युग को बहाना बनाकर परिवर्तन से मुँह नहीं मोड़ना है। हमारा काम है बदलने का प्रयत्न करना और कांटों को बुहार कर मार्ग को साफ करना।

यदि रेगिस्तान का आदमी यह सोचे कि यहां तो रेत आती ही रहती है, आंधियां चलती ही रहती हैं, मैं क्यों रेत को साफ करूं, तो क्या दशा होगी? वह धूलमय बन जाएगा। पर आदमी प्रयत्न में विश्वास करता है। वह प्रयत्न कभी नहीं छोड़ता। जितनी बार रेत आती है, आंधियां आती हैं, वह बुहारता है, साफ-सफाई करता है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि रेत आये ही नहीं, आंधियां चलें ही नहीं। रेत आएगी, बुहारी लगेगी, सफाई होगी। यही वास्तविक प्रक्रिया है। दोनों बराबर चलेंगे - रेत का स्वभाव है आना, आदमी का काम है सफाई करना।

संक्रमणों और परिस्थितियों से आने वाले विचलनों की उपेक्षा न करें। उनके साथ आँख-मिचौनी न खेलें। उनकी सफाई करें, सफाई करते जाएं, रुकें नहीं। यदि यह मानकर बैठा जाये कि बुराइयां बहुत हैं, भयंकर प्रकोप है बुराइयों का, तो आदमी उनसे भयंकर रूप में ग्रस्त हो जाएगा। आदमी आदमी ही नहीं रहेगा। सारा समाज रुग्ण बन जाएगा। हमारी दृष्टि साफ रहे कि बीमारी आये, हम उसकी चिकित्सा करें। चिकित्सा कर उसे मिटा दें। बुराई आये तो उसका प्रतिकार करें। अणुव्रत उसी दिशा का एक संकेत है कि आज जो शिथिलता का मनोभाव बन गया, स्वार्थ और सुविधावादी मनोवृत्ति विकसित हो गयी, उसका प्रतिकार किया जाये। जहां सुविधावादी मनोवृत्ति पनपती है, वहां व्रतों में विचलन आता है, व्रत की भावना फिसलने लग जाती है।

अणुव्रत : सुविधावादी प्रवृत्ति के प्रति विद्रोह

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु खड़े-खड़े प्रतिक्रमण करते थे। अवस्था सत्तर वर्ष की थी। किसी ने उन्हें सुझाया, आप बैठे-बैठे प्रतिक्रमण करें। आचार्य भिक्षु ने कहा - "मुझे सुविधावादी नहीं बनना है। कष्ट होता है तो भले हो। इससे मेरा संकल्प दृढ़ होता है। आज मैं इस अवस्था में खड़े-खड़े प्रतिक्रमण करता हूँ तो आने वाली पीढ़ी बैठे-बैठे तो करेगी और कभी संकल्प-शक्ति को विकसित करने का प्रयत्न तो करेगी।"

अणुव्रत सुविधावादी मनोवृत्ति के प्रति एक विद्रोह है। आदमी को सुविधाएं मिलें, यह भिन्न बात है और आदमी की मनोवृत्ति सुविधावादी हो, यह भिन्न बात है। आदमी को सुविधावादी नहीं बनना चाहिए, श्रम से नहीं कतराना चाहिए। कठिनाइयों के सामने उसे घुटने नहीं टेकने चाहिए। वह सहिष्णु बने, घबराये नहीं। यदि यह शक्ति जागती है तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे परास्त नहीं कर सकती। जिस समाज के लोग श्रम से कतराने लग जाते हैं, श्रम को नीचा समझने लग जाते हैं, असहिष्णु बन जाते हैं, कष्टों से घबरा जाते हैं, वे स्वयं परास्त हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं।

व्रत से बढ़ती है संकल्प शक्ति

अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन इसीलिए हुआ कि व्यक्ति व्रतों का वास्तविक मूल्य आंक सके और अपनी संकल्प-शक्ति को जगा सके।

व्रतों का जीवन संयम का जीवन है, कठोरता का जीवन है, सहिष्णुता का जीवन है, त्याग का जीवन है। इससे संकल्प-शक्ति बढ़ती है।

> प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए यह अत्यावश्यक है कि वह अपनी संकल्प-शक्ति को बढ़ाये। संकल्प के बल पर वह उसका इतना विकास करे कि जीवन का प्रासाद मजबूत और अविचल बन जाये।

व्रतों का जीवन संयम का जीवन है, कठोरता का जीवन है, सहिष्णुता का जीवन है, त्याग का जीवन है। इससे संकल्प-शक्ति बढ़ती है। जिस व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की संकल्प-शक्ति दृढ़ होती है, वह अजेय बन जाता है। जिस व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की संकल्प शक्ति कमजोर हो जाती है, उसे पराजित करने के लिए दूसरे व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की आवश्यकता नहीं होती, वह स्वयं नष्ट हो जाता है।

हिब्रू सम्राट का सेनापति उदास बैठा था। पत्नी ने देखा। उसने पूछा- "इतने उदास क्यों? आज क्या बात है?"

उसने कहा- "बहुत बुरा हो रहा है। युद्धक्षेत्र में मेरी सेना हार रही है। शत्रुसेना जीत रही है। यही मेरी उदासी का कारण है।"

पत्नी ने कहा- "मैंने तो और ही कुछ सुना है। लोग कहते हैं कि सेनापति का संकल्प-बल क्षीण हो गया है। अब उनमें संकल्प-शक्ति नहीं रही है।"

सेनापति ने सुना। उसका आहत पराक्रम जाग उठा। मर्म पर तीर लगा। वह रणक्षेत्र में गया। सैनिकों का साहस बढ़ाया। इतनी वीरता से लड़ा कि पराजय जय में बदल गयी। संकल्प टूटता है तो सब कुछ टूट जाता है। संकल्प-बल मजबूत होता है तो सब कुछ दृढ़ हो जाता है। हम अणुव्रतों का मूल्यांकन करें - इस दृष्टि से नहीं कि यह केवल व्रतों की आचार संहिता है, किन्तु इस दृष्टि से करें कि यह जीवन की आधारभूत नींव है। प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए यह अत्यावश्यक है कि वह अपनी संकल्प-शक्ति को बढ़ाये। संकल्प के बल पर वह उसका इतना विकास करे कि जीवन का प्रासाद इतना मजबूत और अविचल बन जाये कि प्रलयकाल के पवन का झोंका भी उसे प्रकंपित न कर सके, धराशायी न कर सके। ■■■

आशा की एकमात्र किरण अणुव्रत

आज पूरा विश्व बारूद के ढेर पर खड़ा है। हिंसा और आतंक की दहशत है। अर्थ और सत्ता की आपाधापी है। नैतिकता, प्रामाणिकता, संयम, सदाचार आदि मानवीय मूल्य गौण हो रहे हैं। इस प्रवाह को रोका नहीं गया तो पता नहीं, मानव जाति का क्या होगा? चारों ओर निराशा का कुहासा छा रहा है। ऐसे समय में कोई आशा की किरण है तो एकमात्र अणुव्रत है। अणुव्रत ऐसा आदर्श नहीं है जिस पर चलना कठिन हो। यह एक अच्छे जीवन का सांचा है। जीने में किसी प्रकार की बाधा के बिना इसमें ढला जा सकता है। यह एक ऐसा सांचा है जो सुख, शान्ति और संतुलन के साथ जीने का वातावरण देता है। हर मनुष्य सुख-शान्ति का इच्छुक है, पर इसके लिए वह अपनी जीवनशैली में बदलाव नहीं लाता। व्रतों के पालन से जीवन की शैली बदलती है। इस बदलाव में ही सुख, शान्ति की संभावना को उजागर किया जा सकता है।

किसी राष्ट्र का चेहरा देखना हो तो उसकी किशोर पीढ़ी का चेहरा देखना चाहिए। आज के किशोर कल के कर्णधार बनने वाले हैं। उनका निर्माण सही ढंग से नहीं हो पाया तो राष्ट्र के निर्माण का सपना साकार नहीं हो सकेगा। किशोर पीढ़ी का निर्माण करने के लिए उसके मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना जरूरी है। प्रशिक्षण के बिना मस्तिष्कीय बदलाव की संभावना बहुत कम हो जाती है। जिस देश की किशोर पीढ़ी संस्कार-निर्माण की यात्रा में एक-एक पग भी आगे रखती है तो उसका भविष्य शून्य में नहीं रहता। वह विरासत में प्राप्त संस्कारों और अपने पुरुषार्थ के बल पर विकास की निश्चित दिशा में आगे बढ़ सकती है।

अणुव्रत आपको यह सुझाता है कि व्रत बन्धन नहीं है, जिससे मुक्त होने के लिए आपको छटपटाना पड़े। व्रत वह सुरक्षा -कवच है, जिसे धारण कर आप जीवन के हर विकट मोर्चे पर विजयी बन सकते हैं।

- आचार्य तुलसी

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत संकल्प शृंखला

मैं विश्व का एक जवाबदेह नागरिक हूं।

मैं दृढ़ संकल्पशक्ति के साथ निम्नांकित अणुव्रत स्वीकार करता हूं।

अणुव्रत आचार संहिता

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।
- मैं आत्म-हत्या नहीं करूंगा।
- मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूंगा।

मैं आक्रमण नहीं करूंगा।
- आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा।
- विश्व-शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूंगा।

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूंगा।
- जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंच-नीच नहीं मानूंगा।
- अस्पृश्य नहीं मानूंगा।

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा।
- साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊंगा।

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।
- अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा।
- छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा।

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूंगा।

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊंगा।
- मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूंगा।

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।
- हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा।
- पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूंगा।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द (राजस्थान)

head.office@anuvibha.org ■ +91 91166 34515, +91 91166 34512

अणुव्रत संकल्प

www.anuvibha.org/pledge

अणुव्रत चेतना गीत

आचार्य महाश्रमण

मानव की जीवन शैली संयम से भावित हो।
निश्छलता, करुणा, मैत्री से मन आप्लावित हो।।

हो व्यवहार विनिर्मल नैतिकता से संयुत।
प्रामाणिकता वाणी में, पल-पल परिलक्षित हो ।।1।।

हो घृणा नहीं मानव से मानव के चिन्तन में।
मानुष-मानस का कण-कण, सद्भाव प्रभावित हो ।।2।।

मुख मंदिर का मदिरा से किंचित् भी स्पर्श न हो।
ना कभी नशा करना है, नर-नर संकल्पित हो।।3।।

अणुव्रत की 'महाश्रमण' वर सौरभ फैलाएं हम।
तुलसी गुरु कृपा सुरभि से जन-जन मन सुरभित हो।।4।।

लय : प्रभु पार्श्व देव चरणों में शत शत...

अणुव्रत एक सार्वभौम धर्म

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

आचार्य श्री तुलसी ने ऐसे धर्म की चर्चा की, जो समग्र मानव जाति का उन्नयन करने वाला हो और वह धर्म है अणुव्रत। यह एक निर्विशेषण धर्म है, सार्वभौम धर्म है, इसका किसी वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से कोई सम्बन्ध नहीं है।

सन् 1950 में विनोबा भावे के नेतृत्व में पूरे हिन्दुस्तान में एक आंदोलन प्रारम्भ किया गया। इसका उद्देश्य था गरीबों का उत्थान हो। इसमें भूमिहीनों को भूमि का वितरण किया जा रहा था। इस अहिंसक क्रांति से लोगों को जीवन-विकास का साधन उपलब्ध हुआ। ठीक इससे पूर्व सन् 1947 में हिन्दुस्तान विदेशी दासता से मुक्त हो चुका था, किन्तु नैतिक और चारित्रिक मूल्यों का ह्रास हो रहा था। उसी समय आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। इसका उद्देश्य था नैतिक चेतना व चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा।

आचार्य श्री तुलसी जैन श्वेताम्बर परम्परा में तेरापंथ आम्नाय के नवम आचार्य थे। प्रश्न हो सकता है - धार्मिक आचार्य होते हुए भी उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन क्यों किया? इसका उद्देश्य क्या था? आचार्य श्री तुलसी का चिन्तन व्यापक था। उनके भीतर करुणा का निर्झर प्रवाहित होता रहता था। उन्होंने समूची मानव-जाति के उत्थान का सपना देखा।

एक बार एक व्यक्ति ने सब लोगों के हित के लिए एक मन्दिर का निर्माण कराया। प्रायः सभी हिन्दू लोग नियमपूर्वक आने लगे, किन्तु इससे मन्दिर का निर्माता संतुष्ट नहीं हुआ,

अणुव्रत में उपासना का तत्त्व गौण है और चरित्र की प्रधानता है। चरित्र की आवश्यकता और उपयोगिता हर युग में रही है, अतीत में थी, वर्तमान में है और भविष्य में रहेगी।

क्योंकि अन्य धर्मावलम्बी वहां नहीं आ रहे थे। उसने सोचा- मस्जिद बनवाऊं। मस्जिद बनकर तैयार हो गयी। अब वहां मुस्लिम लोगों का तांता लग गया, पर अन्य मतानुयायी वहां नहीं आये। वह व्यक्ति अब भी प्रसन्न नहीं था। उसने मस्जिद के स्थान पर चर्च निर्मित करवा दिया। अब ईसाई लोगों का आगमन शुरू हो गया। फिर भी उसे आत्मतोष की अनुभूति नहीं हुई। अंत में उसने सोचा, क्यों नहीं एक सार्वजनिक स्थान में तालाब का निर्माण कराऊं। जैसे ही तालाब का निर्माण हुआ, सब जाति, सब वर्ण और सब सम्प्रदाय के लोगों का वहां आवागमन प्रारम्भ हो गया। अब उस व्यक्ति को अत्यधिक आह्लाद की अनुभूति हुई। उसका सपना साकार हो रहा था। हर एक कौम का व्यक्ति उस तालाब पर अपनी प्यास बुझाने के लिए आ रहा था।

निर्विशेषण धर्म

आचार्य श्री तुलसी यदि जैन धर्म की बात करते तो केवल जैन अनुयायी उनके पास आते। यदि वे तेरापंथ के बारे में बोलते

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

तो तेरापंथी लोग उनके परिपार्श्व में रहते, किन्तु उन्होंने ऐसे धर्म की चर्चा की, जो समग्र मानव जाति का उन्नयन करने वाला हो और वह धर्म है अणुव्रत। यह एक निर्विशेषण धर्म है, सार्वभौम धर्म है, इसका किसी वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से कोई सम्बन्ध नहीं है। सभी सम्प्रदाय के लोग इसे अपना धर्म मान सकते हैं, किन्तु इस धर्म पर किसी सम्प्रदाय विशेष की छाप नहीं है। अणुव्रत की आचार संहिता को केवल जैन नहीं, केवल तेरापंथी ही नहीं अपनाता, अपितु किसी भी कौम का कोई भी व्यक्ति इसे अपना सकता है। किसी भी क्षेत्र में रहता हुआ कोई भी इसके नियमों की अनुपालना कर सकता है। अणुव्रत को व्याख्यायित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने एक गीत में लिखा है -

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा।।

धर्म सम्प्रदाय नहीं है

यह धर्म, सम्प्रदाय के नियमों में जकड़ा हुआ नहीं है। यथार्थतः धर्म और सम्प्रदाय एक नहीं हैं। इस संदर्भ में गुरुदेव तुलसी ने सूत्र दिया - "सम्प्रदाय भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, किन्तु धर्म कभी भिन्न नहीं होता, वह एक ही होता है। सत्य कभी दो नहीं होता, आकाश कभी दो नहीं होता। सबके अपने-अपने घर में आकाश है। मेरे घर में ही आकाश है, दूसरे घर में आकाश नहीं है, यह मानना मिथ्या है, भ्रम है। जैसे आकाश देश और काल में विभक्त नहीं होता, वैसे ही सत्य कभी विभक्त नहीं होता, धर्म कभी विभक्त नहीं होता।"

उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से असाम्प्रदायिक धर्म की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए धर्म की तुलना फल और सम्प्रदाय की तुलना छिलके से की। फल का छिलका उसके भीतरी भाग की सुरक्षा के लिए होता है। इसी प्रकार सम्प्रदाय भी धर्म को जन-जन तक पहुँचाने का एक साधन बनता है, किन्तु धर्म सम्प्रदाय नहीं है। अणुव्रत की असाम्प्रदायिकता इस बात से प्रमाणित नहीं होती है कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन एवं बी. डी. जत्ती जैसे व्यक्तियों ने अणुव्रत के प्रति आस्था व्यक्त की है, किंतु पण्डित जवाहरलाल नेहरू, कॉमरेड यशपाल, एस. गोपालन जैसे व्यक्ति, जिनकी किसी मजहब के प्रति आस्था नहीं थी, अणुव्रत के प्रति निष्ठाशील बने, यह महत्वपूर्ण बात है।

क्या आपको गुरु मानना होगा?

अणुव्रत का जब प्रारंभ हुआ तब एक व्यक्ति ने आचार्य श्री तुलसी के समक्ष एक प्रश्न उपस्थित किया- "अणुव्रती बनने के लिए क्या मुझे आपको गुरु मानना पड़ेगा? क्या मुझे आपको नमस्कार करना पड़ेगा?" आचार्यवर ने उसकी जिज्ञासा को समाहित करते हुए कहा- "नहीं, मुझे गुरु बनाने की आवश्यकता नहीं है और न ही मुझे नमस्कार करने की जरूरत है, लेकिन तुम्हें ईमानदारी व सच्चरित्र का विकास करना होगा।"

चरित्र-विकास की आचार संहिता

अणुव्रत में उपासना का तत्त्व गौण है और चरित्र की प्रधानता है। चरित्र की आवश्यकता और उपयोगिता हर युग में रही है, अतीत में थी, वर्तमान में है और भविष्य में रहेगी। भगवान महावीर ने गृहस्थ के लिए एक आचार संहिता प्रस्तुत की। चरित्र-विकास की इतनी व्यवस्थित आचार संहिता अन्यत्र दुर्लभ है। वह केवल सैद्धांतिक ही नहीं, व्यावहारिक भी है। समाज में रहने वाला व्यक्ति कैसे प्रामाणिक व ईमानदार रह सकता है, इसका पूरा चित्र इस आचार संहिता में उपलब्ध होता है।

स्थूल हिंसा नहीं करना, मिलावट नहीं करना, वंचनापूर्ण व्यवहार नहीं करना, असली वस्तु दिखाकर नकली वस्तु नहीं देना, दूसरे का शोषण नहीं करना आदि अनेक बातों पर इस आचार संहिता में विमर्श किया गया है। आचार्य श्री तुलसी ने इसी आचार संहिता को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। इसमें ग्यारह नियमों का समावेश किया गया है-

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।

नैतिकता के प्रति अनास्था

इन छोटे-छोटे संकल्पों के द्वारा एक व्यक्ति चरित्र संपन्न बन सकता है। शास्त्रों में कहा गया है "वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्" चरित्र की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। नैतिकता, प्रामाणिकता, सचाई आदि तत्त्व इसी से संबद्ध हैं। वर्तमान की सबसे अहम समस्या है अप्रामाणिकता। यद्यपि अप्रामाणिकता व्यक्ति को अच्छी नहीं लगती, वह प्रामाणिक जीवन जीना चाहता है। एक व्यक्ति प्रामाणिक जीवन जीना प्रारंभ भी कर देता है, किंतु धीरे-धीरे वह तनावग्रस्त हो जाता है। उसके चिंतन की धारा बदलने लगती है। वह सोचता है मैंने तो प्रामाणिक बनने का संकल्प ले लिया, किंतु मैं देख रहा हूँ कि अप्रामाणिक व्यक्ति अनैतिक आचरणों से विपुल अर्थ का अर्जन कर रहा है। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा है और मेरे जैसे प्रामाणिक व्यक्ति के सुख-दु:ख की बात पूछने वाला भी कोई नहीं है। इस प्रकार कुछ लोग जब समाज में ऐसी विषमता देखते हैं तो उनके मन में प्रामाणिकता और नैतिकता के प्रति अनास्था का भाव उत्पन्न हो जाता है।

नैतिकता के प्रति निष्ठा

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने जीवन में प्रामाणिकता का प्रयोग करते हैं, वे कभी कर्जदार भी बन जाते हैं, पर सचाई से दूर नहीं होते। यदा-कदा परिस्थितियां भी उन्हें प्रताड़ित करती हैं, फिर भी वे अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते। इस संदर्भ में आचार्य श्री तुलसी ने व्याख्यान में एक प्रसंग सुनाया था- एक युवक अणुव्रती था। वह अपना व्यापार पूरी ईमानदारी से करता था। नियति का ऐसा योग मिला कि वह कर्जदार बन गया। इस विकट परिस्थिति में उसे अपना मूल व्यापार छोड़ना पड़ा। कर्ज चुकाने के लिए नौकरी करने लगा। उस समय भी उसने प्रामाणिकता और नैतिकता का साहचर्य नहीं छोड़ा। परिणामत: मालिक ने व्यवसाय की संपूर्ण जिम्मेदारी उसे सौंप दी। देखते-देखते सबके हृदय में उसने अपना स्थान बना लिया। सभी व्यक्ति उसे अपने घर का सदस्य मानने लगे। कुछ ही समय में उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो गयी और वह कर्जमुक्त हो गया। नैतिकता के प्रति उसकी गहरी निष्ठा पैदा हो गयी। यह घटना इस बात को प्रमाणित करती है कि प्रामाणिक और ईमानदार व्यक्ति विश्वास अर्जित कर आर्थिक समृद्धि को प्राप्त कर सकता है। चूँकि अणुव्रत आंदोलन नैतिकता का अभियान है। यह व्यक्ति के जीवन में नैतिकता के संस्कारों को पुष्ट करता है। नैतिकता की चेतना को जागृत करता है।

जीवन के लिए उपयोगी

अणुव्रत जीवनोपयोगी बातों का विश्लेषण करता है। यह व्यक्ति को दूध छोड़ने के लिए नहीं कहता, शराब छोड़ने के लिए अवश्य कहता है। यह रोटी का निषेध नहीं करता किन्तु मांस जैसी अभक्ष्य पदार्थ के सेवन को रोकता है। यह अमृत पान का विरोध नहीं करता किन्तु जहर से परहेज रखने की प्रेरणा अवश्य देता है। धूम्रपान भी विषपान ही है। वैज्ञानिक शोधों ने भी यह स्पष्ट कर दिया कि धूम्रपान आदि में जहरीले तत्त्व हैं। यदि व्यक्ति सुख से जीना चाहता है तो उसे अणुव्रत की आचार संहिता को अपने जीवन में अपनाना होगा।

शिष्टमंडल और फादर विलियम

सन् 1954 का प्रसंग है। आचार्य श्री तुलसी मुंबई में प्रवास कर रहे थे। उन्होंने वहां अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में लोगों के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किये। उनको अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी। अनेक लोगों ने अणुव्रत आचार संहिता को समझा और अपने जीवन में उसका अनुपालन करने का संकल्प किया। एक बार एक शिष्टमंडल नेशनल चर्च के पादरी फादर विलियम से मिलने गया। चर्च में प्रवेश करते समय उन्होंने घोष लगाये - "संयम: खलु जीवनम् - संयम ही जीवन है।" यह आवाज सुनकर फादर विलियम चौंक गये। सोचा, क्या बात है? कौन आये हैं?

उन्होंने आगंतुकों से पूछा - "आप लोग कहां से आये हैं? क्यों आये हैं?"

आगंतुक - "हम लोग मुंबई में रहते हैं। आपसे मिलने के लिए आये हैं।"

"यहां आने का उद्देश्य क्या हो सकता है?"

"हम आपसे बाइबिल की शिक्षाएं सुनना चाहते हैं।"

"आप कौन हैं?"

"हम जैन हैं, तेरापंथी हैं, अणुव्रती हैं।"

"आपको यहां किसने भेजा?"

"हमारे गुरु ने हमें प्रेरित किया है कि हम सभी धर्मों की शिक्षाओं को सुनें और समझने का प्रयत्न करें।"

"कौन हैं आपके गुरु? वे कहां रहते हैं? क्या मैं भी उनसे मिल सकता हूँ?"

"हमारे गुरु का नाम है आचार्य श्री तुलसी। वे मुंबई में हैं। आप उनसे मिलना चाहते हैं तो हमारे साथ चलें। हम उनके पास ही जा रहे हैं।"

"आपके गुरु को भेंट करने के लिए साथ क्या लूं?"

"आपको उनके लिए कुछ भी नहीं लेना है। खाली हाथ चलो, पर खाली हाथ लौटना नहीं है।"

फादर उसी समय श्रावकों के साथ आचार्यवर के प्रवास स्थल पर पहुँच गये। प्राथमिक परिचय के बाद फादर ने कहा - "मैंने अपने जीवन में ऐसे किसी धर्माचार्य को नहीं देखा जो अपने अनुयायियों को दूसरे धर्मगुरुओं के पास उनके धर्म के सिद्धांतों को समझने के लिए भेजते हों। आपके इस उदार दृष्टिकोण का मैं अभिनंदन करता हूँ।"

आचार्यवर ने फादर विलियम को अणुव्रत की आचार संहिता की अवगति दी। उससे वे बहुत प्रभावित हुए। वे अणुव्रती ही नहीं बने, अणुव्रत के एक निष्ठाशील प्रचारक भी बन गये। पहले वे शराब बहुत पीते थे, अणुव्रती बनते ही उन्होंने शराब पीना भी छोड़ दिया।

एक बार वे रूस गये, वहां उनको शराब पीने के लिए बाध्य किया गया, किंतु वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। वे जहां भी जाते, गुरुदेव श्री तुलसी का चित्र अपने पास रखते। वे उस चित्र को लोगों को दिखाते और कहते - "ये मेरे गुरु हैं।" एक अणुव्रती के रूप में उनका जीवन आदर्श जीवन था। ऐसे अनेक लोग अणुव्रत के साथ जुड़े और उन्होंने अपने जीवन को नयी दिशा दी।

मैं मानव हूँ

अणुव्रत किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत आस्था में हस्तक्षेप नहीं करता। कौन किसकी उपासना करता है? कौन किसका नाम जपता है? कौन मंदिर में जाता है? कौन मस्जिद में जाता है? कौन गिरजाघर में जाता है? कौन आत्मा, ईश्वर, कर्म और मोक्ष में विश्वास करता है? इन सब विषयों में अणुव्रत सर्वथा मौन है। वह तो इस बात के लिए प्रेरित करता है कि व्यक्ति अपने जीवन में चरित्र सम्पन्न बने। वह धर्म को ग्रंथों और पंथों की सीमा से मुक्त कर व्यक्ति के जीवन में उतारना चाहता है।

अणुव्रत का कार्य प्रारंभ करने के बाद आचार्य श्री के परिचय की शैली भी बदल गयी। दक्षिण भारत की यात्रा अथवा अन्य क्षेत्रों की यात्राओं में उन्हें कोई पूछता - "आप कौन हैं?" प्राय: उनका यही उत्तर होता - "सबसे पहले मैं मानव हूँ, फिर धार्मिक हूँ, फिर जैन हूँ, फिर तेरापंथ का आचार्य हूँ।" अस्तु, आजाद भारत में आचार्य श्री तुलसी ने नैतिकता के पुनरुत्थान के लिए सार्वभौम धर्म के रूप में अणुव्रत का शंखनाद किया। इसी अणुव्रत के कार्य ने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व को नयी पहचान दी। ■■■

अहिंसा का आधार

अहिंसावादी शताब्दियों एवं सहस्राब्दियों से अहिंसा पर विचार करते रहे हैं, अनुशीलन करते रहे हैं, फिर भी यह विषय पुराना नहीं पड़ता। आज भी जब कभी इस विषय पर चिन्तन करते हैं, नवीनता का अनुभव होता है। हमारे यहां कहावत है कि रामायण को चाहे कितनी ही बार पढ़ा जाये, फिर भी उसमें नवीनता की ही प्रतीति होती है। ऐसी ही बात अहिंसा के विषय में भी है। कारण यह है कि अहिंसा जीवन-दर्शन का तत्त्व है। उसकी व्यापकता सामयिक या देशीय नहीं, अपितु सार्वकालिक और सार्वदेशिक है।

अहिंसा धर्म का सारभूत तत्त्व है। अहिंसा की आवश्यकता सदा से रही है। आज उसकी आवश्यकता अधिक महसूस की जा रही है। ऐसा स्वाभाविक भी है। भोजन भी स्वादिष्ट तभी लगता है, जब भूख तीव्र होती है। पेट भरा हुआ हो तो स्वादिष्ट भोजन भी रुचता नहीं।

हिंसा के विनाशकारी कारनामों को देखकर मनुष्य घबरा गया है। विश्व के एक कोने से आता हुआ युद्ध का स्वर विश्व के दूसरे कोने में रहने वालों को भयभीत कर देता है। कारण क्या है? मुख्य कारण एक ही है कि मनुष्य युद्ध के भयंकर परिणामों को भुगत चुका है। उसने युद्ध को शान्ति का साधन समझा था, पर आखिर युद्ध का परिणाम स्वाभाविक रूप से जो हुआ करता है, वही हुआ।

खैर, मनुष्य युद्ध के खतरों से चेता है और वह चाहता है कि युद्ध न हो। हिंसा के काले कारनामे इस धरातल पर अब न हों। लगता है, उसे अब अहिंसा की भूख है। उसने शान्ति और सुख के लिए अहिंसा का स्मरण किया है। अहिंसा से उसकी अभीप्सा अवश्य पूरी होगी। इसमें किसी प्रकार के सन्देह को अवकाश नहीं है, शक नहीं है।

जन-साधारण के लिए अहिंसा के आचरण का यह रूप है - वह निरपराध प्राणी का वध न करे। तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग न ले। गुस्से में बेभान न बने। व्यापार-व्यवसाय में अप्रामाणिकता न करे। खाद्य पदार्थों में बेमेल मिलावट न करे। तौल-माप में कमी-बेशी न करे। ऐसा झूठ न बोले, जिससे किसी का बड़ा अहित हो जाये। खान-पान की शुद्धाशुद्धि का विवेक रखे, मांस-मद्य जैसे अखाद्य और अपेय पदार्थों का सेवन न करे।

-आचार्य तुलसी

अणुव्रत : मानवता को वरदान

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा

अणुव्रत का स्वरूप असाम्प्रदायिक है। यह जाति, वर्ग और सम्प्रदाय से बंधा हुआ नहीं है। कोई भी व्यक्ति इसे जीवन का अंग बना सकता है। अणुव्रत धर्मनिरपेक्ष, सार्वभौमिक है। किसी भी धर्म का अनुयायी इसे अपना सकता है।

फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक दिदेरो लालटेन लेकर दोपहर में चल रहे थे। लोग सोचने लगे, दिदेरो भरी दोपहरी में लालटेन लेकर क्यों चल रहे हैं? लोगों को इतने बड़े दार्शनिक को इसका कारण पूछने की हिम्मत नहीं हुई। अत: लोगों की भीड़ उनके पीछे-पीछे चलने लगी। उस भीड़ में एक छोटी-सी बच्ची ने पूछा - "बाबा? आप क्या खोज रहे हैं?" दिदेरो ने कहा- "मैं आदमी को खोज रहा हूँ।" लोग इस उत्तर को सुनकर आश्चर्यचकित हो गये। लोगों ने प्रतिप्रश्न करते हुए पूछा - "हम क्या आदमी नहीं हैं?" दार्शनिक दिदेरो ने कहा - "मैं तुम सबको जानता हूँ। तुम्हारे में से कोई वकील, कोई इंजीनियर और कोई प्रोफेसर है, परन्तु आदमी नहीं। आदमी वह होता है जिसमें आदमीयत, इंसानियत और नैतिकता हो।"

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने आदमी की खोज के लिए, आदमी के निर्माण के लिए और मानव में मानवता की चेतना जगाने के लिए एक आंदोलन का प्रवर्तन किया जिसका नाम है- अणुव्रत आंदोलन। संस्कृत कवि ने कहा है - अनाश्रया न शोभन्ते, पण्डिताः वनिता लताः - पंडित, स्त्री और लता - ये आश्रय के बिना शोभित नहीं हो

धार्मिकता और नैतिकता एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां धार्मिकता है, वहां नैतिकता है और जहां नैतिकता है, वहां धार्मिकता है। अणुव्रत आदमी को नैतिक ही नहीं, धार्मिक भी बनाता है।

सकते। जीवन रूपी बेल को भी सहारे की आवश्यकता होती है और आज के इस भौतिकवादी युग में अणुव्रत सुदृढ़ सहारे की भूमिका निभाने वाला है।

■ अणुव्रत का स्वरूप असाम्प्रदायिक है। यह जाति, वर्ग और सम्प्रदाय से बंधा हुआ नहीं है। कोई भी व्यक्ति इसे जीवन का अंग बना सकता है।

■ अणुव्रत धर्मनिरपेक्ष, सार्वभौमिक है। किसी भी धर्म का अनुयायी इसे अपना सकता है।

■ अणुव्रत में विचारों का आग्रह नहीं है। यह चरित्र-विकास या आचार-शुद्धि का प्रतीक है।

■ अणुव्रत अनैतिकता से संत्रस्त मानव को आध्यात्मिक नियंत्रण में लाने का सशक्त माध्यम है।

अणुव्रत आंदोलन का गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत अमृत महोत्सव

राष्ट्र संत आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्ररूपित अणुव्रत आंदोलन के मुख्य रूप से तीन ध्येय हैं-

■ जनसाधारण में नैतिक निष्ठा उत्पन्न करना।

■ धार्मिक के जीवन में व्याप्त धर्म-स्थान और कर्म-स्थान की विसंगति को दूर करना।

■ व्रत के द्वारा सामाजिक समस्याओं का समाधान करना।

धर्म का पहला चरण है - नैतिकता। एक अणुव्रती के लिए नैतिक बनना आवश्यक है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत गीत की प्रथम पंक्ति में लिखा है -

"नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो
संयममय जीवन हो॥"

नैतिकता एक ऐसी सरिता है जिसका जल व्यक्ति के मन को पावन, पवित्र बनाता है। अणुव्रत की आचार संहिता को स्वीकार करने का अर्थ है जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना करना। अणुव्रती बनने के लिए मनुष्य भगवान की पूजा करे या न करे, क्रियाकाण्डों में विश्वास रखे या न रखे, समाज में पल रही रूढ़ियों का बहिष्कार करे या न करे, आचार्य श्री तुलसी को गुरु माने या न माने, परन्तु यह आवश्यक है कि वह अच्छा मानव बने, नैतिक बने, प्रामाणिक बने। प्रामाणिकता के अभाव में व्यक्ति छल-कपट, बेईमानी और अन्याय करता है। अतीतकाल में बाजार एक पवित्र स्थान माना जाता था, जहां पर समाज का कोई व्यक्ति ठगा नहीं जाता था, वही बाजार आज विश्वास का पात्र नहीं रहा। इसका कारण है अनैतिकता।

मकान का निर्माण हो रहा था। उसमें जहां सीमेंट लगी हुई थी, वह अभी तक पूरी सूखी भी नहीं थी। जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि जहां मकान में लेप किया हुआ है, उसमें नब्बे प्रतिशत बालू-रेत है और सिर्फ दस प्रतिशत सीमेंट। आज मिलावट की ऐसी घटनाएं बहुत घटित होती हैं। मिलावट का धंधा करके और उससे प्राप्त लाभ पर गर्व करके व्यक्ति मकान की नींव को ही नहीं, अपने व्यक्तित्व की नींव - अपनी साख, अपनी मानवीयता और उससे अधिक कहा जाये तो अपनी आत्मा को खोखला बना रहा है। विश्वास अर्जित करने का सुन्दर उपाय है नैतिक जीवन जीना। नैतिकता बाजार, घर, ऑफिस - प्रत्येक कार्यक्षेत्र में होनी चाहिए।

कहा गया है - 'विश्वासायतनम्' विश्वास का सबसे बड़ा घर कोई है तो ईमानदारी और सचाई है। अतः जनता में नैतिक निष्ठा पैदा हो। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण अपने उपदेशों में जनता को कहा करते हैं कि अपने घर, ऑफिस, दुकान में और कोई देवी प्रतिष्ठित करें या न करें, परन्तु नैतिकता, ईमानदारी की देवी को अवश्य प्रतिष्ठित करें।

आज के युग में आदमी का कुछ ऐसा व्यक्तित्व बन गया है कि यह कहना कठिन हो गया है कि कौन धार्मिक है और कौन अधार्मिक है? एक व्यक्ति अपने आपको धार्मिक मानता है। घर में उसका एक प्रकार का व्यवहार होता है और वही व्यक्ति दुकान में, ऑफिस में जाता है तो उसका व्यवहार दूसरा हो जाता है। जब धर्मस्थान में होता है तो धर्म की उपासना इतनी तल्लीनता और भक्ति से करता है कि देखने वाला सोचता है यह कितना धार्मिक है। उसका शान्त, शुद्ध और पवित्र रूप सामने आता है और वही व्यक्ति जब दुकान में जाकर बैठता है या ऑफिस में बैठता है तो उसका ऐसा रूप सामने आता है कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। धर्मस्थान में भगवान की पूजा और ऑफिस या दुकान में पैसों की पूजा। इस प्रकार के दोहरे व्यक्तित्व में धार्मिक और अधार्मिक के बीच भेदरेखा खींचना भी मुश्किल है।

नयी पीढ़ी में धर्म के प्रति रुझान कम होता जा रहा है। इसका एक कारण है कि वह परिवार में अपने दादा, पिता, माता आदि के व्यवहार को देखती है कि धर्मस्थान में नमस्कार महामंत्र, स्वाध्याय, भजन और कीर्तन आदि करते हैं, परन्तु घर में, दुकान

में उनका व्यवहार, आचरण अच्छा नहीं होता है। धर्म को आचरण में लाने की जरूरत है। धर्म को मात्र करने की नहीं, जीने की जरूरत है। धर्म केवल धर्मस्थान में ही नहीं, कर्मस्थान में भी होना चाहिए।

वास्तव में धार्मिक कौन होता है? इस संदर्भ में आचार्य श्री तुलसी ने एक गीत में लिखा है -

"धार्मिक है पर नहीं कि नैतिक बहुत बड़ा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का यह कैसा अभिनय है,
इस उलझन का धर्मक्रान्ति ही है कमनीय किनारा॥
बदले युग की धारा॥"

धार्मिकता और नैतिकता एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां धार्मिकता है, वहां नैतिकता है और जहां नैतिकता है, वहां धार्मिकता है। अणुव्रत आदमी को नैतिक ही नहीं, धार्मिक भी बनाता है।

वार्तालाप के दौरान आचार्य श्री तुलसी से एक मंत्रीजी ने कहा - "आचार्य जी! धर्म में मेरी रुचि है। मैं धर्म करना चाहता हूँ किंतु इसके लिए मुझे समय नहीं मिल पाता।"

आचार्य श्री ने उन्हें गौर से देखते हुए कहा- "मैं आपको ऐसा धर्म बता देता हूँ जो आप हर समय कर सकेंगे। उसके लिए अलग से समय नहीं निकालना पड़ेगा।"

मंत्री जी ने बड़े प्रसन्न मन से ऐसा धर्म बताने की प्रार्थना की।

आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "आप मंत्री हैं। प्रतिदिन अपने मंत्रालय से संबंधित बहुत सारी फाइलें आपको देखनी पड़ती होंगी।"

मंत्री जी ने कहा - "तरह-तरह के मामले आते हैं। कभी-कभी स्वयं को बड़ी मुश्किल में पाता हूँ। ऐसे-ऐसे दबाव आते हैं कि कुछ कहने की बात नहीं।"

आचार्य श्री तुलसी ने कहा - "आपके सामने जो भी फाइल आये, आप उसे पूरी ईमानदारी से निपटाएं। किसी के प्रभाव और प्रलोभन में आये बिना आप अपना काम पूरी नैतिकता और प्रामाणिकता से करें, यह आपका धर्म है। अगर आप ऐसा करते हैं तो फिर आपको किसी धर्मस्थान या उपासनागृह में जाकर स्तुति, वंदना, भजन और कीर्तन करने की जरूरत नहीं है। आप गर्व से अपने आपको धार्मिक कह सकेंगे।" वास्तव में सत्य, अहिंसा, नैतिकता, प्रामाणिकता आदि सब धर्म के ही प्रतिरूप हैं। इनमें से एक का भी पालन करें तो शेष स्वतः जीवन में अवतरित होने लगेंगे। फिर धर्म के पीछे भागने की जरूरत नहीं होगी। अतः धर्मस्थान और कर्मस्थान की विसंगति को दूर करने के लिए अणुव्रत एक समाधान है।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन का एक उद्देश्य था कि व्यक्ति के भीतर व्रत की चेतना जागे। व्रत-चेतना नैतिक और धार्मिक जीवन जीने की पृष्ठभूमि है। व्रत अध्यात्म जगत की एक महत्वपूर्ण शक्ति है। आदमी में व्रत न स्वीकार करने की शिथिलता देखी जाती है। उसका एक कारण है चित्त की चंचलता और दूसरा कारण है इन्द्रियों का असंयम। चित्त की स्थिरता और इन्द्रियों के संयम के लिए व्रत बहुत महत्वपूर्ण है। व्रत की साधना एक खुले दरवाजे को बंद करने की साधना है। आदमी की आकांक्षाएं और लालसाएं जो खुली पड़ी हैं, उन्हें नियन्त्रित करने का माध्यम है व्रत। अणुव्रत व्रतों की आचार संहिता ही नहीं, अपितु सुखी और शांत जीवन की मजबूत नींव है।

देश में गरीबी, हिंसा, आतंक, पर्यावरण प्रदूषण की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आंकड़े बताते हैं कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद हिंसा का स्तर चार गुना बढ़ गया। अपनी सुख-सुविधाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य पृथ्वी का अनावश्यक दोहन कर रहा है। आधुनिक पीढ़ी के लिए तो Standard of Life– नहीं Standard of Living का महत्व अधिक हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति चार प्रकार के संबंधों से जुड़ा हुआ है- Person to person, person to people, person to planet, person to profit.

वर्तमान स्थिति की यथार्थता यही है कि मनुष्य ने दूसरे मनुष्य के प्रति, समाज के प्रति और पृथ्वी के प्रति अपने दायित्व और जिम्मेदारियों को भुला दिया है क्योंकि उसकी श्रम-समय-शक्ति केवल Profit अर्थात् व्यक्तिगत लाभ को अर्जित करने में ही लगी हुई है और इस प्रकार की जीवनशैली का एकमात्र कारण है- असंयम की चेतना।

अणुव्रत संयम चेतना को पुष्ट करने का आसान और उत्तम तरीका है। अणुव्रत आचार संहिता के नियम अर्थात् छोटे-छोटे व्रत व्यक्ति के भीतर समाज और पर्यावरण के प्रति मैत्री, प्रेम, करुणा और अहिंसा की भावना को उजागर करके उसे शांति और सुख प्रदान करने वाले हैं। व्यक्तिगत स्तर पर नैतिकता, धार्मिकता और व्रत चेतना का जागरण मात्र एक व्यक्ति के लिए ही नहीं, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए वरदान स्वरूप है। अणुव्रत आचार संहिता में निहित चुनाव में साधन शुद्धि व दहेज, बाल विवाह जैसी कुरूढ़ियों से मुक्ति के नियम सामाजिक स्वास्थ्य प्राप्ति के सफल प्रयास हैं तो वहीं मादक व नशीले पदार्थों के सेवन से बचने का नियम शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक एवं पारिवारिक शांति प्राप्त करने के श्रेष्ठ उपाय हैं।

व्यवसाय में बेईमानी, असत्य और चोरी के परिहार के नियम नैतिक जीवन जीने के लिए सुगम मार्ग है तो वहीं स्वदार संतोष का नियम आध्यात्मिक साधना का पथ प्रदर्शक है। सद्भावना और भाईचारे का संदेश अनेकता में एकता स्थापित करने की कुंजी है तो अनाक्रमण एवं अहिंसा की भावना को विकसित करने का नियम आत्मा के लिए पूँजी है। अणुव्रत के सम्यक् अध्ययन एवं समीक्षण के पश्चात् यदि इसका जीवन में स्वीकरण हो जाये तो इंसान अपने स्वभाव 'इंसानियत' का साक्षात् कर सकता है, इंसान वास्तव में इंसान बन सकता है।

अणुव्रत उद्गाता आचार्य श्री तुलसी का एक ही लक्ष्य था कि अणुव्रत मानव में छिपे मानवीय गुणों को जगा सके, मानव को मानव बना सके। 'अणुव्रत' आचार्य तुलसी का संपूर्ण मानव जाति के लिए अद्भुत योगदान है। जो आचार्य तुलसी के इस महान अवदान को अपना लेता है, उसे सुखी एवं शांत जीवन का वरदान स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। ■■■

जय जय अणुव्रत

मुनिश्री दिनेश कुमार

जय जय अणुव्रत - 3, जय तुलसी
यह अणुव्रत विश्व बन्धुता का जन-जन को पाठ पढ़ाता है
धरती पर स्वर्ग उतर आए मैत्री का दीप जलाता है।
जय जय अणुव्रत।

यह भारत जब आजाद हुआ असली आजादी स्वर निकला
नैतिकता की सुरसरिता का भारत से ही अभियान चला
जन-जन का मन पावन करता अच्छा इंसान बनाता है।

अणुव्रत को जिसने अपनाया सरसब्ज बनाया मन-उपवन
मानवता का अभिषेक हुआ जन-जन में जागा अपनापन
सुख, शांति चाहिए इंसानो! घर-घर में शांति बिछाता है।

अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी फिर महाप्रज्ञ अब महाश्रमण
संदेश यही अणुव्रती बनो यदि नहीं बन सको सुखी श्रमण
घरबारी सब हो व्रतधारी अणुव्रत ही भाग्य-विधाता है।

अब अणुव्रत विश्व भारती यह अणुव्रत का ध्वज फहराती है
शुभ अमृत महोत्सव अणुव्रत का अणुव्रत बगिया महकाती है
तुलसी का अणुव्रत सिंहनाद सोया संसार जगाता है।

लय : है प्रीत यहां की रीत सदा

अणुव्रत द्वारा मेरा रूपान्तरण

डॉ. सोहनलाल गांधी

अणुव्रत गौरव से सम्मानित लेखक अणुव्रत दर्शन के प्रखर व्याख्याता हैं। अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. गांधी अनेक देशों की यात्राएँ कर अणुव्रत दर्शन को संयुक्त राष्ट्र संघ सहित अनेक वैश्विक मंचों पर प्रस्तुत कर चुके हैं।

बचपन के संस्कारों के कारण हिंसा मुझे किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं थी। आचार्य तुलसी की आँखों में दिव्य सम्मोहन था। उनके आभामण्डल की परिधि में बैठा व्यक्ति अनायास ही उनकी तरफ खिंचता चला जाता था।

सन् 1961 की बात है जब मैं एम. बी. कॉलेज उदयपुर में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. (फाइनल) कर रहा था। कॉलेज में हिंदी-अंग्रेजी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में मैं प्रायः प्रथम या द्वितीय रहता। अन्य साहित्यिक गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभाते रहने तथा छात्रसंघ की आन्दोलनात्मक प्रवृत्तियों में भाग लेने के कारण एक बौद्धिक छात्र नेता की मेरी छवि बन गयी थी।

मुनि राकेश कुमार जी का उन दिनों उदयपुर में चातुर्मास था। उन्हें कहीं से मेरे बारे में जानकारी प्राप्त हुई। वे गुरुदेव तुलसी के सुपठित प्रबुद्ध युवा साधु थे। कॉलेज के कुछ छात्रों के माध्यम से एक दिन मुनिश्री राकेश कुमार जी एम. बी. कॉलेज में प्रवचनार्थ पधारे। उन्होंने कुछ छात्रों के जरिये मुझे याद किया। उनके प्रवचन से मैं प्रभावित हुआ। प्रवचन के बाद मैंने मुनिश्री के दर्शन किये, अलग से बैठकर विस्तृत चर्चा हुई। मुनिश्री वैसे तो एक जैन साधु थे किन्तु वे अणुव्रत के प्रचारक की भूमिका में अधिक थे। मुनिश्री से यह प्रथम सम्पर्क था जो धीरे-धीरे प्रगाढ़ता में परिवर्तित होता गया। एक बार वे किसी काम से उदयपुर आये, मुनिश्री ने मुझे याद किया और तेरापंथ भवन में पहली बार उनसे विस्तृत चर्चा हुई। उन्होंने मुझे अणुव्रत छात्र परिषद् का संयोजक

धर्म संयम, अहिंसा एवं तप की भित्ति पर आधारित है, वह परिग्रह एवं इच्छाओं पर अंकुश लगाता है। अणुव्रत मानव धर्म है, संयम और सम्यक् आचरण उसके अनिवार्य तत्त्व हैं।

नियुक्त किया। देवेन्द्र जी कर्णावट जब भी उदयपुर आते, बिना मिले नहीं जाते। वे अणुव्रत के अधिकृत प्रवक्ता एवं विचारक थे। मेरे कई छात्र मित्र अणुव्रत से जुड़े और हम मासिक गोष्ठियाँ भी आयोजित करते।

इस बीच राजनगर में आचार्य भिक्षु द्विशताब्दी का भव्य आयोजन हुआ। देवेन्द्र जी कर्णावट आयोजन समिति के मंत्री थे। आचार्य प्रवर का राजनगर चतुर्मास भी था। उन्होंने मुझे उदयपुर से प्रबुद्ध शिक्षाविदों, प्राध्यापकों एवं चिंतकों को निमंत्रित कर आचार्य प्रवर की प्रातःकालीन विशेष गोष्ठियों में मुख्य वक्ताओं के रूप में राजनगर लाने का उत्तरदायित्व दिया। समारोह के बाद आचार्य प्रवर मेवाड़ के विभिन्न अंचलों में विचरण कर रहे थे। इस क्रम में उनका गोगुन्दा पदार्पण हुआ। मुनिश्री राकेश कुमार जी का संदेश प्राप्त हुआ और मैं निर्धारित समय पर गोगुन्दा पहुँच गया। मैं मुनिश्री राकेश कुमार जी के साथ गुरुवर्य आचार्य श्री तुलसी एवं उस वक्त के दार्शनिक संत मुनि नथमल (बाद में आचार्य महाप्रज्ञ) की सन्निधि में पहुँचा।

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

मेरा परिचय देते हुए मुनिश्री ने कहा - "नमाणा ग्राम का यह सोहन लाल गांधी है, एम. बी. कॉलेज में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. कर रहा है तथा साम्यवादी है।" आचार्य प्रवर ने मेरी ओर देखा और कहा - "तुम साम्यवादी हो, वस्तुतः हम भी साम्यवादी हैं, लेकिन अहिंसक साम्यवादी हैं। साम्यवाद का अंतिम लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण है जहां गरीब-अमीर का भेद मिटाकर सब लोग समान हों। जैन दर्शन का लक्ष्य भी शोषण रहित समता एवं समानता मूलक समाज की स्थापना है। अंतर केवल यह है कि साम्यवाद यह समानता बंदूक की नली से स्थापित करना चाहता है जबकि जैन धर्म हृदय परिवर्तन एवं अहिंसा से यह परिवर्तन लाना चाहता है।" आचार्य प्रवर के इन शब्दों का मुझ पर जादुई प्रभाव पड़ा।

यह सच था कि साम्यवाद की ओर मेरा झुकाव था, लेकिन बचपन के संस्कारों के कारण हिंसा मुझे किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं थी। आचार्य तुलसी की आँखों में दिव्य सम्मोहन था। उनके आभामण्डल की परिधि में बैठा व्यक्ति अनायास ही उनकी तरफ खिंचता चला जाता था। उदयपुर से गोगुन्दा रवाना होने के पूर्व मन में अनेक प्रश्न थे, किन्तु गुरुदेव के इस संक्षिप्त उद्बोधन में वे सब समाहित हो गये। इस चर्चा को मुनिश्री नथमल जी ने आगे बढ़ाया। उन्होंने कहा - "मैंने साम्यवाद को गहराई से समझा है। जब वह 'धर्म' को जहर कहता है, उसका अभिप्राय धर्म-सम्प्रदायों से है, धर्म से नहीं। धर्म संयम, अहिंसा एवं तप की भित्ति पर आधारित है, वह परिग्रह एवं इच्छाओं पर अंकुश लगाता है, सीमाकरण करता है जिसका साम्यवाद भी समर्थन करता है। अणुव्रत मानव धर्म है, संयम और सम्यक् आचरण उसके अनिवार्य तत्त्व हैं। तुम छात्रों को इससे जोड़ो।" मैंने अपने आपको गुरुवर्य के चरणों में समर्पित कर दिया और फिर कभी मुड़कर नहीं देखा। यह बोध मुझे 23 वर्ष की अवस्था में मिला लेकिन इन शब्दों की प्रतिध्वनि मुझे उम्र के इस पड़ाव में भी सुनायी देती है।

निकटता से गुरुदेव के ये प्रथम दर्शन थे। कुछ समय बाद गुरुदेव का मेरे गाँव पधारना हुआ। मैं भी वहां पहुँच गया था। वहां दिन भर गुरुदेव के सान्निध्य का अवसर मिला। एम.ए. अंग्रेजी करने के बाद मैं गांधी विद्यालय गुलाबपुरा में अंग्रेजी का स्कूल व्याख्याता बन गया था। अब हर ग्रीष्म एवं शीतकालीन अवकाश देवेन्द्र जी कर्णावट के साथ गुरुवर्य की सन्निधि में ही व्यतीत होने लगे। अणुव्रत की अंतरंग गोष्ठियों में भी मेरी उपस्थिति रहती। प्रातःकालीन प्रवचनों में भी गुरुदेव नियमित रूप से मुझे बोलने का अवसर प्रदान करते। धीरे-धीरे देवेन्द्र भाई के अलावा अब मैं पारस भाई जैन, जयचंदलाल दफ्तरी, प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल, जेठाभाई झवेरी, मोहनभाई जैन जैसे अणुव्रत महारथियों की मंडलियों में भी स्थान पाने लगा।

सन् 1965 की बात है। तत्कालीन भारत सरकार ने डॉ. डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में नया शिक्षा आयोग गठित किया। नैतिक शिक्षा पर अणुव्रत की अवधारणा को लेकर आयोग को स्मृति पत्र देना तय हुआ जो अंग्रेजी में ही लिखा जाना था। देवेन्द्र भाई ने पारस भाई को मेरा नाम सुझाया। मैंने अजमेर से अभी बी.एड. किया ही था। देवेन्द्र भाई का संदेश प्राप्त होते ही मैं मई 1965 में दिल्ली पहुँचा। तीन सप्ताह में मैंने कोठारी आयोग को प्रस्तुत किया जाने वाला बहुप्रतीक्षित स्मृति पत्र टाइप करवा कर तैयार कर लिया। महाप्रज्ञ जी एवं पारस भाई ने इसका अनुमोदन कर दिया। पारस भाई के नेतृत्व में अणुव्रत प्रतिनिधिमंडल ने इसे यथासमय डॉ. कोठारी को प्रेषित कर दिया। बाद में स्मृति पत्र की एक प्रति समाज भूषण छोगमल जी चोपड़ा को भेजी गयी। चोपड़ा साहब कलकत्ता के प्रसिद्ध एडवोकेट तथा तेरापंथ समाज के प्रबुद्ध चिंतनशील तत्त्वज्ञ श्रावक थे। उन्होंने इसे आद्योपांत पढ़ा और इसकी प्रशंसा में आचार्य प्रवर को एक विस्तृत पत्र लिखा। उन्होंने इसे लिखने वाले का नाम जानना चाहा और विचार व्यक्त किया कि यदि वह तेरापंथ समाज का ही युवक है तो उसमें बहुत संभावनाएँ हैं। उसकी प्रतिभा विकसित की जानी चाहिए। मैं अभी दिल्ली में ही

था और गुरुदेव मंदिर मार्ग स्थित बिड़ला मंदिर में विराज रहे थे। रोज की तरह जब मैं सायंकाल गुरुवर्य के दर्शनार्थ पहुँचा तो उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में मुझे छोंगमल जी चोपड़ा की श्लाघात्माक प्रतिक्रिया से अवगत कराया। गुरुदेव ने जिन शब्दों में मुझ पर कृपा और आशीर्वाद की बौछार की, मैं धन्य हो गया। मेरी तो दृढ़ मान्यता है कि गुरुदेव के इस शक्तिपात का ही परिणाम था कि आगे चलकर अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु अंतरराष्ट्रीय कार्य में मुझे अनपेक्षित सफलता मिली।

इस बीच 20 वर्ष व्यतीत हो गये। मैं अब केन्द्रीय विद्यालय कोटा में अंग्रेजी का स्नातकोत्तर अध्यापक और विभागाध्यक्ष था। दक्षिण की यात्रा सम्पन्न कर गुरुदेव पुनः राजस्थान की ओर अग्रसर थे और जनवरी 1971 में कोटा में त्रिदिवसीय प्रवास प्रस्तावित था। मैं वहां भी स्थानीय अणुव्रत समिति में सक्रिय था। देवेन्द्र भाई प्रस्तावित प्रवास के एक सप्ताह पूर्व कोटा आ गये थे। उनके साथ मैंने छः साल के अंतराल के बाद झालावाड़ में गुरुवर्य के पुनः दर्शन किये। देवेन्द्र जी के साथ मुझे देखकर गुरुदेव एवं महाप्रज्ञ जी बहुत प्रसन्न हुए। कोटा में गुरुदेव के सान्निध्य में सम्पन्न गोष्ठी में मेरा वक्तव्य हुआ। हर कार्यकर्ता का भाषण गुरुदेव ध्यान से सुनते और प्रोत्साहित करते। मेरे वक्तव्य के बाद गुरुदेव ने फरमाया - "सोहन जी, तुमने अच्छी प्रस्तुति दी। अब तुम्हें जैन दर्शन में भी गहन दृष्टि प्राप्त करनी होगी।" दूसरे दिन प्रातः मुझे सूचना मिली कि गुरुवर्य मेरे घर पधारने वाले हैं। मैं कुछ कहता, उसके पूर्व ही गुरुदेव मेरे छोटे से कमरे में पधार गये, कुर्सी पर विराजे और मांगलिक सुनाया। मेरे लिए यह स्वप्न जैसा था। समाज में किसी कार्यकर्ता का सम्मान कैसे बढ़े, इसके लिए गुरुदेव ऐसे प्रच्छन्न तरीके अपनाते थे।

अणुव्रत अधिवेशनों, अणुव्रत विचार गोष्ठियों और अणुव्रत से जुड़ी विभिन्न प्रवृत्तियों में भाग लेते-लेते सत्तर का दशक कैसे व्यतीत हुआ, कुछ पता ही नहीं चला। मेरे हृदय में अंतरराष्ट्रीय जगत में अणुव्रत के प्रचार-प्रसार की उत्कट इच्छा और संकल्प अब भी यथावत थे। इस बीच कोटा से मेरा स्थानान्तरण जयपुर हो गया और यहीं मेरे वैयक्तिक शैक्षणिक विकास एवं वैश्विक दृष्टि की व्यापकता का मार्ग खुला।

मैंने केन्द्रीय विद्यालय में काम करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय से अंग्रेजी भाषा शिक्षण (ई.एल.टी.) में न केवल एम.फिल. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की अपितु अंग्रेजी विभाग में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। अंग्रेजी भाषा के विभागाध्यक्ष एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रो. आर. पी. भटनागर जिन्होंने मुझे एम. फिल. में पढ़ाया, मेरी उपलब्धि से अत्यधिक प्रसन्न थे। एक दिन मैंने प्रोफेसर भटनागर साहब से आचार्य तुलसी और अणुव्रत आन्दोलन की चर्चा की। गुरुदेव ऐसे प्रोफेसर की तलाश में थे जो अंग्रेजी भाषा में अणुव्रत साहित्य का अनुवाद करने एवं करवाने का उत्तरदायित्व ले सके। प्रो. भटनागर को मैं गुरुदेव के दर्शनार्थ लाडनूं ले गया। वे आचार्य तुलसी एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ से प्रभावित हुए और अणुव्रत आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़ गये।

इस बीच गुरुदेव तुलसी के आचार्यत्व के पचास वर्ष पूरे होने पर तेरापंथ धर्मसंघ ने अमृत महोत्सव की घोषणा कर दी। गुरुदेव की उत्कट इच्छा थी अमृत महोत्सव की अवधि में ही प्रो. भटनागर के नेतृत्व में विदेशों में अणुव्रत अभियान का प्रारम्भ हो। मैंने 'अणुव्रत इंटरनेशनल' की विस्तृत योजना गुरुदेव एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ के सामने प्रस्तुत की। गुरुदेव को योजना अच्छी लगी और उन्होंने महती कृपा कर अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।

उधर मोहन जी जैन राजसमंद झील के किनारे पहाड़ी की शिखर पर गुरुदेव एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ की पावन उपस्थिति में 'अणुव्रत भारती' नामक संस्था का शिलान्यास कर चुके थे। गुरुदेव ने फरमाया - "अब मोहन और सोहन दोनों साथ मिलकर काम करो।" 'अणुव्रत भारती' को व्यापकता प्रदान करते हुए गुरुदेव ने इसका 'अणुव्रत विश्व भारती' नामकरण किया और 'अणुव्रत इंटरनेशनल' को इसकी ही एक स्वायत्त इकाई बना दिया।

प्रो. भटनागर के प्रधान सम्पादकत्व में गुरुदेव तुलसी पर पहला अंग्रेजी ग्रंथ प्रकाशित हो गया जिसका शीर्षक था - आचार्य तुलसी : निःस्वार्थ समर्पण के पचास वर्ष (Acharya Tulsi : Fifty years of Selfless Dedication) आमेट में प्रातःकालीन सभा में यह ग्रंथ गुरुदेव को भेंट किया गया। गुरुदेव के जीवन एवं अणुव्रत पर आलेख मैंने स्वयं अंग्रेजी में लिखे थे, शेष आचार्य तुलसी एवं महाप्रज्ञ जी के लेख अनुवाद थे। आचार्य तुलसी एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ जी के दैनिक जीवन पर कुछ रंगीन फोटोग्राफ विशेष रूप से तैयार कर उन्हें आकर्षक कैप्शन्स के साथ प्रकाशित किया गया। आवरण एवं आंतरिक साज-सज्जा लाजवाब थी। विदेशों में अणुव्रत की अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुति के लिए चार रंगों में एक आधारभूत एवं उपयोगी ग्रंथ तैयार हो गया।

राजस्थान विश्वविद्यालय में एक बार हवाई विश्वविद्यालय से इतिहास के प्रो. जगदीश शर्मा विजिटिंग प्रोफेसर बनकर आये। वे जैन दर्शन के बारे में कुछ नया जानना चाहते थे लेकिन जैन दर्शन के निदेशक अंग्रेजी नहीं जानते थे। कुलपति की पत्नी श्रीमती उन्नीत्थान जो नीदरलैण्ड से थीं और मुझसे परिचित थीं, वे एक दिन अचानक प्रो. शर्मा को लेकर मेरे घर आ गयीं। श्रीमती उन्नीत्थान की उपस्थिति में मैंने एक घंटे तक अंग्रेजी में प्रो. जगदीश शर्मा के प्रश्नों के उत्तर दिये। वे बहुत प्रभावित हुए। एक माह तक यह क्रम चला। उनसे घनिष्ठता हो गयी। मैंने उनसे पूछा कि विदेशों में अणुव्रत के प्रचार के लिए आप मेरी मदद कर सकते हैं? उन्होंने कहा - "मैं हवाई विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ग्लेन डी पेज से आपका परिचय करवा देता हूँ। वे अहिंसक राजनीति शास्त्र के जनक हैं तथा शांति के प्रबल समर्थक भी। मैं आपके बारे में आज ही उनको लिख दूँगा। उनका प्रत्युत्तर आने पर आप उनसे पत्र व्यवहार करें।"

अणुव्रत इंटरनेशनल के इतिहास में यह एक टर्निंग प्वाइन्ट था। मेरा एक पत्र ही प्रो. ग्लेन डी पेज को लाडनूं खींच लाया।

अणुविभा के तत्त्वावधान में अब तक दस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं। अणुविभा संयुक्त राष्ट्र संघ से सम्बद्ध संस्थाओं में नयी पहचान बना चुकी है।

> अणुविभा के तत्त्वावधान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में 35 देशों के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रोफेसर, पर्यावरणविद् तथा संयुक्त राष्ट्र के पदाधिकारी भाग ले चुके हैं।

उन्होंने एक सप्ताह गुरुदेव एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में बिताया। मैं छाया की तरह उनके साथ रहा। वे मेरे परम मित्र बन गये और उन्होंने मुझे होनोलुलु में उनके संयोजकत्व में मई में बौद्ध दर्शन के परिप्रेक्ष्य में शांति स्थापना पर होने वाली कॉन्फ्रेंस हेतु पेपर लिखने के लिए आमंत्रित किया। मेरा विषय था 'जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में शांति स्थापना'। गुरुदेव एवं युवाचार्य महाप्रज्ञ ने मेरा मार्गदर्शन किया। फरवरी 1987 में प्रो. पेज का तार आया कि चयन समिति से आपका पेपर स्वीकृत हो गया है। गुरुदेव बहुत प्रसन्न हुए। 14 देशों के चालीस विद्वानों को आमंत्रित किया गया था और उनमें मैं भी एक था। प्रभावशाली प्रस्तुतियों के कारण जापानी डेलीगेशन ने हमें इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल फिलॉसोफी, टोक्यो में भाषण के लिए आमंत्रित किया और लौटते वक्त हमने जापान की संस्थाओं में भाषण दिये।

यह यात्रा न केवल आशा से अधिक सफल हुई, बल्कि इस यात्रा ने विदेशों में अणुव्रत के प्रचार-प्रसार का मार्ग प्रशस्त कर दिया। तबसे अब तक मैं 25 से अधिक देशों में जैन धर्म, अणुव्रत, अहिंसा, पर्यावरण, सस्टेनिबिलिटी, पारिस्थितिकी आदि पर 40 से अधिक पत्र-वाचन कर चुका हूँ। साथ ही अणुविभा के तत्त्वावधान में अब तक दस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं जिनमें 35 देशों के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रोफेसर, पर्यावरणविद्, संयुक्त राष्ट्र के पदाधिकारी, धार्मिक नेता तथा बड़ी संख्या में जमीन से जुड़े कार्यकर्ता भाग ले चुके हैं। अणुविभा संयुक्त राष्ट्र संघ से सम्बद्ध संस्थाओं में नयी पहचान बना चुकी है। मेरे अलावा श्री टी.के. जैन, श्री संचय जैन, श्री मांगीलाल जी सेठिया के अनुज श्री बुद्धसिंह जी सेठिया, श्री महेन्द्र जैन, श्री किरीट दफ्तरी, श्री अरविंद वोरा, डॉ. पन्ना शाह आदि अणुव्रत कार्यकर्तागण संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं। ■■■

निर्माण कठिन, विध्वंस सरल

निर्माण और विध्वंस - ये दो विरोधी शब्द हैं। निर्माण जितना कठिन है, विध्वंस उतना ही सरल है। एक घड़े के निर्माण में कितना श्रम होता है, पर बना-बनाया वही घड़ा ढेले के एक आघात से फूट जाता है। वस्त्र के निर्माण की प्रक्रिया कितनी जटिल है, पर वही वस्त्र एक झटके में फाड़ा जा सकता है। एक शहर को बसाने में कितना समय और श्रम लगता है। एक अणुबम का विस्फोट उसे देखते-देखते तहस-नहस कर देता है। यही बात मनुष्य के व्यक्तित्व की है। उसका विकास जितनी धीमी गति से होता है, ह्रास उतनी ही तीव्रता से होता है। व्यक्तित्व के ह्रास का सबसे बड़ा कारण है संवेगों का असन्तुलन।

सत्य अपने आप में सुन्दर होता है, पर उसे भी उपयुक्त परिधान की अपेक्षा रहती है। नग्न सत्य व्यवहार के मंच पर शोभनीय नहीं बनता। शिव का अर्थ है कल्याण। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए कल्याणकारी योजनाएं सुनने और देखने में बड़ी आकर्षक लगती हैं। किन्तु उनके साथ सत्य और सौन्दर्य का योग न हो तो वे कुछ ही समय में अपनी व्यर्थता प्रमाणित कर देती हैं। सौन्दर्य मनुष्य के मन को बांधने वाला तत्त्व है। प्रकृति हो या पुरुष, उसमें सौन्दर्य का जितना अधिक निखार होता है वह उतना ही, प्रभावित करता है। किन्तु सत्य और शिव से विहीन सौन्दर्य केवल आँखों के लिए सुखद हो सकता है, जीवन के लिए उसका कोई उपयोग नहीं होता।

बदलाव की प्रक्रिया जटिल हो सकती है, पर वह असंभव नहीं है। जो व्यक्ति बदलना चाहता है, उसके लिए एक पंचसूत्री कार्यक्रम निर्धारित है। उसकी क्रियान्विति के लिए एक वर्कशॉप आवश्यक है। वह वर्कशॉप किसी सभागार में नहीं होगी। उसके लिए भावों की दुनिया में प्रवेश करना होगा। उसके पाँच अंग हैं-

- फेथ — आस्था
- होप — आशा
- कॉन्फिडेंस — आत्मविश्वास
- विल पावर — इच्छा शक्ति
- ऑटो सजेशन — अनुप्रेक्षा अभ्यास

-आचार्य तुलसी

यूं समझा मैंने अणुव्रत को

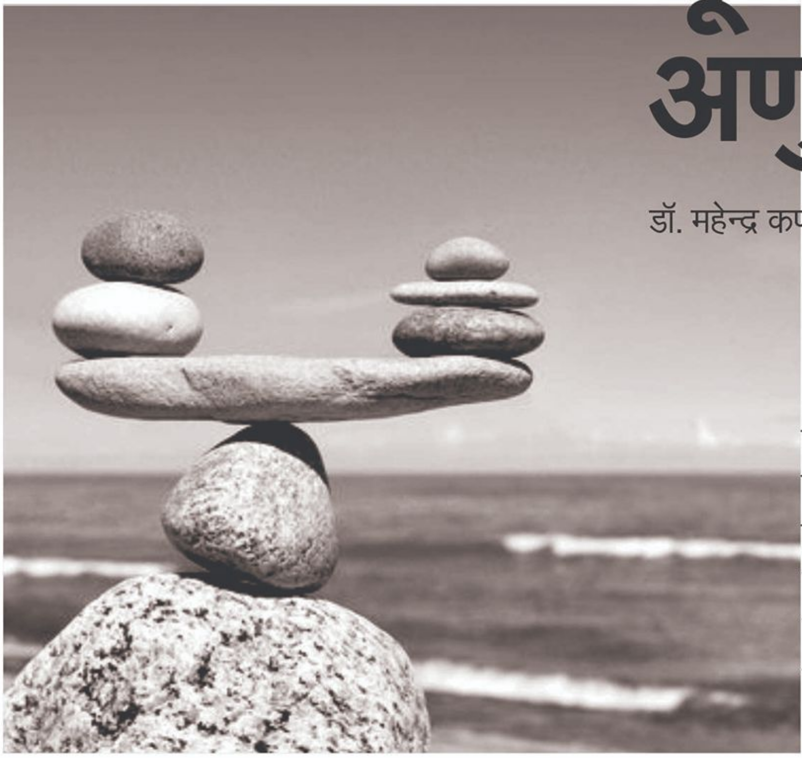

डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अणुव्रत गौरव अलंकरण से सम्मानित लेखक अणुव्रत दर्शन और इतिहास के गहन ज्ञाता हैं। डॉ. कर्णावट वर्षों तक अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष एवं अणुव्रत पत्रिका के सम्पादक रहे हैं। आप अणुव्रत के जमीनी कार्यकर्ता रहे हैं।

अणुव्रतमय वातावरण का ही प्रभाव रहा कि मैं बालपन से ही संयमित जीवन का आदी बन गया। गुरुजनों के प्रति आदरभाव, मित्रों के प्रति आत्मीयता एवं परिजनों के प्रति आदर-सम्मान भाव मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

मेरा जन्म अणुव्रत की जन्मघुट्टी के साथ 7 जनवरी 1950 को राजसमंद में हुआ। मैं भाग्यशाली रहा कि मेरा शिशुपन-बचपन स्वतंत्रता सेनानियों एवं अणुव्रती लोक प्रचेताओं के हाथों में गुजरा। एक ओर मुझे स्वतंत्रता सेनानी हीरालाल देवपुरा, हीरालाल कोठारी, रामबाबू शर्मा इत्यादि का दुलार मिला तो दूसरी ओर जयचंदलाल दफ्तरी, डॉ. छगनलाल शास्त्री, राजेन्द्रकुमार कावड़िया, देवेन्द्रकुमार हिरण, चतुर कोठारी, पूर्णचंद बड़ाला, गणेशकुमार कूकड़ा, शातिलाल बापना आदि अणुव्रत कर्मियों की गोद में खेलने का अवसर मिला। बाल्यावस्था एवं युवावस्था में मैंने पिताश्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट के साथ अणुव्रत की कई बैठकों को निहारा तो परमपूज्य आचार्य तुलसी-आचार्य महाप्रज्ञ का ममत्वपूर्ण आशीर्वाद पाया।

अणुव्रतमय वातावरण का ही प्रभाव रहा कि मैं बालपन से ही संयमित जीवन का आदी बन गया। संयमित जीवन होने से विद्यार्जन के दौरान मुझे किसी भी प्रकार का अभाव या कठिनाई नहीं अनुभव हुई। अभाव में भी मैंने सभाव पाया और फिजूलखर्ची से दूर रहा। गुरुजनों के प्रति आदरभाव, मित्रों के प्रति आत्मीयता एवं परिजनों के प्रति आदर-सम्मान भाव मेरे जीवन का अभिन्न

मैंने अणुव्रतों को आत्मसात कर जीवन में सत्य, संयम, सादगी, प्रेम, भाईचारा के साथ जीना सीखा तो मुझमें प्रतिरोध करने की शक्ति का विकास हुआ।

अंग बन गया। अध्ययन काल पूरा करने के बाद जब मैंने राजसमंद में सन् 1975 में क्लिनिक स्थापित की तो अणुव्रत साहित्य का स्वाध्याय ही नहीं किया वरन् उसे हृदयंगम कर अणुव्रत आचार संहिता को जीवन में उतारने का प्रयास किया।

अणुव्रत के अनुरूप जीवनशैली होने से मेरी सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता एवं सादगी ने लोगों-मित्रों को प्रभावित किया। क्लिनिक निर्माण के प्रारंभिक काल में मुझे मकान का नक्शा पारित करवाने, बिजली, नल इत्यादि का कार्य करवाने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आयी और न ही इन कार्यों के लिए मुझे किसी को रिश्वत देनी पड़ी।

सन् 1980 में पिताश्री की प्रेरणा से मैंने सार्वजनिक-सामाजिक जीवन में कदम रखा। सर्वप्रथम पिताश्री के साथ गांधी सेवा सदन के दैनिक कार्यों में सहयोगी बना। सन् 1982 में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के राजसमंद प्रवास के दौरान मेरे सामाजिक जीवन का पृष्ठ प्रारंभ हुआ। स्वागत समारोह में मेरे भाषा प्रवाह वक्तृत्व एवं संयोजन शैली ने आचार्य तुलसी को न सिर्फ प्रभावित किया वरन् मुझे अणुव्रत परिवार के निकट पहुँचा दिया। उसके बाद अणुव्रत सम्मेलनों में नियमित उपस्थिति रही। वहां साहित्यकारों-समाज प्रचेताओं की कार्यशैली को देखकर मैंने बहुत कुछ सीखा। अणुव्रत दर्शन हमें गलत कार्यों के विरोध में आवाज उठाने को कहता है। इससे मेरे जीवन में प्रतिरोधात्मक-शक्ति का विकास हुआ।

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

सामाजिक क्रांति की दिशा में सन् 1960 में आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के अन्तर्गत ''नया मोड़'' अभियान की उद्घोषणा की। समय के साथ "नया मोड़" की चमक कम हुई और नयी सामाजिक कुरूढ़ियों-आडम्बर ने जन्म लिया। मेवाड़ अंचल में सामाजिक आचार संहिता ''नया मोड़'' की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए मैंने नवम्बर 1995 से लगातार आठ वर्षों तक संघर्ष किया। विधवाओं के जीवन स्तर को सुधारने एवं समाज में उन्हें सम्मानपूर्वक स्थान दिलाने की दृष्टि से यह आवश्यक समझा गया कि उनका मांगलिक समारोहों में आना-जाना प्रारंभ हो तथा सफेद-आसमानी कपड़ों के स्थान पर रंगीन कपड़ों के पहनने का चलन हो। वर्ष 2003 के प्रारंभ से ही मैंने राजनगर में इस आशय का वातावरण बनाना प्रारंभ किया और सुपुत्र सुप्रज्ञ कर्णावट के विवाह प्रसंग पर प्रीतिभोज में सम्मिलित होने के लिए राजनगर की विधवा माताओं-बहनों से एक-एक के घर जाकर निवेदन किया।

इस पहल का आशातीत परिणाम आया। राजनगर की वृद्ध विधवा माताओं भंवरी बाई सामर, पानीबाई बड़ोला एवं सोहन देवी बड़ोला ने एक-एक विधवा को समझा कर विवाह भोज में चलने के लिए न सिर्फ तैयार किया वरन् सभी को साथ लेकर 5 जून 2003 को गीत गाती हुई प्रीतिभोज स्थल बाल निकेतन गांधी सेवा सदन पहुँचीं।

पिताश्री देवेन्द्र काका ने आगत विधवा बहनों का भावभरा स्वागत करते हुए कहा- "आज गुरुदेव तुलसी का सपना साकार हुआ है।" इसके पूर्व सभी विधवाओं के घर पर परोसा भेजने की प्रथा थी। वर्तमान में तो मेवाड़ संभाग की सभी जातियों में विधवाओं का मांगलिक अवसरों पर आने-जाने का चलन हो गया है।

राजसमंद जिले के टाड़ावाड़ा ग्राम में 2 जनवरी 2004 को हुए नरबलि कांड का मेरे नेतृत्व में राजसमंदवासियों ने सात दिनों तक विरोध किया और पूरा राजसमंद जिला एक दिन के लिए पूरी शांति लिये बंद रहा। जब अगस्त सन् 2011 में भ्रष्टाचार के विरोध में अन्ना हजारे के नेतृत्व में पूरे देश में जन आंदोलन का ज्वार उठा तो राजसमंद जिले में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन मेरे संयोजकीय नेतृत्व में परवान चढ़ा। उस समय मैंने सहयोगियों के साथ पन्द्रह दिनों तक सत्याग्रह किया, गिरफ्तारी दी और भ्रष्टाचार के विरोध में स्वर बुलंद किये।

अणुव्रत आचार संहिता से प्रेरित हो सन् 2016 से 2022 तक राजसमंद जिले की भीम तहसील के गाँवों में शराब के ठेके बंद करवाने की मुहिम में ग्रामवासियों के साथ सहभागिता निभायी। इस आंदोलनात्मक एवं प्रतिरोधात्मक स्वरूप से मेरी अलग पहचान बनी और मेरे सार्वजनिक जीवन को ऊँचाई मिली।

अणुव्रत जीवनशैली मानव जीवन की सार्थकता को प्राप्त करने का राजमार्ग है। मैंने अणुव्रतों को आत्मसात कर जीवन में सत्य, संयम, सादगी, प्रेम, भाईचारा के साथ जीना सीखा तो मुझमें प्रतिरोध करने की शक्ति का विकास हुआ। अणुव्रत के कारण ही मैं कुछ करने के योग्य बना और मातृभूमि का यत्किंचित ऋण उतार पाया। तदर्थ मैं अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं पिताश्री अणुव्रत महारथी देवेन्द्रकुमार कर्णावट तथा माँ अंजना का ऋणी हूँ। ■■■

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों से जुड़ी स्मृतियाँ

तेजकरण सुराणा

लेखक अणुविभा के वर्तमान प्रबंध न्यासी और पूर्व अध्यक्ष हैं। अणुव्रत विषयक अनेक विदेश यात्राओं के साथ ही अणुविभा द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय शांति सम्मेलनों में आपकी सक्रिय भूमिका रही है।

हमारे देश में व्रत की एक सुदृढ़ परंपरा रही है। अन्य देशों में भी किसी न किसी रूप में यह परंपरा प्रचलित थी। व्यक्ति सरकारी नियमों को तोड़ सकता है लेकिन यदि वह कोई व्रत ग्रहण करता है तो हर परिस्थिति में उसका पालन करता है।

अणुव्रत आंदोलन के 74 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं और शीघ्र ही उसके उद्‌भव का 75वाँ वर्ष भी प्रारम्भ होने जा रहा है। इस वर्ष को 'अणुव्रत अमृत वर्ष' के रूप में मनाया जाना निश्चित हुआ है। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने 01 मार्च सन् 1949 को राजस्थान के एक छोटे शहर सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन की नींव रखी थी। भारत अभी आजाद हुआ ही था, लेकिन विभाजन की त्रासदी के कारण सम्पूर्ण देश साम्प्रदायिकता की ज्वाला में जल रहा था। इसके साथ ही भ्रष्टाचार चरम सीमा में था और आम आदमी के दैनंदिन जीवन में शुद्ध खाद्य पदार्थ का गंभीर संकट था। गुरुदेव तुलसी के कोमल हृदय पर समाज में फैल रहे इस जहर का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने साम्प्रदायिक संकीर्णता से ऊपर उठकर चरित्र निर्माण का एक ऐसा अभियान चलाने का निश्चय किया जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय, रंग, गरीब, अमीर आदि भेदों से परे हो और उसका एकमात्र लक्ष्य सामाजिक सौष्ठव हो।

आचार्य तुलसी ने जैन धर्म में पहले से ही मौजूद 12 अणुव्रतों पर आधारित श्रावकाचार से प्रेरणा ली और वर्तमान की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में एक नयी वैश्विक अणुव्रत आचार संहिता का निर्माण किया। हमारे देश में व्रत की एक सुदृढ़ परंपरा

दिल्ली में अणुव्रती संघ के पहले अधिवेशन में गुरुदेव ने घोषणा की थी कि जब देश के अधिकतर लोग अणुव्रती बन जाएंगे तो वे विदेशों में भी इस अभियान को ले जाने का प्रयत्न करेंगे।

रही है। अन्य देशों में भी किसी न किसी रूप में यह परंपरा प्रचलित थी। व्यक्ति सरकारी नियमों को तोड़ सकता है लेकिन यदि वह कोई व्रत ग्रहण करता है तो हर परिस्थिति में उसका पालन करता है। उन्होंने 11 नये अणुव्रतों पर आधारित अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया।

दुनिया में अपनी तरह का व्रतों का यह पहला आंदोलन था जिसने छोटे-छोटे संकल्पों द्वारा पहले व्यक्ति के परिष्कार पर ध्यान केन्द्रित किया ताकि समाज स्वतः सुधर जाये। उनका लक्ष्य लाखों लोगों को अणुव्रती बनाकर एक अणुव्रती संघ का निर्माण करना था। पहला एक वर्ष व्यक्ति, व्यक्ति को प्रेरित कर अणुव्रत नैतिक चेतना के राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारण में ही व्यतीत हो गया। इसके लिए आचार्य प्रवर ने अपने धर्मसंघ के 650 साधु-साध्वियों तथा समर्पित कार्यकर्ताओं की एक विशाल धवल सेना को इस पुनीत यज्ञ में झोंक दिया और एक वर्ष बाद दिल्ली में अणुव्रती संघ का पहला अधिवेशन हुआ। एक युवक आचार्य के आह्वान पर यकायक 600 व्यक्ति 'अणुव्रत संकल्प' ग्रहण करने के लिए खड़े हो गये।

यह एक असाधारण घटना थी और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समाचार पत्रों ने इसका संज्ञान लिया। प्रायः सभी राष्ट्रीय समाचार पत्रों के मुखपृष्ठ पर यह समाचार सुर्खियाँ बना। न्यूयार्क से प्रकाशित टाइम मैगजीन ने 15 मार्च, 1950 को 'अणुबम बनाम अणुव्रत' शीर्षक से एक विशेष सम्पादकीय लिखा जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र अणुव्रतमय बन गया। सभी सामाजिक संगठनों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं राष्ट्र नेताओं ने अणुव्रत आन्दोलन का हृदय से समर्थन किया।

अब राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अणुव्रत आंदोलन ने एक विशाल वट वृक्ष का रूप ले लिया है। 01 मार्च, 1999 को हमने अणुव्रत आंदोलन की स्वर्ण जयन्ती मनायी। इस अवसर पर सैकड़ों प्रबुद्ध युवकों एवं वयस्कों को गुरुदेव ने अणुव्रत प्रवक्ता अलंकरण से सम्मानित किया।

अणुव्रत आंदोलन का गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत अमृत महोत्सव

दिल्ली में आयोजित अणुव्रती संघ के पहले अधिवेशन में गुरुदेव ने यह घोषणा भी की थी कि जब देश के अधिकतर लोग अणुव्रती बन जाएंगे तो वे विदेशों में भी इस अभियान को ले जाने का प्रयत्न करेंगे। आचार्य तुलसी का सौभाग्य था कि उन्हें अंतः प्रज्ञा के धनी मुनि नथमल (बाद में आचार्य महाप्रज्ञ) जैसे शिष्य मिले। वे आचार्य तुलसी के स्वप्नों के व्याख्याकार थे। उन्होंने 'अणुव्रत दर्शन ग्रंथ' की रचना कर अणुव्रत को एक वैचारिक आधार प्रदान किया। उन्होंने 'मेरा मन - मेरी शांति', 'चित्त एवं मन', 'आभामंडल' आदि अतीन्द्रीय चेतनापरक ग्रंथों का निर्माण कर अपने गुरु एवं समाज को आश्चर्यचकित कर दिया। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें सर्वप्रथम 'महाप्रज्ञ अलंकरण' से विभूषित किया और बाद में युवाचार्य के रूप में अपना उत्तराधिकारी भी मनोनीत कर दिया। दोनों विभूतियों ने पश्चिम से पूर्व एवं उत्तर से दक्षिण पदयात्राएं कीं। इन यात्राओं ने अणुव्रत को व्यापकता प्रदान की। अब अनुभव के आधार पर अणुव्रत में दो और आयाम जुड़ गये - प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान। अब अणुव्रत मानव रूपान्तरण का अद्वितीय किट बन गया।

मेरा परिवार पहले से ही आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के सिद्धान्तों के प्रति समर्पित था। मेरे पिताजी एक हलुकर्मी पवित्र आत्मा थे। मेरी माँ दृढ़धर्मिणी सुश्राविका हैं। मेरे संस्कार अणुव्रत के निहित आदर्शों के अनुरूप ही थे। गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ दोनों का मैं कृपापात्र था। परिपक्वता के विकास के साथ अणुव्रत के राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अभियानों में मेरी सहभागिता बढ़ती गयी।

सन् 2005 में आचार्य प्रवर (महाप्रज्ञ जी) का चतुर्मास दिल्ली में था। अहिंसा के अर्थशास्त्र पर पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में दिसम्बर 2005 में प्रस्तावित था। डॉ. सोहनलाल गांधी एवं प्रोफेसर अशोक बापना उसके क्रमशः अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संयोजक थे। मेरे पास संदेश आया कि मुझे सोहन जी गांधी से मिलना था। गुरुदेव का इंगित था कि उस सम्मेलन की स्थानीय व्यवस्था का उत्तरदायित्व मैं लूं। गुरुदेव की दृष्टि के अनुसार यह सम्मेलन सब दृष्टियों से सफल था। अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विद्वान बड़ी संख्या में आये। यह सब अणुविभा के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ और यहीं से संस्था के साथ मेरा जुड़ाव प्रारंभ हुआ।

सोहन जी गांधी एवं श्री संचय जैन का आग्रह था कि अणुव्रत के अंतरराष्ट्रीय अभियान में मेरी सहभागिता बढ़े। मेरी पृष्ठभूमि व्यापारिक थी। अतः मैं इस संस्था की गतिविधियों में सीमित सहभागिता ही चाहता था। मुझे मेरे स्वयं के व्यापार को भी संभालना था लेकिन सोहन जी गांधी एवं संचय जी के प्रति मेरे मन में आत्मीयता के भाव थे। अंतरराष्ट्रीय आयोजनों का भार मेरे कंधों पर आया। आचार्य प्रवर का उदयपुर चतुर्मास था। अणुविभा राजसमंद में दिसम्बर 2007 में शांति एवं अहिंसक उपक्रम का

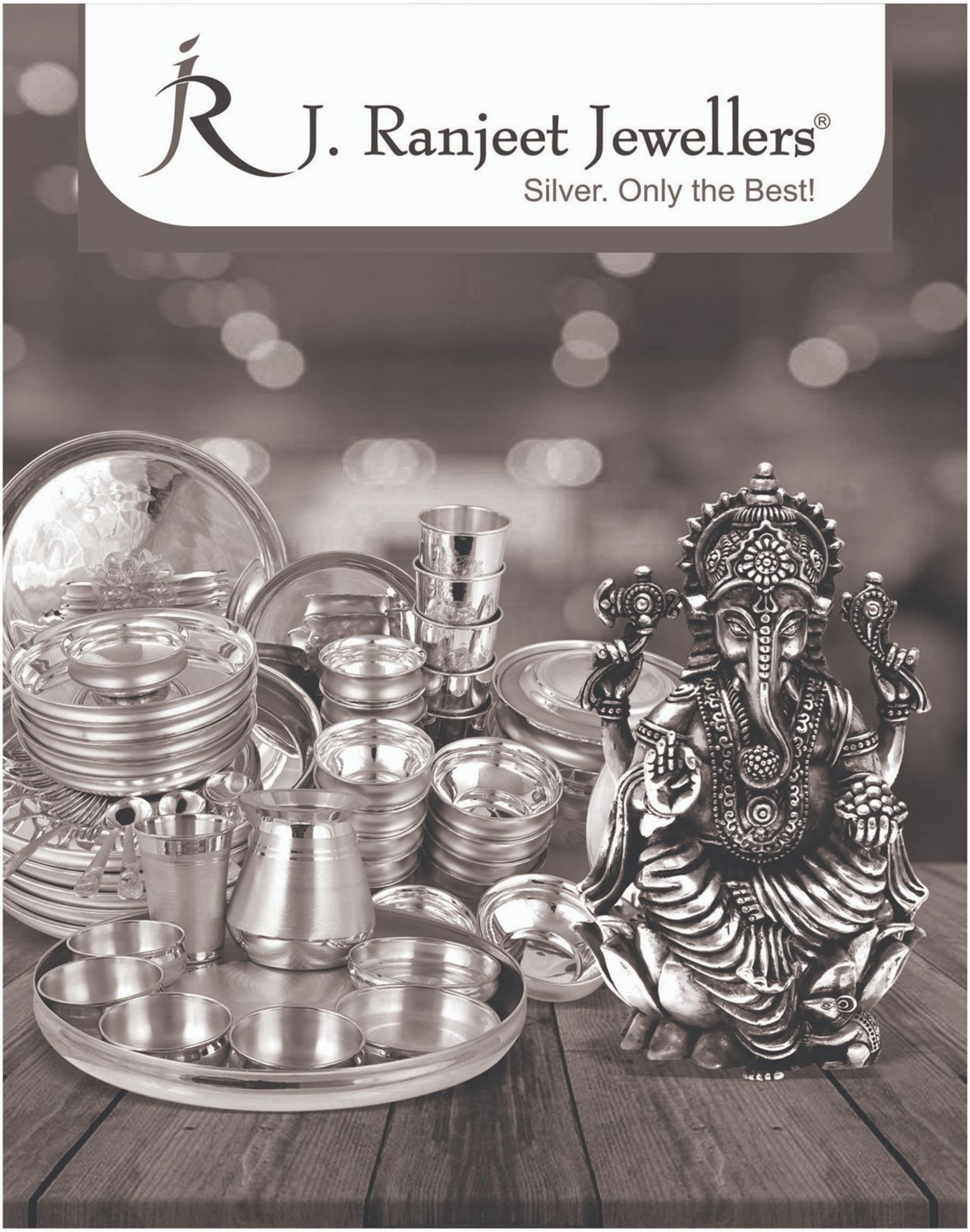

@No.54, NSC Bose Road, Sowcarpet Chennai - 600079. 044-43546516
+919940036516. Sales@jranjeetjewellers.com, Jrsilverchennai

Silver | Silverware | Silver Anklets | Silver Jewellery | Silver Coins | Silver Gifts | Silver Home Decor | Silver Furniture

आयोजन गुरुदेव के सान्निध्य में प्रस्तावित था। धीरे-धीरे अणुव्रत की अंतरराष्ट्रीय समझ विकसित हो रही थी। अब सोहन जी गांधी अणुविभा के अध्यक्ष थे और उन्होंने मुझे कार्याध्यक्ष का दायित्व दे रखा था। अणुविभा की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। आर्थिक योगदान जितना कर सकता था, उससे ज्यादा ही हो जाता था। सोहन जी गांधी, संचय जी एवं मैं लाडनूं में गुरुदेव के दर्शन करने गये। आर्थिक कठिनाई पर चर्चा चल रही थी। अचानक गुरुदेव ने मेरी ओर देखा, "अणुविभा में तुम्हारा जो पद है, उसमें 'कार्या' हटा दिया जाता है। अतः अब तुम अध्यक्ष हो।" यह सब इतना शीघ्र घटित हुआ कि मैं हतप्रभ हो गया। अणुविभा का पूरा दायित्व मैं नहीं लेना चाहता था किंतु गुरु इंगित सिर माथे। अतः इस दायित्व को स्वीकार करने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नहीं था।

मेरे अध्यक्ष बनते ही विदेशों में होने वाले अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में मेरे सम्मिलित होने एवं प्रस्तुतियों का दबाव बढ़ता गया। सोहन जी गांधी का मानना था कि मेरी अच्छी समझ थी और मुझे पत्रवाचन करना चाहिए। मेरे अध्यक्ष बनने के पूर्व स्वास्थ्य कारणों से गुरुदेव ने अचानक 2008 का चतुर्मास जयपुर के लिए घोषित कर दिया। आचार्य प्रवर से परामर्श कर सोहनजी गांधी ने 7वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन जयपुर में आयोजित करने की घोषणा की। उसका सम्पूर्ण दायित्व मुझे दिया गया। डॉ. कलाम इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। कई विदेशी प्रतिनिधियों से निकट के सम्बन्ध भी बने। अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन का मेरा अनुभव बढ़ता जा रहा था -

■ अणुविभा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था है। मान्यता प्राप्त 192 देशों में फैली संस्थाओं का वार्षिक सम्मेलन होता है। यह सम्मेलन 2009 में मैक्सिको में आयोजित होने वाला था। मैंने भी पत्रवाचन का प्रस्ताव रखा और वह स्वीकृत हो गया। अणुविभा के तत्त्वावधान में यह मेरी पहली यात्रा थी। मेरे अलावा किरिट दफ्तरी और डॉ. गांधी भी थे। मैंने 'अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में निःशस्त्रीकरण' पर पत्रवाचन किया जिसका अच्छा स्वागत हुआ।

■ अगस्त 2009 में मेलबॉर्न यू.एन. सम्मेलन में हेल्दी लाइफ स्टाइल तथा सस्टेनेबिलिटी पर पत्रवाचन किया। यह मेरी दूसरी अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुति थी।

■ अगस्त 2014 में न्यूयार्क में यू.एन.एन.जी.ओ. सम्मेलन में मैंने अहिंसा और सस्टेनेबिलिटी के संकट पर पत्रवाचन किया। इस अवसर पर अनेक विदेशी बन्धुओं से छोटी-छोटी गोष्ठियों में अणुव्रत पर चर्चा की।

■ 2016 में अमेरिका की साल्ट लेक सिटी में पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड्स रिलीजन्स में पत्रवाचन किया। विषय था जैन धर्म में अहिंसा।

■ 2017 में जर्मनी में मूनस्टर एवं ओस्नाबर्क में पत्रवाचन किया। विषय था अहिंसा के मार्ग में चुनौतियां। इस सम्मेलन में मेरे अलावा भाई संचय जैन ने भी प्रस्तुति दी। स्वास्थ्य कारणों से भाई सोहनजी गांधी नहीं आ सके।

■ साल्ट लेक सिटी में ही 2018 में यू.एन.एन.जी.ओ. कॉन्फ्रेंस का आयोजन हुआ था। इस बार संचय जी और सोहन जी गांधी ने इस सम्मेलन में भाग लेने में असमर्थता प्रकट की। मुझे अकेले ही इस सम्मेलन में अणुविभा का प्रतिनिधित्व करना पड़ा। मेरे पत्रवाचन का विषय 12 व्रतों पर आधारित जैनों का श्रावकाचार था। मेरी प्रस्तुति को सराहा गया।

इन अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुतियों के अतिरिक्त 2014 की आठवीं, 2017 की नौवीं तथा 2019 की दसवीं अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस की व्यवस्था समितियों का अध्यक्ष मैं ही था। अणुव्रत की अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुति में मेरी सहभागिता का मुझे आत्मसंतोष है। अभी बहुत कुछ करना है, संभावनाएं अपार हैं, आवश्यकता है सक्षम टीम की। इस पर हमें गंभीर चिंतन करना चाहिए। ■■■

धर्म का गौरव

अहिंसा को जीवन में उतारना चाहिए, अहिंसा को रग-रग में रमाना चाहिए, अहिंसा को आदेय और उपादेय मानने वाले लोगों को ऐसा उपदेश देते समय मन में कुछ विचार आता है। जो लोग जन्म-काल से ही अहिंसा को मानते आये हैं, जिनकी पीढ़ियां अहिंसा को मानती आयी हैं, अहिंसा का नाम सुनने मात्र से जिनकी छाती फूल जाती है, जो अहिंसा को अपना ध्रुव सिद्धान्त मानते हैं, जिनके धर्मगुरु अहिंसा के रंग में रंगे हुए हैं, मजीठ-सा अहिंसा का रंग जिनकी रग-रग में चढ़ा हुआ है, उनको अहिंसा का उपदेश देते हुए विचार होना ही चाहिए। वास्तव में देखना यह है कि जिस अहिंसा का धर्मगुरु पालन करते हैं, वह अनुयायियों के जीवन में क्या स्थान रखती है। अनुयायियों ने उसे अपने जीवन में कहां तक उतारा है?

अहिंसा-धर्म का प्रचार साधु-सन्तों के साथ-साथ उनके अनुयायी भी कर सकते हैं। धर्म के आचरण से अनुयायियों का जीवन ओतप्रोत होना चाहिए। उनके जीवन पर धर्म की एक ऐसी गहरी छाप होनी चाहिए, जिससे उनके आचार-विचार और व्यवहार को देखने मात्र से लोगों पर एक धार्मिक प्रभाव पड़े। अपने जीवन में सच्ची अहिंसा को उतारने से ही जनता के सामने एक प्रशस्त उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

अहिंसा धर्म का गौरव है। उसकी जान है। धर्म में से एक अहिंसा को निकाल दिया जाये तो फिर कुछ न बचेगा।

- आचार्य तुलसी

अणुव्रत से जुड़ता चला गया

महावीर राज गेलड़ा

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित लेखक अणुव्रत दर्शन के विद्वान हैं। राजस्थान सरकार में कॉलेज शिक्षा निदेशक पद से सेवानिवृत्त डॉ. गेलड़ा जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति रहे हैं।

आचार्य तुलसी ने राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के साथ राष्ट्रपति भवन में सभा की थी और अणुव्रत आंदोलन के महत्व को प्रतिपादित किया था। राष्ट्रपति इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रधानमंत्री नेहरू जी को भी आचार्य तुलसी से बातचीत करने के लिए प्रेरित किया।

आचार्य श्री तुलसी ने जब अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की थी तो जो लोग अणुव्रती बनते थे, उनके नाम उन्होंने स्वयं अपने हाथ से लिखने शुरू किये। श्रावकों में एक विशेष आकर्षण पैदा करने के लिए उन्होंने प्रवचन में ही उन नामों की घोषणा करनी प्रारंभ की। उनका मत था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस देश में अणुव्रत आंदोलन बहुत ही आवश्यक है।

आचार्य तुलसी ने दिल्ली की यात्रा के समय राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के साथ राष्ट्रपति भवन में सभा की थी और अणुव्रत आंदोलन के महत्व को प्रतिपादित किया था। डॉ. राजेंद्र प्रसाद इतने प्रसन्न और प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी को भी आचार्य तुलसी से बातचीत करने के लिए प्रेरित किया। विशेष रूप से मुझे यह प्रसंग इसलिए स्मरण है कि उन दिनों मैं भरतपुर के राजकीय कॉलेज में लेक्चरर था और वहां से उस सभा में भाग लेने के लिए दिल्ली गया था। उस सभा में अनेक साधु-साध्वी और श्रावक भी शामिल हुए थे। मैं स्मरण करूं तो 1953 में आचार्य श्री का चतुर्मास जोधपुर में था। मैं एम.

आचार्य श्री तुलसी ने भरी सभा में अणुव्रत के महत्व को बताते हुए कहा था कि आजादी की सुरक्षा के लिए प्रामाणिकता आना बहुत जरूरी है। इसे सभी को स्वीकार करना चाहिए।

एससी. की पढ़ाई कर रहा था। एक दिन जब मैंने आचार्य श्री के दर्शन किये तो उन्होंने मुझे प्रेरित किया और कहा - "तुम युवकों की एक सभा करो, विभिन्न वर्गों के लोगों को बुलाओ। मैं श्रावकों के अतिरिक्त अन्य लोगों को भी अणुव्रत आंदोलन का संदेश देना चाहता हूँ।" मैं अपने विद्यार्थी काल में आरएसएस से जुड़ा हुआ था और खेलने भी जाया करता था। मैंने प्रयत्न करके अपने कॉलेज के साथियों को, आरएसएस के स्वयंसेवकों को तथा विभिन्न स्कूलों में व्यक्तिगत जाकर छात्रों को सभा में भाग लेने के लिए कहा था। एक अच्छी सभा हो गयी। आचार्य श्री अत्यंत प्रसन्न हुए क्योंकि विद्यार्थियों ने जिज्ञासावश अनेक प्रश्न भी किये थे। इस प्रकार मेरा जुड़ाव अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभ से ही हो गया था।

अनुभवों का यह लंबा सफर है। मैं जब कभी भी स्मरण करता हूँ तो मुझे एक घटना और याद आती है। यह उन दिनों की बात है जब अणुव्रत आंदोलन अपने प्रारंभिक चरण में था। तब कानपुर की ओर जाते हुए आचार्य श्री भरतपुर में आये थे। वहां भी मैंने प्रयास करके रात्रि के समय एक सभा का आयोजन किया जिसमें कॉलेज के प्राध्यापकगण, प्रशासक लोग और पंडित वर्ग सम्मिलित हुए थे। आचार्य श्री तुलसी ने भरी सभा में अणुव्रत के महत्व को बताते हुए कहा था कि आजादी की सुरक्षा के लिए प्रामाणिकता आना बहुत जरूरी है। इसे सभी को स्वीकार करना चाहिए। आज मुझे खुशी है कि नयी पीढ़ी के लोग अणुव्रत के दर्शन को स्वीकार कर रहे हैं।

अणुव्रत आंदोलन का गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

जब मैं निदेशक कॉलेज शिक्षा था, तब मैंने विश्वविद्यालय से स्वीकृति लेकर चार कॉलेजों में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान का विषय स्नातक के पाठ्यक्रम में शामिल कराया जिससे इसकी प्रासंगिकता बनी रहे और यह गतिमान रहे। जब मैं जैन विश्व भारती लाडनूं का प्रथम कुलपति बना तो मैंने चार विभाग शुरू किये। उनमें जीवन विज्ञान, अणुव्रत और विश्व शांति का विभाग भी रखा गया जो आज भी पढ़ाया जाता है। अणुव्रत के प्रचार-प्रसार के लिए मैंने अनेक देशों की यात्रा भी की। रोम का वह संस्मरण याद आ रहा है जब मेरे साथ वर्तमान की साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी समणी के रूप में गयी थीं। वहां दुनियाभर के साधु-संत आये हुए थे। विश्व धर्म सम्मेलन हो रहा था। उसमें हम दोनों के भाषण हुए। उपस्थित प्रतिनिधियों ने अणुव्रत दर्शन को वर्तमान दौर की आवश्यकता बताया। उन्होंने आश्चर्य जताया कि इस अत्यंत महत्वपूर्ण दर्शन के बारे में अब तक उन्हें कोई जानकारी क्यों नहीं है। हम जब गिरजाघर में भाषण कर रहे थे तो वहां कहा गया कि वे लोग तो इसके बारे में जानते ही नहीं हैं। इसका व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिए। वे भी इसमें सहयोग करेंगे।

मैं 20 वर्ष की उम्र में अणुव्रत से जुड़ा था, आज मैं 90 वर्ष का हो गया हूँ। इतने लंबे समय से मैं अणुव्रत के विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़ा रहा हूँ। आचार्य महाप्रज्ञ ने मुझे 'अणुव्रत पुरस्कार' से सम्मानित किया। पुरस्कार देते समय आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था - "महावीर राज गेलड़ा उन व्यक्तियों में शामिल है जो इस आंदोलन के प्रारम्भ से जुड़े रहे। इसने भावना के स्तर पर कार्य किया है जो प्रशंसनीय है।" आचार्य मणिप्रभ सागर ने संदेश में कहा - "तुम्हारा सम्मान अणुव्रत समाज का सम्मान है।"

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के समय में और अब वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के समय में अणुव्रत आंदोलन ने संस्था का रूप ले लिया है और सारे देश में अणुव्रत समितियां काम कर रही हैं। मैं कामना करता हूँ कि भारत के भविष्य को अणुव्रत सदैव प्रगति के पथ की ओर ले जाये। ■■■

> जब मैं जैन विश्व भारती लाडनूं का प्रथम कुलपति बना तो मैंने चार विभाग शुरू किये। उनमें जीवन विज्ञान, अणुव्रत और विश्व शांति का विभाग भी रखा गया जो आज भी पढ़ाया जाता है।

अणुव्रत का मेरे जीवन पर प्रभाव

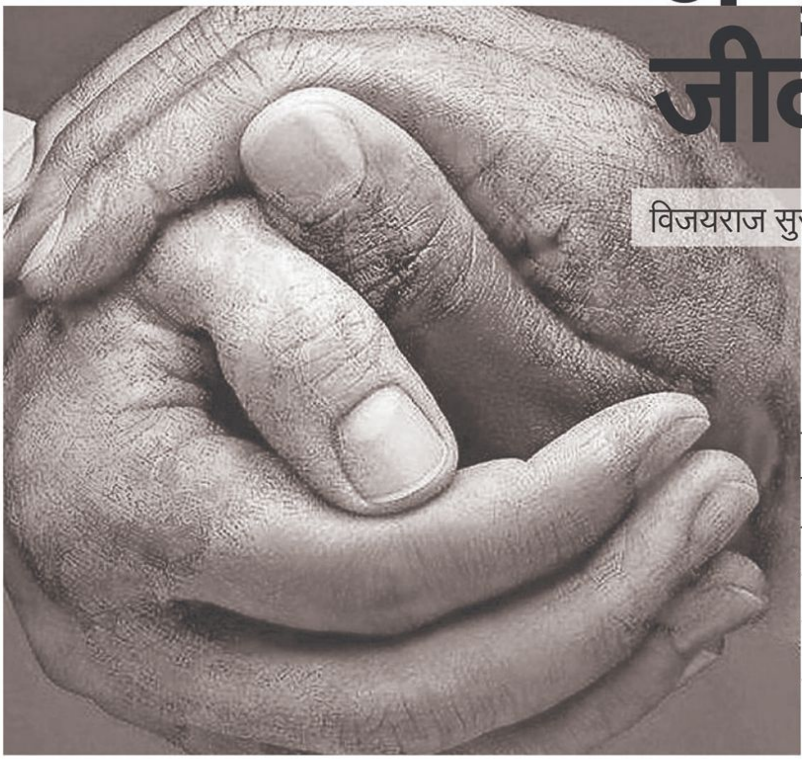

विजयराज सुराणा

लेखक अणुव्रत आंदोलन से लम्बे अरसे तक एक जमीनी कार्यकर्ता के रूप में जुड़े रहे हैं। श्री सुराणा अणुव्रत महासमिति के कई कार्यकाल में महामंत्री रहे हैं। आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

अणुव्रत रथियों के साथ कुछ दिन रहने व आयोजन की व्यवस्थाओं में शरीक होने का प्रतिफल हुआ कि मैं अणुव्रत के एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में स्थापित हो गया। अणुव्रत से जुड़ाव ने मुझे अंधकार में रोशनी दिखायी और एक सार्थक जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया।

अणुव्रत

अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी तथा अन्य साधु-साध्वियों व विशिष्ट जनों के प्रवचन व भाषण सुनने से अणुव्रत दर्शन के बारे में कुछ परिचित तो हो गया था, परन्तु स्वयं द्वारा कुछ बोलना संभव नहीं था। उन्हीं दिनों बजाज इलेक्ट्रिकल्स ने अपने निर्मित पंखे के प्रचार हेतु एक कहानी प्रतियोगिता आयोजित की थी। पूरे देश से प्राप्त करीब 1500 प्रविष्टियों में से मुझे चुना गया एवं प्रथम पुरस्कार मिला। सन् 1967-68 में आचार्यप्रवर हमारे गाँव पड़िहारा विराज रहे थे। मेरे पिताजी ने उन्हें इस बारे में बताया तो आचार्यप्रवर ने रात्रि वेला में कुछ देर बैठाकर अणुव्रत के बारे में खूब अच्छी तरह से समझाया और बाद में पूछा - "क्या पूरा समझ गये ?"

मेरे हाँ कहने पर उन्होंने मुझे कहा कि कल दो-तीन पृष्ठों में इसे लिखकर लाना। अगले दिन प्रातः जब मैंने अपना लिखा हुआ उन्हें दिखाया तो बोले कि आज तुम्हें इसे व्याख्यान में पढ़ना है। अपने प्रवचन के अन्त में उन्होंने मेरा नाम लेकर प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इसने कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाकर

मन चंगा तो कठौती में गंगा...संकट के बादल छंटने लगे एवं पूज्य महाप्रज्ञ का यह कथन कि अणुव्रत की भावना के अनुसार रहोगे तो पुन: अच्छे दिन लौटेंगे, साकार हो गया।

अपना व परिवार के साथ तेरापंथ का भी नाम रोशन किया है। उसी के पटाक्षेप में मुझे अणुव्रत के बारे में बोलने का निर्देश दिया। मुझे मंत्री होने के नाते स्कूल की सभाओं में बोलने का तो अवसर मिला था, परन्तु इस तरह की बड़ी परिषद् में बोलने का वह प्रथम अवसर था। फिर भी गुरुवर के आदेश से संकोचवश खड़ा होकर, बिना किसी की ओर देखते हुए, अपना लिखित निबन्ध पढ़ डाला।

अणुव्रत से जुड़ाव

कार्यकर्ताओं को समझाने व जोड़ने की आचार्यप्रवर की विलक्षण शैली थी। इस कार्यक्रम से अणुव्रत के बारे में मेरी भी कुछ समझ हो गयी एवं यदा-कदा कार्यक्रमों में बोलने लगा तथा भाग भी लेने लगा। इसी तरह गुरुदेव ने ग्रामीणों के एक कार्यक्रम में मुझे श्री देवेन्द्रजी कर्णावट व श्री मोहन भाई जैन के साथ जोड़ दिया। उन अणुव्रत रथियों के साथ कुछ दिन रहने व आयोजन की व्यवस्थाओं में शरीक होने का प्रतिफल हुआ कि मैं अणुव्रत के एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में स्थापित हो गया।

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

अणुव्रत में बढ़ते कदम

इसका प्रतिफल यह हुआ कि दिल्ली में मैं 13 वर्षों तक 4 कार्यकाल में दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति का मंत्री रहा। इस वजह से अनेक कार्यक्रमों में बोलने व संयोजन का अवसर मिलता गया। अनेक स्कूलों में भी कार्यक्रम किये। इससे मैं भी एक तरह से अणुव्रत में रच-पच गया एवं अणुव्रत के नियमों के प्रति भी गहनता से जुड़ता चला गया। तत्पश्चात् मुझे चार बार ही चार कार्यकालों में अणुव्रत महासमिति का महामंत्री बनने का सौभाग्य भी मिला।

प्रामाणिकता का लाभ

दिल्ली में मैं अपने व्यवसाय में अच्छा सम्पन्न हो गया था एवं व्यवसाय के अच्छे फैलाव के साथ मेरे पास अनेक प्लॉट और निजी कोठी भी हो गयी। मेरी इस प्रगति के पीछे मैं यह पूर्णत: मानता था कि इसकी वजह मेरी अणुव्रतमयी जीवनशैली एवं उसी के अनुरूप अपने व्यापारी बंधुओं के साथ छल व झूठ-कपट रहित सीधा सपाट व्यवहार रहा।

परीक्षा की घड़ी

सम्पन्नता के शिखर की ओर चढ़ते-चढ़ते सन् 1995-96 में उल्टा लुढ़कने लगा। कर्मयोग ने ऐसा पलटा खाया कि मेरी सारी जमा पूँजी रफू-चक्कर हो गयी, सम्पत्तियां बिक गयीं एवं करोड़ों की कीमत की फैक्टरी भी औने-पौने दामों में बेचने की मजबूरी हो गयी। अपने मकान के अतिरिक्त संपत्ति के नाम पर मेरा अपना अब कुछ नहीं था।

गुरु का आशीर्वाद

मैं उस समय अणुव्रत महासमिति का महामंत्री था। मैंने अपनी उस विपरीत स्थिति में पद से त्याग-पत्र दे दिया। गुरुदेव आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने स्थिति समझकर एक शाम मुझे काफी कुछ समझाया। उन्होंने कहा कि आपने स्वयं कोई गड़बड़ी नहीं की एवं न ही कोई बेईमानी की, यह तो ग्रहों का फेर है, जो समय पाकर पुन: पलटेगा। गुरुवर ने बहुत हिम्मत बढ़ायी, परन्तु मैंने त्याग-पत्र वापस नहीं लिया।

अणुव्रतमय सम्बल

उस समय बंगलौर के श्री सीताशरणजी शर्मा अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष थे। वे जब बंगलौर से आये तो मेरे घर आकर मुझे दो लाख रुपये दिये एवं कहा कि पुन: काम शुरू करो। मेरे काफी मना करने पर भी वे दो लाख रुपये छोड़कर चले गये एवं कहा कि कमाकर लौटा देना।

अणुव्रत बना सम्बल

कुछ पंचों ने मुझे कहा कि यदि कुल देनदारी का 25-30 प्रतिशत दे दो तो हम इस राशि से सारे कर्जदारों को निपटा देंगे एवं आपको बाद में कुछ नहीं देना पड़ेगा और न ही कोई माँगेगा। मैंने दो दिन का समय माँगा। दो दिन बाद मैंने उनसे कहा कि आप तीस प्रतिशत में सारे कर्जदारों को निपटा दोगे, परन्तु मैं इसे पूरा निपटा हुआ नहीं मानूँगा। जब भी मेरी कमाई होगी, शेष राशि दे दूँगा। वे सभी अवाक् थे कि फिर कैसे दोगे? न तो कोई सम्पत्ति है और न ही हाथ में आमदनी का कोई स्रोत। परन्तु मेरे जेहन में आचार्य तुलसी व अणुव्रत का दर्शन छाया हुआ था कि क्या मैंने अभी तक यही सीखा है कि मैं दूसरों के पैसे हजम कर जाऊं?

मन चंगा तो कठौती में गंगा

संकट के बादल अगले दो साल भी नहीं छंटे। 3-4 तरह के अलग-अलग काम शुरू किये, मगर उन सबमें भी घाटा ही रहा एवं शर्माजी द्वारा दिये गये दो लाख भी बराबर हो गये। एक दिन ऐसा आभास हुआ कि मैं वापस अपने पुराने व्यवसाय में ही लौट

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस

लाईफ इंश्योरेंस

कैशलेस मेडीक्लेम

हमारे विशेषज्ञों द्वारा अपनी पुरानी ज्वैलर्स ब्लॉक पॉलिसी या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें ।

नो रुम कैटगरी वाली कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें और इसे केवल 2600/- की मामूली राशि से सुपर टॉप अप पॉलिसी के साथ जोड़ें

इंश्योरेंस टिप्स

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी नंबर के साथ शेयर करें, हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना की सलाह देंगे ।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है और आपको किसी सहायता या सलाह की आवश्यकता होती है, तो हम मदद के लिए तैयार है ।

Legacy of 38 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !
हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

26 A, Dagina Bazar, Mumbadevi Rd, Mumbai 400 002 | Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com
Contact: +91 7045 850012/13/14/15/16 / 9869230444 / 9869050031 / 022-22448800

जाऊँ और इलेक्ट्रिक वायर की ट्रेडिंग ही शुरू कर दूं। मेरी पहचान के अनेक ऐसे दुकानदार थे, जो मेरे प्रति अच्छे भाव रखते थे। अन्य फैक्टरियों से माल बनवाकर, कमीशन पर भेजने हेतु कुछ ऑर्डर दे दिये। संकट के बादल छँटने लगे एवं पूज्य महाप्रज्ञ का यह कथन कि अणुव्रत की भावना के अनुसार रहोगे तो पुनः अच्छे दिन लौटेंगे, साकार हो गया।

कर्ज उतरता गया

मेरा पुत्र राजीव अपनी पूर्ण क्षमता के साथ जुट गया था। जैसे-जैसे कुछ अतिरिक्त राशि हाथ में आती, बिना किसी के तकाजे, हम उसके घर किस्तों में रकम पहुँचाते गये। गुरुओं का आशीर्वाद व मार्गदर्शन था, अणुव्रत भी जेहन में था, नीयत साफ थी, अतः नियति भी बनती गयी एवं अगले पाँच-सात वर्षों में सभी की पूरी मूल राशि चुका दी। यद्यपि ब्याज तो किसी ने माँगा भी नहीं, और मैंने दिया भी नहीं। हरेक को अपनी मूल राशि पाकर अति प्रसन्नता थी।

अणुव्रत का वरदान

जमीन-जायदाद, फैक्टरी एवं रहवास की कोठी बेचने के बाद भी जब कर्जा रह गया तब मानसिक उलझन बढ़ गयी थी। एक-दो बार तो ऐसी गहन निराशा व्याप्त हो गयी एवं मन में यह भाव भी आया कि ऐसा भी क्या जीना। परन्तु उसी क्षण गुरु की मूर्ति व अणुव्रत के भाव यही प्रेरणा देते कि यह बला भी समय पाकर टल जाएगी।

अणुव्रत आंदोलन के अमृत महोत्सव के अवसर पर मुझे यह सब लिखते हुए मन में प्रसन्नता हो रही है कि अणुव्रत से जुड़ाव ने मुझे अंधकार में रोशनी दिखायी और एक सार्थक जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया। ■■■

अणुव्रत आंदोलन के अमृत महोत्सव के अवसर पर मुझे यह सब लिखते हुए मन में प्रसन्नता हो रही है कि अणुव्रत से जुड़ाव ने मुझे अंधकार में रोशनी दिखायी और एक सार्थक जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया।

अहिंसा का स्वरूप

जो व्यक्ति छोटे और बड़े, अनुकूल और प्रतिकूल हर प्राणी के प्रति समत्व बुद्धि का विकास करता है, वह अहिंसक होता है। जिस व्यक्ति की चेतना द्वन्द्वों से मुक्त हो जाती है, जो आत्मभाव और परभाव में राग एवं द्वेष की परिकल्पना नहीं करता, वह अहिंसक होता है।

एक अहिंसक व्यक्ति न किसी का हनन करता है, न किसी पर उपद्रव करता है, न किसी को अपने अधीन बनाता है और न किसी को संतप्त ही करता है।

वह अपने मन, वाणी और कर्म-तीनों की असत् प्रवृत्ति का निरोध करता है अथवा उसे सत् में रूपान्तरित कर लेता है।

अहिंसा जीवन का परम आदर्श है। इसके परिवेश में अन्य अनेक आदर्श स्वयं उपस्थित हो जाते हैं। सत्य अहिंसा की परिक्रमा करता है। अचौर्य इसकी सहज परिणति है। ब्रह्मचर्य इसका सहचर है। अपरिग्रह इसका सहोदर है। अहिंसा की उत्कृष्ट आराधना करने से शेष तत्त्व स्वयं आराधित हो जाते हैं।

अहिंसा वह सुरक्षा कवच है जो घृणा, वैमनस्य, विद्वेष, प्रतिरोध, भय, आसक्ति आदि घातक अस्त्रों के प्रहार को निरस्त कर देता है। यह जिसे उपलब्ध होता है, वह सदा निश्चिन्त जीवन जीता है। अतीत की स्मृति और भविष्य की आशंका उसके मन को विक्षुब्ध नहीं कर सकती। अपने अस्तित्व की सुरक्षा और स्वत्व के विस्तार की भावना से प्रेरित होकर वह कोई अनुचित निर्णय नहीं ले सकता।

अहिंसा की अनुपालना स्व और पर दोनों के लिए हितावह है। जिस भू-भाग में अहिंसा प्रतिष्ठित होती है, वहां जन्मना वैर-भाव रखने वाले प्राणियों की शत्रुता समाप्त हो जाती है। तीर्थंकरों का समवसरण इसका स्वयंभू साक्ष्य है। विरोधी विचार करने वाले लोगों का सहावस्थान अहिंसा की पृष्ठभूमि पर ही घटित हो सकता है।

जिस देश या समाज में अहिंसा का मूल्य नहीं है, वहां मानवीय मूल्यों को कोई प्रतिष्ठा नहीं मिल सकती। मानवता के लिए त्राण, शरण, गति और प्रतिष्ठा एकमात्र अहिंसा ही है। जो व्यक्ति अहिंसक होता है वह - जागरवेरोवरए- जागृत होता है और वैर से उपरत होता है। अहिंसा आनन्द का द्वार है, हिंसा विषाद, संक्लेश एवं परिताप की परछाया है। अहिंसा के स्वरूप को समझना और उसे आत्मगत करना ही जीवन की उपलब्धि है।

-आचार्य तुलसी

सर्वधर्म सद्‌भाव का सुंदर गुलदस्ता

जी. एल. नाहर

अणुव्रत गौरव अलंकरण से सम्मानित लेखक राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रहे हैं। एग्जीक्यूटिव इंजीनियर के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद आपने अणुव्रत के कार्यों में अपने जीवन को खपा दिया।

चूँकि अणुव्रत किसी जाति या संप्रदाय से जुड़ा हुआ नहीं है, इसलिए सभी समाज के आम लोग ही नहीं, उनके सरपंच भी अणुव्रत के कार्यक्रमों में शामिल होते थे तथा अणुव्रत दर्शन की सराहना करते थे, इससे प्रभावित होते थे तथा कई लोग अणुव्रत से जुड़े भी।

गणाधिपति

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत दर्शन से प्रभावित होकर मैं अणुव्रत आंदोलन के शुरुआती दौर से ही इससे जुड़ गया। अणुव्रत आचार संहिता के चौथे नियम - "मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा" तथा नौवें नियम - "मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा" - से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ और समाज में इनके प्रचार-प्रसार के लिए जी-जान से जुट गया।

मोहन भाई, मोतीलाल रांका, देवेन्द्र कर्णावट, महेन्द्र कर्णावट, पंचशील जैन आदि के साथ मिलकर काम किया। मैंने बड़ी संख्या में जैनेतर समाज के लोगों के साथ भी बातचीत की और उन्हें अणुव्रत दर्शन के बारे में बताया। चूँकि अणुव्रत किसी जाति या संप्रदाय से जुड़ा हुआ नहीं है, इसलिए सभी समाज के आम लोग ही नहीं, उनके सरपंच भी अणुव्रत के कार्यक्रमों में शामिल होते थे तथा अणुव्रत दर्शन की सराहना करते थे, इससे प्रभावित होते थे तथा कई लोग अणुव्रत से जुड़े भी।

अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार में मुझे मिश्रीमल मेहता, हजारीलाल जी एडवोकेट, केसरी सिंह जी, केसरी मल जी, प्रताप मल जी मेहता आदि का भी अच्छा सहयोग मिला। राजघराने से जुड़ाव का भी असर था कि लोग हमारे विचारों से प्रभावित होते थे। मैं अन्य संप्रदायों के लोगों को भी अणुव्रत से जोड़ा करता था। जब आचार्य तुलसी के पास इसकी जानकारी पहुँची तो वे बड़े प्रसन्न हुए। मेरा मानना था कि दुनिया तो कहती रहेगी, लेकिन मुझे अपनी धुन पर चलते रहना है। आचार्य श्री तुलसी के आशीर्वाद से

मैं सदैव ऊर्जावान बना रहा। इसी का परिणाम था कि अणुव्रत आंदोलन के कार्यों के सिलसिले में आचार्य तुलसी के पास कोई आता तो आचार्य श्री उससे कहते कि नाहर जी से मिल आओ, वह मर्द आदमी है।

मैंने अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए स्कूलों में बहुत काम किया। उन्हें बताया कि अणुव्रत महाव्रत की सीढ़ियां हैं। अणुव्रत महासमिति की ओर से चुनाव शुद्धि अभियान के अंतर्गत 'अणुव्रत चुनाव रथ' की परिकल्पना की गयी। मेरे पुत्र अविनाश नाहर ने अपनी सूझ-बूझ से मारुति वैन को 'अणुव्रत चुनाव रथ' का आकार दिया। इस रथ पर अणुव्रत आचार संहिता के अतिरिक्त चुनाव शुद्धि अभियान से जुड़ी सामग्री को आकर्षक रूप से प्रदर्शित किया गया, जिसे देखते ही दर्शकों के मन में चुनाव प्रक्रिया को स्वच्छ करने के भाव अंकुरित होते थे। मैंने इस रथ के साथ पूरे राजस्थान में घूमकर चुनाव शुद्धि अभियान चलाया तथा चुनाव के दौरान शुचिता के प्रति लोगों को जागरूक किया। गाँवों के प्रवेश द्वार पर और स्कूलों में अणुव्रत के बोर्ड लगाये।

सिंचाई विभाग में काम करते हुए मैंने विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अणुव्रत जीवनशैली के बारे में बताया। इससे अनेक प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारी नशामुक्त हुए एवं अणुव्रत जीवनशैली के अनुरूप अपना जीवन परिवर्तित किया।

मैंने वर्ष 2005 एवं उसके बाद अहिंसा यात्रा के दौरान अलग से एक जीप का उपयोग करते हुए जन-जन में अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु विशेषकर विद्यार्थी अणुव्रत, जीवन विज्ञान को घर-घर पहुँचाने के लिए चित्रयुक्त आकर्षक बुकलेट एवं विद्यार्थी अणुव्रत के बोर्ड का निःशुल्क वितरण किया। इससे लोग बहुत प्रभावित होते थे अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने का संकल्प लेते थे।

शराबबंदी एवं नशामुक्ति के लिए विभिन्न संस्थाओं के साथ क्रमिक उपवास, धरना, रैली, हस्ताक्षर अभियान आदि कार्यक्रमों में मैंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए मुझे अणुव्रत सेवी, अणुव्रत प्रवक्ता, प्रवक्ता उपासक, श्रद्धानिष्ठ श्रावक, अणुव्रत गौरव समेत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया। ■■■

75 1949 - 2024 अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन का गौरवशाली 75वां वर्ष

अणुव्रत

अमृत महोत्सव

नयी दिशा में प्रस्थान

भेद हमारी उपयोगिता है। बाँटना, विभक्त करना सुविधा है। इस उपयोगिता और सुविधा को हमने वास्तविक मान लिया और उसके आधार पर मानव जाति को टुकड़ों में बाँट दिया। जाति और रंगभेद के आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच घृणा की एक दीवार खड़ी हो गयी। हीनता और उच्चता का एक अभेद्य किला बन गया। यह कहना अतिप्रसंग नहीं होगा कि हीनता और अहं की ग्रन्थि सहज ही होती है। जातिवाद और रंगवाद इन दोनों ग्रन्थियों को खुलकर खेलने का मौका दे रहा है।

मनुष्य जाति का एक बहुत बड़ा भाग हीनता की ग्रन्थि से ग्रस्त है तो दूसरा भाग अहं की ग्रन्थि से रुग्ण है। क्या जातिवाद को समाप्त नहीं किया जा सकता? जाति काल्पनिक है। उसे समाप्त करने की बात सोच भी लें, पर रंगभेद एक यथार्थ है, कोरी कल्पना नहीं है। उसकी समाप्ति होने पर भी हिंसा की समस्या सुलझेगी नहीं। इसलिए मैं सोचता हूँ कि अहिंसा की दिशा में हमारी यात्रा भीतर से शुरू हो। जातिभेद और रंगभेद के होने पर भी हिंसा न भड़के, घृणा को अपना पंजा फैलाने का अवसर न मिले, ऐसा कुछ सोचना है और वह भीतरी यात्रा से ही सम्भव है।

मैं अहिंसा की अन्तर्यात्रा में विश्वास करता हूँ। हम मनुष्य-मनुष्य के बीच प्रेम का इतना सशक्त वातावरण बनाएं कि उसमें घृणा को जन्म लेने का मौका ही न मिले। इतिहास साक्षी है कि समाज की धरती पर जितने घृणा के बीज बोये गये, उतने प्रेम के बीज नहीं बोये गये। यदि आज हम इस ऐतिहासिक यथार्थ को बदलने की दिशा मे चलें तो हमारा नयी दिशा में प्रस्थान होगा।

अणुव्रत युग की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान है। इसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और नैतिक - सभी क्रान्तियों का फलित विद्यमान है। जो व्यक्ति अणुव्रती बनता है, वह आदर्श समाज की नींव का एक मजबूत पत्थर बनता है। जिस दिन वह नींव भर जाएगी, स्वस्थ समाज की संरचना के लिए एक ठोस धरातल उपलब्ध हो जाएगा।

आज देश जिस स्थिति से गुजर रहा है, अत्राण और असुरक्षा का भाव जन-जन में व्याप्त हो रहा है। ऐसे समय में त्राण और सुरक्षा का आश्वासन अणुव्रत के पास है। यदि राष्ट्र के अधिनेता और जनता सब मिलकर साथ-साथ अणुव्रत के पथ पर चलें तो एक बड़ा काम हो सकता है।

-आचार्य तुलसी

नैतिक क्रांति की आचार संहिता

डॉ. भोपालचंद लोढ़ा

अणुव्रत जीवनशैली के प्रति आस्थाशील लेखक अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष रहे हैं। डॉ. लोढ़ा ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में विशिष्ट सेवाएँ दी हैं।

आचार्य तुलसी का चिन्तन था कि धर्म व उपासना मानव की आत्मशुद्धि, स्वर्ग या मोक्ष प्राप्ति के मार्ग हो सकते हैं, लेकिन धर्म आधारित नैतिक मूल्यों को धारने से स्वयं व्यक्ति का, उसके समाज व राष्ट्र का कल्याण होगा, उत्थान होगा।

क्या कोई धर्माचार्य साम्प्रदायिक कट्टरवाद एवं परम्परागत क्रियाकाण्ड के युग में अपने धर्म की मर्यादाओं का पालन करते हुए व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र सुधार का कोई सर्व-स्वीकार्य क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन खड़ा कर सकता है? हां, ऐसा 20वीं सदी के मसीहा महान दार्शनिक आचार्य तुलसी ने सम्प्रदाय विहीन अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन कर संभव किया है।

इस अद्भुत मेधा के धनी शिखर-पुरुष ने अनुभव किया कि विभिन्न धर्माचार्यों ने अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार उपासना के माध्यम से स्वर्ग, मोक्ष या जन्नत जैसी परलोक की उपलब्धियां प्राप्त करने का रास्ता प्रस्तावित किया। कालान्तर में परलोक के लिए उपासना व क्रियाकाण्ड का क्रम बढ़ता गया, लेकिन दैनिक जीवन में, व्यवहार में नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहन नहीं मिला।

दूसरों का शोषण किये बिना, क्रूर व्यवहार किये बिना किसी प्रकार का अनैतिक आचरण किये बिना आजीविका अर्जित हो, ऐसे मूल्यों पर ध्यान नहीं के बराबर रहा। नतीजतन धर्म के अनुयायी नैतिक हुए बिना ही धार्मिक कहलाने लगे।

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत की चर्चा धार्मिक स्थलों, शिक्षण संस्थानों, सामाजिक-व्यापारिक संस्थानों, यहाँ तक कि भारतीय संसद तक पहुँचायी।

आचार्य तुलसी का चिन्तन था कि धर्म व उपासना मानव की आत्मशुद्धि, स्वर्ग या मोक्ष प्राप्ति के मार्ग हो सकते हैं, लेकिन धर्म आधारित नैतिक मूल्यों को धारने से स्वयं व्यक्ति का, उसके समाज व राष्ट्र का कल्याण होगा, उत्थान होगा। उनका ध्येय वाक्य था - "सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।" उनकी दृष्टि थी कि उपासना व्यक्तिगत है, उसका मूल्य भी व्यक्तिगत है। व्यक्ति की उपासना का समाज से कोई सरोकार नहीं, कोई टकराव भी नहीं, पर उसकी नैतिकता या अनैतिकता का समाज - राष्ट्र - विश्व से संबंध है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अनैतिकता सामाजिक बुराई है और धर्माचार के प्रतिकूल भी, पर नैतिकता व्यक्तिगत ही नहीं, सामाजिक अच्छाई भी है और धर्माचार के भी अनुकूल है। व्यक्ति अगर अपने कार्यक्षेत्र में अनैतिक है, तो वह धर्म-क्षेत्र में भी शुद्ध धार्मिक कैसे रह सकता है? धर्म का महत्वपूर्ण, अनिवार्य व प्रथम चरण ही नैतिकता है। आचार्य श्री का

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

यह मानना था कि नैतिक मूल्यों का संबंध वर्तमान व भविष्य - दोनों कालों से है। उन्होंने कहा कि धर्म का महत्वपूर्ण उद्देश्य है सबसे पहले मानव को नैतिक बनाना।

वे आगे बढ़े व गहन चिन्तन कर एक आचार संहिता देश के सामने रखी। इस आचार संहिता का आधार था - "संयम: खलु जीवनम्" अर्थात् संयम ही जीवन है। इन नैतिक व संयम के नियमों को उन्होंने 'अणुव्रत' व उसके प्रसार को 'अणुव्रत आन्दोलन' नाम दिया। यह आचार संहिता जैन सिद्धान्त के अनुरूप तो थी, लेकिन सांप्रदायिक नहीं। उनका विश्वास था कि अणु जैसे इन छोटे-छोटे नैतिक मूल्यों को व्यक्ति समझकर इन्हें मन से स्वीकार करे तो उसका स्वयं का ही नहीं, समाज व देश का भी सुधार होगा एवं जीवन अधिक प्रामाणिक होगा।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की चर्चा मन्दिरों, गुरुद्वारों, मस्जिदों, चर्चों, बौद्ध मठों आदि धार्मिक स्थलों, शिक्षण संस्थानों, सामाजिक-व्यापारिक संस्थानों, पुलिस, सेना, जेल, यहां तक कि भारतीय संसद तक पहुँचायी। इसकी गूँज सुदूर तक फैली। देश-विदेश के मीडिया में इसकी चर्चा हुई। अमेरिका की प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका 'टाइम' ने भी इस पर सकारात्मक विचार छापे (15 मई, 1950)। इससे राष्ट्रपति श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में आचार्य श्री तुलसी को उन 16 व्यक्तियों की सूची में शामिल किया, जो कुछ विशेष करने लिए जीये।

निश्चय ही सामाजिक रूपांतरण का कार्य गति से बह रहे पानी के बहाव के विरुद्ध चलने के समान होता है। नैतिक आचरण पालने के लिए लोगों को उत्साही करने की कोशिश अनवरत चलती रहनी चाहिए। अणुव्रत आज भी प्रासंगिक है और इसके प्रचार-प्रसार के लिए न केवल पुरजोर कोशिश वरन् आन्दोलन की नैतिक क्रांति होनी चाहिए। खुशी इस बात की है कि इस आन्दोलन के 75 वर्ष पूरे होने के करीब हैं एवं इस समय इसे अमृत महोत्सव वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। मैं इसके सफल होने की कामना करता हूँ।

मैंने 1978 में अणुव्रत स्वीकार किया था। हालाँकि इससे पहले भी मेरे जीवन में मैंने कोई ऐसा कार्य नहीं किया, जो अणुव्रत के नियमों के विरुद्ध हो, पर नियम लेने के बाद इन आदर्शों के प्रति ज्यादा जागरुकता रही और श्रद्धा अधिक मजबूत हुई। ■■■

शिक्षा का नया आयाम

मनुष्य कुछ भी करे उससे पहले दो क्षण आँखें बन्द कर सोचे- मैं मनुष्य हूँ। मनुष्यता की सतत स्मृति रहेगी तो वह भी सोच सकेगा- मैं पशु नहीं हूँ, मैं राक्षस नहीं हूँ, मैं दानव नहीं हूँ, मैं क्रूर नहीं हूँ, मैं हत्यारा नहीं हूँ, मैं नशाखोर नहीं हूँ। नेति नेति की इस भाषा से मनुष्य में हीनता के भाव आ सकते हैं। उनसे बचने के लिए उसे सोचना है- मैं संवेदनशील हूँ, मैं करुणाशील हूँ, मैं प्रामाणिक हूँ, मैं सत्यनिष्ठ हूँ, मैं व्यसनमुक्त हूँ, मैं आवेशमुक्त हूँ और मैं जागरूक हूँ। चिन्तन की इस पवित्र धारा में निष्णात रहने वाला मनुष्य कुछ भी करेगा तो मनुष्यता को नहीं भूलेगा, अपने जीवन को विकृत नहीं होने देगा। यही है शिक्षा का नया आयाम, जो मनुष्य को और कुछ बनाने से पहले सही रूप में मनुष्य बनाता है।

-आचार्य तुलसी

अणुव्रत ने मुझे राष्ट्रीय पहचान दी

डॉ. हीरालाल श्रीमाली

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित लेखक अणुव्रत के जुझारू कार्यकर्ता रहे हैं। अणुव्रत शिक्षक संसद के राष्ट्रीय संयोजक के रूप में आपने देशभर में विद्यार्थियों और शिक्षकों को अणुव्रत से जोड़ने का व्यापक कार्य किया है।

आचार्य श्री तुलसी की दृष्टि पाकर राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के नाम से अणुविभा के एक नये प्रकल्प ने जन्म लिया। प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अधिवेशनों में देशभर से हजारों शिक्षकों ने अणुव्रत अनुशास्ता के दर्शन कर अणुव्रत के मर्म को समझा और इस आंदोलन से जुड़े।

27 अप्रैल 1990 को मैंने अणुव्रत विश्व भारती के संस्थापक आदरणीय मोहन भाई के साथ जोरावर में परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी के दर्शन किये। दर्शन करते समय पूज्यवर ने फरमाया - "मोहन जी, इनको पकड़ लो, छोड़ना नहीं।" 15 मई 1990 को मैंने अणुविभा में कार्यकर्ता के रूप में पूज्य मोहन भाई के साथ कार्य प्रारंभ किया।

कार्ययोजना बनी एवं पूज्य मुनि सुखलाल जी की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं स्नेह ने आचार्य श्री तुलसी की दृष्टि पाकर राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के नाम से अणुविभा के एक नये प्रकल्प ने जन्म लिया। सन् 1990 दिसंबर में अणुव्रत शिक्षक संसद पहला अधिवेशन राणावास में आहूत हुआ। अधिवेशन का दायित्व एसपी गौतम साहब, जगमोहन जी व मुझे मिला।

अधिवेशन के उपरांत आचार्य प्रवर ने मुझे इस प्रकल्प का राष्ट्रीय संयोजक मनोनीत कराया। मैंने पूर्ण उत्साह से शिक्षक मित्रों से सम्पर्क करना प्रारंभ कर दिया। प्रतिवर्ष राष्ट्रीय अधिवेशनों में देशभर से हजारों शिक्षकों ने अणुव्रत अनुशास्ता के व्यक्तिश: दर्शन कर अणुव्रत के मर्म को समझा और इस आंदोलन के साथ जुड़े।

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के माध्यम से शिक्षक और छात्र सांसद बनाने, व्यसन मुक्ति और अहिंसा संकल्प पत्र भरवाने, अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने जैसे कार्य किये गये।

अणुव्रत के दर्शन ने मेरे जीवन को गहरे से प्रभावित किया। मैंने जीवन में अणुव्रत स्वीकार कर संकल्प किया कि

1. मैं आहार में तीन व्यंजन से बना भोजन ही करूँगा,
2. वाणी में कटुता नहीं आने दूँगा,
3. अर्थ का संयम रख संग्रह नहीं करूँगा
4. मैं कष्ट पा लूँगा, पर दूसरों को कष्ट नहीं दूँगा।

इन संकल्पों ने मुझे समर्पित भाव से कार्य करने की अतुल्य शक्ति दी और राष्ट्रीय संयोजक के रूप में मैंने पूरे राष्ट्र में आठ लाख किलोमीटर की यात्रा करने के साथ ही संगोष्ठियां, अधिवेशन एवं जनसंपर्क कर जन-जन में अणुव्रत का प्रचार-प्रसार किया, प्रयोगों की जानकारी दी और अणुव्रत के प्रति भावना जगायी। कई महानुभावों ने अणुव्रत स्वीकार किया। कई ने वर्गीय अणुव्रत स्वीकारे। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा किये जा रहे जनहितकारी तथा लोक कल्याणकारी कार्य से लोक संत तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ तथा आचार्य महाश्रमण की ख्याति देश के कोने-कोने में फैली। लोगों ने कहा- राजस्थान में बैठा एक महान संत सारे देश में जनता को लाभान्वित कर रहा है।

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के माध्यम से शिक्षक और छात्र सांसद बनाने, शिक्षक व छात्र सांसदों के अधिवेशन आयोजित करने, व्यसनमुक्ति संकल्प पत्र भरवाने, अहिंसा संकल्प पत्र भरवाने, अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य देश के विभिन्न हिस्सों में किये गये। इन प्रवृत्तियों से लाखों छात्र, अध्यापक एवं अभिभावक लाभान्वित हुए।

इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देने तथा उत्साह एवं जागरुकता बनाये रखने में परम पूज्य अणुव्रत प्रवर्तक संत तुलसी, प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ तथा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण, श्रद्धेय मुनि सुखलाल जी के वरदहस्त आशीर्वाद ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री मोतीभाई एच. रांका (कोयंबटूर), श्री उत्तमचंद जी सेठिया (जयपुर), श्री भीकम चंद जी नखत (हैदराबाद), श्री धनराज जी बैद (दिल्ली), डॉ. सोहनलाल गांधी (जयपुर), श्री तेजकरण जी सुराणा (दिल्ली), श्री उत्तम चंद जी पगारिया (कोल्हापुर), श्री तनसुख जी बैद (पटना), श्री देवेंद्र जी कर्णावट (राजसमंद), श्री पृथ्वीराज जी कच्छावा (मुंबई) का महत्वपूर्ण योगदान सदैव मेरी ताकत रहा। आदरणीय श्री मोहनभाई जैन और आदरणीय श्री संचय जी जैन का मुझे पग-पग पर सहयोग व मार्गदर्शन मिला। इस प्रवृत्ति के संचालन में अणुव्रत प्रेमी दानदाताओं का भी बहुत सहयोग रहा।

इस महत्वपूर्ण कार्ययोजना का व्यापक स्वरूप देख अणुव्रत आंदोलन का महत्वपूर्ण अणुव्रत पुरस्कार वर्ष 2000 में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद को मिला। मुझे भी आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान प्रदान किया गया। अणुव्रत आंदोलन से अपने जुड़ाव को मैं अपने जीवन का स्वर्णिम सौभाग्य मानता हूँ। इसने मुझे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान तो दी ही मेरे जीवन में भी सकारात्मकता और सार्थकता को जीवंत बना दिया। जय अणुव्रत। ■■■

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

अहिंसा का आचरण

विश्व में हुए गत दो महायुद्धों और शस्त्रों की स्पर्धा ने मानव समाज को अपने भविष्य की ओर से सशंकित कर दिया है। अणुबमों का निर्माण और वैसे अस्त्र-शस्त्रों के लिए विश्व में चल रही प्रतियोगिता यदि ऐसे ही चलती रही तो मानव जाति अपने अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर लेगी। आखिर इन अस्त्र-शस्त्रों की तैयारी का कारण क्या है? हालांकि सुरक्षा और शान्ति के लिए इनके निर्माण की बात कही जाती है, पर असलियत कुछ और ही है। गहराई में जाने पर स्पष्ट होता है कि उनके निर्माण के पीछे बड़ा बनने और सब पर प्रभुत्व जमाने का व्यामोह है। पर शस्त्र निर्माण के परिणाम कभी सुखद नहीं हो सकते। मानव-समाज उसके परिणामों को भुगत चुका है। उसकी अन्तरात्मा रो रही है। वह देखता है युद्धों द्वारा होने वाला विध्वंस और मानवजाति का विनाश। इतनी बड़ी कीमत चुकाने पर भी अशान्ति! यह स्थिति उनके निर्माताओं और राष्ट्रों के नेतृवर्ग को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि युद्धों और शस्त्रास्त्रों के निर्माण से शान्ति नहीं होगी। अहिंसा क्या कर सकती है? हिंसा से कितना विनाश हो सकता है? - इन दो प्रश्नों में से दूसरे प्रश्न का उत्तर तो मिल ही चुका है। अब केवल पहला प्रश्न बचा है, जिसका विशेष रूप से उत्तर माँगा जा रहा है।

-आचार्य तुलसी

नैतिकता : अणुव्रत का प्राण

प्रेमसिंह चौधरी

बाल्य काल से ही अणुव्रत दर्शन के प्रति आकर्षित रहे लेखक इफ्को के मंडल प्रबंधक पद से सेवानिवृत्ति के बाद अणुव्रत दर्शन के प्रति पूर्णतया समर्पित हो गये। श्री चौधरी अणुव्रत महासमिति के महामंत्री भी रहे हैं।

अणुव्रत आंदोलन का प्राण-तत्त्व नैतिकता है। अणुव्रत आंदोलन का लक्ष्य है नैतिकता के आधार पर भारत के जन-मानस को अधिक ऊँचा उठाना और समाज की रुग्णता को समाप्त करना।

भारत की स्वतंत्रता के तत्काल बाद जरूरत थी सारी शक्ति को नये सिरे से एकत्रित करना। आचार्य तुलसी उस समय के लिए एक उपयुक्त आंदोलनकर्ता के रूप में राष्ट्रीय परिदृश्य पर उपस्थित हुए। आदर्श में अटल विश्वास के साथ 1 मार्च 1949 को सरदारशहर (राजस्थान) की धरती से अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात हुआ। गुरुदेव को इस बात का ध्यान था कि बिना किसी प्रतिमान के कोई सुधार करना पेचीदा होने के अलावा खतरनाक भी हो सकता है। अतः अणुव्रत आंदोलन के नियम और कार्यविधि का पूर्ण विवेक के साथ निर्माण हुआ।

भारतीय समाज और राष्ट्रीय व्यवस्था के बीच एक व्यावहारिक तालमेल उत्पन्न करना था। आचार्य श्री की प्रतिष्ठा देश में एक धर्माचार्य के रूप में थी। इस छवि के रहते आंदोलन को जन आंदोलन बनाना एक हिमालय जैसी चुनौती थी। विभिन्न जाति, धर्म, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिमान, राजनीतिक व्यवस्था के बीच सामंजस्य के साथ अणुव्रत को ग्रहण योग्य बनाना था। आचार्य श्री की प्रज्ञा, धैर्य, निपुणता, दूरदर्शिता ने इस आग में कठिन उपादानों को गलाकर नैतिक आंदोलन को देश में चलाने के लिए सामग्री तैयार कर दी। देश के कल्याण का सर्व व्यापक

नैतिकता न केवल अनेक मूल्यों में से एक मूल्य है, बल्कि वह दूसरे सब मूल्यों की आधार भित्ति है। बिना नैतिक मूल्यों के जीना मानवता का अपमान है।

पक्ष हमारे सामने स्पष्ट कर दिया। इससे ईर्ष्यालु, शंकालु जगत के लोगों ने निर्विवाद रूप से उनकी नयी छवि को स्वीकार किया। मतभेदों को भुलाकर सहयोगी बने। राष्ट्र के संचालकों ने इसकी उपयोगिता को स्वीकार किया। नैतिकता के बारे में यह कहा जाता है कि धर्म के बिना इसका अस्तित्व असंभव है, किंतु इतिहास स्वयं इस कथन का खंडन करता है। कन्फ्यूशियसवाद की मान्यताओं और वर्जनाओं की पद्धति किसी प्रकार के धार्मिक आधार से नहीं जुड़ी हुई थी।

अणुव्रत आंदोलन का लक्ष्य है नैतिकता के आधार पर भारत के जन-मानस को अधिक ऊँचा उठाना और समाज की रुग्णता को समाप्त करना। आचार्य श्री ने मुख्य बिन्दुओं की पहचान कर आंदोलन का बल्यूप्रिंट तैयार किया। वे जो कहते थे, वह स्वयं उनका अनुभूत सत्य होता था और वह सत्य जीवन में चरितार्थ भी होता था। जीवन में आचरित होता था। वे बहुत महान हैं जो कि

75
1949 · 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन का
गौरवशाली 75वां वर्ष
अणुव्रत
अमृत महोत्सव

सत्य का अनुभव और सत्य के अनुसार आचरण करते हैं। परंतु उससे भी बड़ा सिद्ध वह होता है, जो सत्य का अनुभव करता है, सत्या का आचरण करता है और उससे ऐसी ज्योति निकलती है कि समाज में हजारों आदमी उस सत्य पर चलते हैं। तब जाकर सत्य हित बनता है। जब तक कि सत्य हित नहीं बनता, तब तक वह व्यक्तिगत सत्य होता है। जब कोई महात्मा सत्य का आचरण करता है, हम उसका आदर करते हैं। लेकिन आचरण करने के बाद उसमें स्वयं में इतनी ज्योति आ जाये कि वह इससे दूसरों को प्रकाश दे, दूसरों को गलत रास्ते से निवृत्त करे, तो वह बड़ा महात्मा होता है। आचार्य श्री अपनी तपस्या और अर्जित प्रतिभा से इन योग्यताओं से परिपूर्ण थे।

अणुव्रत आंदोलन का प्राण-तत्त्व नैतिकता है। नैतिकता समाज के संचालन का आधार रहा है किन्तु इस प्रमुख मानवीय मूल्य से लोग विमुख होते जा रहे हैं। मूल्य हमेशा रहे हैं, वे मानव की एक अनिवार्य आवश्यकता हैं। मनुष्य उनकी सृष्टि भी करता है फिर उन्हीं के सहारे जीता भी है। मानव के रचे हुए और मानव-निर्मित होकर भी मानव मात्र से बड़े मूल्यों में एक मूल्य नैतिकता है। नैतिकता न केवल अनेक मूल्यों में से एक मूल्य है, बल्कि वह दूसरे सब मूल्यों की आधार भित्ति है। बिना नैतिक मूल्यों के जीना मानवता का अपमान है।

देश का उद्धार समस्त देश के लोगों द्वारा होना चाहिए। अणुव्रत ने जन-आंदोलन का स्थान प्राप्त किया, इसीलिए आंदोलन के अमृत महोत्सव का महान योग बना। अणुव्रत यात्राओं एवं अन्य कार्यक्रमों में विद्यार्थी, युवा, ग्रामीण एवं अन्य नागरिकों ने नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। आंदोलन गतिमान है, आचार्य श्री के नेतृत्व में कार्यकर्ता निष्ठा के साथ प्रयासरत हैं। केवल राजनैतिक या आर्थिक योग सम्पूर्ण नहीं है। सभी शक्तियों का योग आवश्यक है।

आचार्य श्री तुलसी ने अपने दीर्घ चिन्तन, साधना, त्याग आदि के आधार पर जिस कार्यविधि व नियमों (आचार संहिता) का निर्माण किया, उनमें पारस्परिक सांमजस्य व समग्रता है। अमृत महोत्सव में अणुव्रत आंदोलन की समीक्षा और अध्ययन के संग नये विचार पर गहन चर्चा जरूरी है।

आंदोलन के एकदम शुरुआती दिनों में देश भर में कतिपय श्रावकों ने 84 नियमों के अणुव्रत की पालना का संकल्प लिया। मेरे दादाजी भी व्रतधारी बने। स्कूली बालक के रूप में अणुव्रत नाम से मैं परिचित हुआ। गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त हुआ तो उनके नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रमों, विमर्शों में भागीदारी बढ़ी। परिणामतः अन्तर्स्वर के आदेश से कार्यकर्ता के उत्तरदायित्व-बोध का निर्माण हुआ। आत्मसंयम की ओर कदम बढ़े और नयी जीवनशैली बनी।

मैं लंबे समय से आन्दोलन से संबद्धता रखे हुए हूँ। मैंने कार्यकर्ता के रूप में अणुव्रत को अपनाकर नैतिकता की गरिमा को स्वीकार किया है। आचार्य श्री तुलसी की कार्य-पद्धति उदात्त मनोभावों से परिपूर्ण रही है। उनके आह्वान पर विभिन्न क्षेत्र के लोग अणुव्रत आंदोलन में सम्मिलित हुए। आज भी परस्पर सम्मान के साथ कार्यरत हैं। सृष्टि -कार्य में कई भिन्न-भिन्न तत्त्व गतिशील होते हैं, आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में संपादित होने वाले अनेक कार्यक्रमों में इन तत्त्वों की सांमजस्मता आंदोलन को अग्रसर करेगी।

गांधीजी का यह कथन विचारणीय है - "मैंने ऐसे संगठनों को जो निजी चरित्र को महत्व नहीं देते, इसके गंभीर परिणामों को भुगतते देखा है। मेरी निश्चित धारणा है कि कोई अच्छी संस्था समर्थन के अभाव के कारण कभी समाप्त नहीं होती। जो संस्थाएं समाप्त हुई हैं, वे या तो इसलिए कि जनता की प्रशंसा अर्जित करने योग्य कुछ था ही नहीं या इसलिए कि उसके संचालकों की आस्था चूक गयी थी। इसलिए मैं ऐसी संस्थाओं के संचालकों से आग्रह करूँगा कि वे सामान्यतः व्याप्त निराशा के कारण धीरज न छोड़ें । यह अच्छी संस्थाओं की परीक्षा की घड़ी है।" ■■■

व्यक्ति का चेहरा सुन्दर हो या न हो,
जीवन सुन्दर होना चाहिए।
आन्तरिक सौंदर्य चेहरे की कुरूपता को भी ढक देता है।
आन्तरिक सौंदर्य का सच्चा आभूषण त्याग है।
- आचार्य तुलसी

With Best Compliments from :-

H.M. Sethia

Manoj Sethia

K.J. SETHIA & CO.

FOOD GRAINS, POTATO, ONION MERCHANTS
& COMMISSION AGENT

H.B. ROAD, FANCY BAZAR, GUWAHATI-781001 (ASSAM)
M : 94351 12343, 98640 21444 ❖ PH : 0361-2543362, 2543465

गौरवशाली
अतीत के झरोखे से...

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"।

75

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत पर चिन्तन

वि. सं. 2018 में आचार्य श्री तुलसी की धर्मशासना के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर चतुर्विध धर्मसंघ की ओर से 'रजत-जयंती' मनाने का चिन्तन सामने आया। आचार्य तुलसी ने उसे महत्व नहीं दिया, किन्तु समाज में ऐसा वातावरण बन गया कि लोगों की श्रद्धा, उत्साह और भावना को रोकना असम्भव-सा लगने लगा। निर्णीत हुआ कि इस अवसर को 'धवल समारोह' के रूप में मनाया जाएगा।

18 सितम्बर 1961, भाद्रपद शुक्ल पक्ष नवमी का दिन। मध्याह्न का समय। महनोत भवन का प्रवचन पण्डाल। लगभग सात हजार लोगों की उपस्थिति। मुनि नथमलजी ने शब्दचित्र के माध्यम से आचार्य श्री के जीवन के सैंतालीस वर्षों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर कविता-पाठ किया। 'हम सब तुम्हारे साथ हैं'- कविता के इन बोलों ने जनता को मुग्ध कर दिया। मातुश्री वदनांजी ने अपनी सीधी-सादी मारवाड़ी भाषा में अपने पुत्र आचार्य तुलसी को आशीर्वाद देते हुए कहा- "आप घणां काल तांई चिरंजीवी रहो। आप इंयालको मोको मनै दिरायो, मैं जुग जुग तक आभारी हूँ। म्हारी आ ही प्रार्थना है कि समय-समय पर और भी इंयालकां मौका मनै दिराइज्यो। आप फळो-फूलो, शासण री वृद्धि करो और जनता रो कल्याण करो।" मातुश्री की सहज भावाभिव्यक्ति ने वहां उपस्थित जनसमूह को भावविभोर बना दिया।

साध्वीप्रमुखा लाडांजी के नेतृत्व में साध्वियों ने गीत का संगान किया, जो काफी प्रभावी रहा। तेरापंथ समाज की ओर से महासभा के अध्यक्ष जबरमलजी भण्डारी ने अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। पंजाब के सिंचाई एवं विद्युत मंत्री सरदार ज्ञानसिंह राडेवाला, अणुव्रत समिति, कानपुर के अध्यक्ष श्री गिलूमल बजाज आदि ने श्रद्धा समर्पित की। आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन के संचालक श्री रामलाल पुरी ने उस अवसर पर विशेष रूप से प्रकाशित चौबीस पुस्तकों का सेट भेंट किया। सब लोग आचार्य तुलसी को सुनने के लिए उत्कर्ण हो रहे थे।

आचार्य श्री ने कहा- " मैंने अब तक जो कुछ किया है, उससे अधिक करूं। अब तक जनता को जो कुछ दिया है, उससे अधिक दूं। मेरी संकल्प शक्ति बढ़े। मेरा जीवन अपने लिए तथा गण, राष्ट्र और समूचे विश्व के लिए हितकर हो, यही मंगलकामना है।"

आचार्य श्री ने कहा- "मैंने अब तक जो कुछ किया है, उससे अधिक करूं। अब तक जनता को जो कुछ दिया है, उससे अधिक दूं। मेरी संकल्प शक्ति बढ़े। मेरा जीवन अपने लिए तथा गण, राष्ट्र और समूचे विश्व के लिए हितकर हो, यही मंगलकामना है।"

19 सितम्बर को प्रात:कालीन कार्यक्रम में साहित्य और साहित्यकारों की प्रमुखता थी। साहित्य जगत के प्रमुख लेखक श्री रामनाथ 'सुमन' ने मार्मिक वक्तव्य दिया। उत्तर प्रदेश से समागत साम्यवादी लेखक श्री यशपाल ने अपने वक्तव्य में कहा- "मैं उपन्यास लिखता हूँ, इसलिए आज आपको वही समर्पित करता हूँ। मैं कामना करता हूँ कि आपके अगले पच्चीस वर्ष समाज को एक नया मोड़ देंगे।" कामरेड यशपाल ने अपना 'झूठा सच' उपन्यास भेंट किया। उन्होंने वह उपन्यास आचार्य तुलसी के नाम से समर्पित किया था।

20 सितम्बर के कार्यक्रम में विशेष रूप से शिक्षा संस्थानों की संभागिता रही। अनेक क्षेत्रों के विद्यालयों से समागत विद्यार्थियों ने अणुव्रत के अनुसार जीवन जीने का संकल्प व्यक्त किया। दिल्ली केन्द्रीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री गोपीनाथ 'अमन' ने भारत के नैतिक पुनरुत्थान का काम करने के लिए आचार्य श्री को दिल्ली यात्रा का आमंत्रण दिया।

योजना आयोग के प्रमुख श्रीमन्नारायण अग्रवाल प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरूजी के निकटस्थ व्यक्तियों में से एक थे। व्यक्तिगत वार्तालाप के समय उन्होंने आचार्य तुलसी को अणुव्रत के बारे में सुझाव देते हुए कहा- "इस बार की पंचवर्षीय योजना में नैतिक और चारित्रिक वातावरण पर काफी बल दिया गया है। अणुव्रती कार्यकर्ताओं को मद्यनिषेध का काम विशेष रूप से हाथ में लेना चाहिए। आपकी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वाला एक पाक्षिक पत्र प्रकाशित हो, यह बहुत आवश्यक है। उसके माध्यम से हम वहां बैठे-बैठे प्रचार-कार्य में सहयोगी बन सकते हैं।"

केन्द्रीय विद्युत व सिंचाई मंत्री श्री जयसुखलाल हाथी वर्षों से आचार्य तुलसी के सम्पर्क में थे। वे अणुव्रती थे। वर्षों तक अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रहे। उनकी नीति-निष्ठा और प्रामाणिकता की जनता पर अच्छी छाप थी। वे समय-समय पर आते, कार्यक्रम में सम्मिलित होते और अणुव्रत के कार्यों में अपनी शक्ति लगाने की भावना व्यक्त करते। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा- "भारत में नैतिकता की ज्योति प्रज्वलित करने के लिए आचार्यजी ने अभियान-यात्राएं कीं। देश के सामने अणुव्रत का प्रभाव उजागर हुआ। थोड़े-से समय में जो काम हुआ है, वह सफलता का सूचक है। अणुव्रत का ध्येय है धर्म को व्यवहार में रूपायित करना।"

'धवल समारोह' के प्रथम चरण में चतुर्दिवसीय कार्यक्रम की सम्पन्नता के अवसर पर आचार्य श्री ने मानवीय मूल्यों की दिशा में सामूहिक प्रस्थान की दृष्टि से तीन संकल्प निर्धारित किये -

- जातीय तथा भाषावाद की दृष्टि से घृणा नहीं फैलाना।
- दहेज नहीं लेना।
- प्रतिदिन कम से कम पन्द्रह मिनट चिन्तन व स्वाध्याय करना।

इन संकल्पों की स्वीकृति के लिए पूरे देश में वातावरण बनाया गया। साधु-साध्वियों की प्रेरणा से हजारों-हजारों लोग संकल्पित हुए।

> आचार्य श्री ने 'धवल समारोह' के प्रथम चरण में तीन संकल्प निर्धारित किये - जातीय तथा भाषावाद की दृष्टि से घृणा नहीं फैलाना, दहेज नहीं लेना और प्रतिदिन कम से कम पन्द्रह मिनट चिन्तन व स्वाध्याय करना।

धवल समारोह : द्वितीय चरण

1 मार्च 1962 का दिन, (वि. सं. 2018, फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी) मध्याह्न का समय। चोपड़ा हाई स्कूल का विशाल प्रांगण। मंच के सामने सैकड़ों साधु-साध्वियों की उपस्थिति। प्रवचन-पण्डाल में लगभग 35 हजार की जनसंख्या। आचार्य श्री तुलसी जब आयोजन स्थल पर पहुँचे तो उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन आदि विशिष्ट अतिथि पक्के मंच पर आसीन थे। उन्होंने खड़े होकर अभिवादन किया। आचार्य श्री काष्ठपट्टों से निर्मित मंच पर बैठे।

राजस्थान के वित्तमंत्री, गांधीवादी विचारक श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने राजस्थान के मुख्यमंत्री तथा 'धवल समारोह समिति' के स्वागताध्यक्ष श्री मोहनलाल सुखाड़िया की ओर से सबका स्वागत किया। उन्होंने राजस्थान की धरती पर समुद्भूत अणुव्रत आन्दोलन के बारे में प्रशंसात्मक शब्द कहे। अभिनन्दन ग्रन्थ सम्पादक मण्डल के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश बाबू ने उपराष्ट्रपति को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का अनुरोध किया। उपराष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में कहा- "मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ कि राष्ट्रसन्त का अभिनन्दन कर रहा हूँ।" उन्होंने नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठापना में अणुव्रत के योगदान की भी चर्चा की। उनका अभिभाषण अंग्रेजी में हुआ। उसका अनुवाद श्री अक्षयकुमार जैन ने हिन्दी में किया।

उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री, प्रमुख विचारक, दार्शनिक एवं लोकनेता डॉ. सम्पूर्णानन्द ने अणुव्रत के सन्दर्भ में विस्तृत चर्चा की। बीकानेर के लोकप्रिय जननायक, महाराजा श्री करणीसिंह ने कहा- "मैं आपके अणुव्रतों से प्रभावित हूँ। संसार के इस छोर से उस छोर तक आपकी आवाज पहुँचे और मानव जाति आपके धवल आलोक से अपना पथ प्रशस्त करती रहे।" 'धवल समारोह समिति' के अध्यक्ष श्री यू. एन. ढेबर ने कहा- "अणुव्रत अब कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं रहेगा। इसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए भावात्मक एकता के अभियान को बल देना है। मैं आज देश के निर्माता के रूप में आपका अभिनन्दन करता हूँ।"

सभी वक्ताओं ने अणुव्रत की महत्ता को स्वीकार किया। उनके वक्तव्य सुनकर आचार्य श्री को अनुभव हुआ कि नैतिक मूल्यों के क्षरण को रोकने के लिए अणुव्रत को अधिक शक्तिशाली बनाना होगा। इसके कार्यक्रमों को और व्यापक रूप देना होगा। देश के विशिष्ट व्यक्तियों ने इस अवसर के लिए अपने भावपूर्ण विचार प्रेषित किये थे। उनमें

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री विनोबा भावे, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, मुख्य न्यायाधीश श्री वी. पी. सिन्हा, श्री कर्वे आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आचार्य श्री ने उस अवसर पर लम्बा प्रवचन दिया। उसमें उन्होंने अपनी उपलब्धियों की चर्चा कम करके अनुभूतियों को प्रस्तुति देने का प्रयास किया। आचार्य श्री ने वक्तव्य के उपसंहार में कहा- "अणुव्रत आन्दोलन एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से हमने सम्प्रदायमुक्त धर्म की उद्घोषणा की।" आचार्य श्री ने अणुव्रत आन्दोलन के साथ और अधिक लोगों को जोड़ने की दृष्टि से 'भावात्मक एकता अभियान' चलाने का निर्णय लिया और उसकी क्रियान्विति के लिए एक प्रतिज्ञा उद्घोषित की तो साधु-साध्वियों सहित लगभग 34 हजार लोगों ने खड़े होकर उसका पुनरुच्चारण किया। कम से कम दस लाख व्यक्तियों को उस अभियान से लाभान्वित करने का संकल्प व्यक्त किया गया।

"आचार्य श्री ने वक्तव्य के उपसंहार में कहा- "अणुव्रत आन्दोलन एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से हमने सम्प्रदायमुक्त धर्म की उद्घोषणा की।" आचार्य श्री ने अणुव्रत आन्दोलन के साथ और अधिक लोगों को जोड़ने की दृष्टि से 'भावात्मक एकता अभियान' चलाने का निर्णय लिया।"

अणुव्रत के कार्य में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का सहयोग

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पहली बार सन् 1949 में जयपुर आचार्य श्री तुलसी से मिले थे। उस समय वे संविधान सभा के अध्यक्ष थे। उनके साथ प्रथम बार का मिलन आपसी सम्बन्धों को स्थायित्व देने वाला था। उसके बाद वे दिल्ली में मिले। तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू से आचार्य श्री का सम्पर्क उन्हीं के माध्यम से हुआ। अणुव्रत के कार्य में आचार्य श्री को अनेक विशिष्ट व्यक्तियों का सहयोग मिला। उनमें प्रथम पंक्ति पर राजेन्द्र बाबू का नाम रखा जा सकता है। उनके साथ आचार्य श्री का सीधा सम्बन्ध था, जो उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होता गया। आचार्य श्री की दृष्टि में वे बहुत सीधे-सादे, सच्चे, श्रमनिष्ठ, अध्यात्मनिष्ठ व सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे और वे जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने तो ऐसा लगा कि राजेन्द्र बाबू का राष्ट्रपति होना भारत की प्रतिष्ठा के अनुरूप था। उनके बाद डॉ. राधाकृष्णन राष्ट्रपति बने। वे भी विशिष्ट सांस्कृतिक और दार्शनिक व्यक्ति थे। उनके साथ भी आचार्य श्री की बहुत निकटता थी।

अणुव्रत का प्रथम प्रशिक्षण शिविर

17 अगस्त से पर्युषण पर्व का प्रारम्भ था। उसी दिन से अणुव्रती कार्यकर्ताओं का साप्ताहिक प्रशिक्षण शिविर शुरू हुआ। शिविर का उद्घाटन राजस्थान के उद्योग उपमंत्री श्री चन्दनमल बैद ने किया। श्री दीपंकर शर्मा (भूतपूर्व नगरपालिका अध्यक्ष, लाडनूं), शिविर के अध्यक्ष श्री कुन्दनमलजी सेठिया (सुजानगढ़), कवि कन्हैयालालजी सेठिया आदि के प्रेरक वक्तव्य हुए। आचार्य श्री तुलसी ने शिविरार्थियों को जीवन निर्माण की प्रेरणा दी। शिविरार्थियों को अणुव्रत दर्शन का प्रशिक्षण देने का काम मुख्य रूप से मुनि सुखलाल ने किया। उनकी निष्ठा और सक्रियता से प्रसन्न होकर आचार्य श्री ने उन्हें इक्यावन कल्याणक का पारितोषिक दिया।

शिविर के संभागी व्यक्तियों की अनुशासनबद्धता और सहिष्णुता का व्यवस्थापकों पर बहुत अच्छा प्रभाव हुआ। एक सप्ताह तक वहां का वातावरण अणुव्रतमय बन गया। अणुव्रत के इतिहास में वह अपने ढंग का प्रथम शिविर था। शिविरार्थियों की आपसी चर्चा ने भी अणुव्रत के प्रति सकारात्मक सोच का निर्माण किया। समापन कार्यक्रम में दीपंकर शर्मा का वक्तव्य बहुत जोशपूर्ण रहा। उन्होंने लाडनूं के निकटवर्ती गाँवों में अणुव्रत के माध्यम से जीवनशुद्धि कार्यक्रम चलाने की योजना प्रस्तुत की। शिविर के सभी संभागियों तथा कुछ अन्य भाइयों ने अणुव्रत तथा प्रवेशक अणुव्रत के नियम स्वीकार किये।

26 अगस्त को प्रातः प्रवचन से पूर्व आचार्य श्री जौहरी बहुउद्देश्यीय विद्यालय में गये। वहां अणुव्रत के आधार पर छात्रों के जीवन-निर्माण का उपक्रम चल रहा था। विद्यालय में विद्यार्थी की गलती होने पर आर्थिक व कायिक दण्ड नहीं दिया जाता, इसलिए वहां दण्ड समिति के स्थान पर सुधार समिति स्थापित कर दी गयी। उस समय विद्यालय में अणुव्रत सप्ताह मनाया जा रहा था। वहां अणुव्रत छात्र परिषद् का भी गठन

हो चुका था। विद्यालय का वातावरण अच्छा था। अणुव्रत सप्ताह की दृष्टि से प्रतिदिन एक घण्टा विद्यार्थी के वर्गीय नियमों पर वक्तव्य और चर्चा होती रहे, यह निर्णय लिया गया। आचार्य श्री ने संक्षिप्त प्रवचन किया। विद्यार्थियों ने वर्गीय अणुव्रत स्वीकार किये। अध्यापकों ने तीन संकल्प किये-

- मैं किसी धर्म-सम्प्रदाय या मत की निन्दा नहीं करूँगा।
- मैं विद्यालय के नियमों का स्वार्थवश उल्लंघन नहीं करूँगा।
- मैं स्वीकृत अणुव्रतों का पूर्ण रूप से पालन करूँगा तथा विद्यार्थियों के जीवन में वैसे संस्कार भरने का प्रयास करूँगा।

प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के निवास स्थान पर

सन् 1964 में अप्रैल के तीसरे सप्ताह में आचार्य श्री तुलसी दिल्ली पहुँचे। उनकी दिल्ली यात्रा का संवाद प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु तक पहुँच चुका था। वे गुलजारी लाल नन्दाजी के माध्यम से अणुव्रत का कार्य-विवरण पाते रहते थे। आचार्य श्री के दिल्ली-प्रवास का लगभग एक महीना बीतने पर प्रधानमंत्री पंडित नेहरू का एक पत्र प्राप्त हुआ। 20 अप्रैल को प्रातः साढ़े नौ बजे आचार्य श्री को प्रधानमंत्री की कोठी पर पहुँचकर वार्तालाप में संभागी बनना था। कुछ साधु-साध्वियों को साथ लेकर वे ठीक साढ़े नौ बजे प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की कोठी पर पहुँचे। प्राथमिक शिष्टाचार के बाद वार्ता का प्रारंभ करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "आज राष्ट्र की स्थिति बहुत विषम हो रही है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि इस संकटकालीन स्थिति में आप अपने-आपको अकेला महसूस न करें। आप यह विश्वास रखें कि ऐसी स्थिति में और भी कई लोग हाथ बँटाने वाले हैं।" इस आश्वस्तिमूलक बात पर नेहरूजी ने प्रसन्नता प्रकट की तथा धन्यवाद दिया।

वार्ता का दूसरा बिन्दु था राष्ट्रीय चरित्र। इस सन्दर्भ में आचार्य श्री ने कहा- "भ्रष्टाचार एक ज्वलन्त समस्या बन रही है। इसकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि साधारण प्रयत्न से उखड़ नहीं सकतीं। मेरे अभिमत से भ्रष्टाचार को मिटाने या राष्ट्रीय चरित्र को उन्नत बनाने के लिए एक स्वतन्त्र मन्त्रालय की अपेक्षा है। एक ऐसा मन्त्रालय, जो प्रमुख रूप से यही काम देखे। सम्राट अशोक के युग में ऐसी व्यवस्था थी। वर्तमान में भी यह व्यवस्था मूल्यवान और उपयोगी सिद्ध हो सकती है।" नेहरूजी के सामने उक्त चिन्तन सर्वथा नया था। उन्होंने कहा-"आचार्यजी ! इस विषय में आप प्रान्तीय सरकारों से बात करें और उन्हें इसकी आवश्यकता समझाएं।" पण्डित नेहरू के साथ आचार्य श्री का वार्तालाप चल रहा था, उसी समय कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री जी. एम. सादिक उनसे मिलने आ गये। उन दिनों कश्मीर की स्थिति काफी जटिल हो रही थी। प्रधानमंत्री के सेक्रटरी ने उनको श्री सादिक के आने की सूचना दी तो वे बोले–"अभी उन्हें बिठाओ। मैं थोड़ी देर में आ रहा हूँ।" इसके बाद वे पुनः बातचीत में संलग्न हो गये। निर्धारित समय सम्पन्न हो जाने पर भी वे निश्चिन्तता से बैठे रहे। आखिर आचार्य श्री ने ही कहा, "आपसे मिलने के लिए और भी अनेक लोग आये हुए हैं, इसलिए अब हम अपनी बात सम्पन्न करें।" उसके बाद पंडितजी वहां से उठे।

> आचार्य श्री ने कहा- "भ्रष्टाचार एक ज्वलन्त समस्या बन रही है। इसकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि साधारण प्रयत्न से उखड़ नहीं सकतीं। मेरे अभिमत से भ्रष्टाचार को मिटाने या राष्ट्रीय चरित्र को उन्नत बनाने के लिए एक स्वतन्त्र मन्त्रालय की अपेक्षा है।"

"अणुव्रत विहार" की परिकल्पना

अप्रैल का महीना बीता। मई के प्रथम दिन मध्याह्न में कई जनसंघी नेता आचार्य श्री तुलसी के सम्पर्क में आये। इण्डियन एक्सप्रेस के सह सम्पादक मिस्टर क्राटू से आचार्य श्री का मिलना हुआ। अणुव्रत आन्दोलन के बारे में खुलकर बात हुई। 2 मई को आचार्य श्री के सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों में श्री बसंतराव ओक, श्री जैनेन्द्रकुमार, साहू शान्तिप्रसादजी जैन आदि प्रमुख थे। 3 मई को नयी दिल्ली के आकाशवाणी भवन के ऑडिटोरियम हॉल में 'अणुव्रत-विचार-परिषद' का विराट आयोजन था। हॉल श्रोताओं से खचाखच भरा था। 'केन्द्रीय अणुव्रत समिति' उसकी आयोजक थी। आयोजन का मुख्य उद्देश्य था-'अणुव्रत-विहार-योजना' का शुभारंभ।

अणुव्रत समिति के महामंत्री जेठाभाई झवेरी ने विचार-परिषद्' की संयोजना के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। शुभकरण दसानी ने 'अणुव्रत विहार' की प्रस्तावित रूपरेखा प्रस्तुत की। मुनि नथमलजी ने अणुव्रत विहार की बहुमुखी प्रवृत्तियों के बारे में चर्चा की। पूर्व न्यायाधीश श्री बी. पी. सिन्हा ने कहा- "आज हम अणुव्रत-विहार योजना को जन्म दे रहे हैं, जिसका होना अत्यन्त आवश्यक है।" अन्तरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री श्री मनुभाई शाह ने 'अणुव्रत-विहार-योजना' को उपयोगी बताते हुए कहा-"इसके द्वारा जीवन-निर्माण की सक्रिय शिक्षा प्राप्त होगी। यह व्यक्ति को संकीर्णता के दायरे से बाहर निकालकर विशालता का दर्शन कराएगी और जीवन-निर्माण की दिशाएं खोलेगी।"

सुप्रसिद्ध विचारक श्री जैनेन्द्र कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा- "मैं अणुव्रती नहीं हूँ, पर अणुव्रत आन्दोलन से मेरा गहरा सम्बन्ध है। आन्दोलन की दिशा सही है। इससे हमारा संकट दूर होगा और देश को लाभ पहुँचेगा।"

श्री जयप्रकाश नारायण ने विनोबाजी के भूदान आन्दोलन और अणुव्रत आन्दोलन की तुलना करते हुए इसे जन-जन के लिए कल्याणकारी बताया। देश की तत्कालीन स्थितियों का चित्रण करते हुए श्री जे. पी. ने आगे कहा-"आज 'अणुव्रत-विहार' का जो संकल्प हुआ है, वह बहुत अच्छा है। मैं चाहता हूँ कि यह ऐसे स्थान पर हो, जहां से देश के नवयुवकों को चरित्र निर्माण की सही दिशा मिलती रहे।" संसद सदस्य श्री रामचन्द्र तथा जयचन्दलालजी दफ्तरी के बाद श्री जयसुखलाल हाथी ने अध्यक्षीय भाषण किया। उन्होंने 'अणुव्रत-विहार-योजना' के बारे में आशा व्यक्त करते हुए कहा कि यह एक प्रयोगशाला का स्वरूप प्राप्त करेगी।

> आचार्य श्री ने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन की गति में तीव्रता लाने के लिए 'अणुव्रत विहार योजना' का निर्माण हुआ है। कार्यकर्ता मिलकर देश में एक नया वातावरण पैदा करेंगे और अपने जीवन को तदनुरूप ढालने का प्रयत्न करेंगे तभी यह योजना सफल हो पाएगी।

आचार्य श्री ने 'अणुव्रत-विहार' के बारे में कार्यकर्ताओं को विशेष लक्ष्य बनाकर अपने प्रवचन में कहा- "अणुव्रत आन्दोलन में निखार एवं उसकी गति में तीव्रता लाने के लिए 'अणुव्रत विहार योजना' का निर्माण हुआ। अच्छी जमीन मिलने, सुन्दर संस्थान बनने और प्रचार-प्रसार होने मात्र से योजना के मौलिक लक्ष्य की पूर्ति नहीं होगी। उससे केवल बाह्य आकार बनेगा, आत्मा का स्पर्श नहीं होगा। आप सब मिलकर देश में एक नया वातावरण पैदा करेंगे और अपने जीवन को तदनुरूप ढालने का प्रयत्न करेंगे तभी 'अणुव्रत-विहार-योजना' सफल हो पाएगी।"

अनुरोध और अनुचिन्तन

आचार्य श्री तुलसी का चतुर्मास दिल्ली में हो, इस दृष्टि से श्री जयसुखलाल हाथी और श्री गुलजारी लाल नन्दाजी ने विशेष प्रार्थना करवायी। आचार्य श्री ने गंभीरता से सोचा और मानसिक रूप से चातुर्मास्य वहीं करने का निर्णय ले लिया। लक्ष्य एक ही था कि काम होना चाहिए। तब तक जो श्रम किया गया था, उसकी निष्पत्ति पर प्रश्नचिह्न न लग जाये, इस दृष्टि से आचार्य श्री का दिल्ली में काम करने का मानस बन गया। उन्होंने यह भी सोच लिया कि दिल्ली का काम पूरे भारत के लिए होगा।

आचार्य श्री केवल महीने-डेढ़ महीने रहने के लिए दिल्ली गये थे। वहां अधिक रुकने की भावना के पीछे कुछ प्रमुख कारण बने -

1. अणुव्रत आन्दोलन को तेजस्वी बनाना, उसे एक नया मोड़ देना।
2. वर्षों से लटक रही 'अणुव्रत-विहार-योजना' को पूरा बल देकर आगे बढ़ाना।
3. गृहमंत्री नन्दाजी के भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन को प्रभावी बनाकर उसे अणुव्रत का पूरक बनाना।

16 जून को संध्या के समय गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नंदा आये और बोले- "आचार्यजी! मैंने सुना है कि आप दिल्ली से जा रहे हैं। बताइए कि हमारा काम किस प्रकार चला?" आचार्य श्री ने कहा- "काम अच्छा चला है और चल रहा है। यहां वातावरण अनुकूल बना है। अपेक्षा है कि उसे और आगे बढ़ाया जाये। अभी-अभी यहां अणुव्रती कार्यकर्ता शिविर लगा था। उसमें अन्यान्य कार्यक्रमों के साथ राष्ट्रीय अणुव्रत के नियमों का मोहल्ले-मोहल्ले और घर-घर जाकर प्रचार किया गया। कार्यकर्ता जहां भी

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

गये, लोगों ने उनका स्वागत किया और अणुव्रत की बात प्रेम से सुनी। कुछ व्यक्तियों ने प्रतिज्ञाएं भी ली हैं।"

नन्दाजी ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "मैंने देखा है। राष्ट्रीय अणुव्रत के नियम अच्छे हैं। जो लोग प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं, उनकी संभाल रखनी जरूरी है। मैं चाहता हूँ कि आपके प्रस्थान से पूर्व भावी कार्यक्रम की रूपरेखा पर विस्तृत चिंतन हो जाये। इस विषय में सरकार की ओर से जो भी सहयोग अपेक्षित हो, दिया जा सकता है।"

आचार्य श्री के दिल्ली से प्रस्थान करने से पूर्व वहां के विशिष्ट व्यक्तियों में अणुव्रत के प्रति रुचि और उनका सकारात्मक दृष्टिकोण नयी संभावनाओं का सूचक बना।

समाज-विकास के सात सूत्र

अबोहर मण्डी के त्रिदिवसीय प्रवास के दौरान आचार्य श्री तुलसी के समक्ष भाई नाथूरामजी ने एक प्रश्न उपस्थित करते हुए कहा- "अपना धर्म इतना अच्छा है, फिर भी समाज की अवनति क्यों हो रही है?" उन्होंने विकास की दृष्टि से ईसाइयों का उदाहरण दिया। उस सन्दर्भ में आचार्य श्री ने अणुव्रत के एक सप्तसूत्री कार्यक्रम के बारे में चिन्तन किया। उसका प्रारूप इस प्रकार है-

1. संयम - प्रवेशक अणुव्रत और अणुव्रत के नियम।
2. साधना - ध्यान, कायोत्सर्ग, योगासन आदि।
3. सेवा - स्वास्थ्य, शिक्षा, सहयोग और सापेक्षता।
4. श्रम - स्वावलम्बन, सुविधावादी मनोवृत्ति का परिष्कार।
5. संचार - प्रचार, प्रसार, जनसम्पर्क आदि।
6. संग्रह - संगठन आदि।
7. समर्पण - विसर्जन आदि।

कोई भी समाज उपर्युक्त सप्तसूत्री कार्यक्रम को स्वीकार कर चले तो उसका बहुत विकास हो सकता है। इसके लिए सतत प्रयत्न की अपेक्षा है।

आचार्य तुलसी के प्रमुख कार्यक्रमों में एक रहा - अणुव्रत। यह लोककल्याणकारी उपक्रम है। लोकजीवन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा उसका उद्देश्य है। नैतिक मूल्य आकाश से उतरकर नहीं आते हैं। उनके प्रति आस्था पैदा करनी होती है। उस दौर में आस्थाहीनता बड़ा संकट थी। इस संकट से निजात पाने के लिए आचार्य श्री को साधना का पथ प्रशस्त करने की अपेक्षा का अनुभव हुआ। किसी भी कार्यक्रम की सफलता के दो बिन्दु हैं - विचार और साधना। वैचारिक दृष्टि से अणुव्रत को ठोस धरातल उपलब्ध हो गया। लाखों लोग उसके साथ जुड़ गये। उसे व्यावहारिक या प्रायोगिक रूप में स्वीकार करते समय लोगों का मनोबल कमजोर हो जाता है। इस समस्या का समाधान कोई हो सकता है तो वह है वैराग्य और अभ्यास की समन्विति। अन्तःकरण में वैराग्य का अंकुर फूट जाये और दैनन्दिन जीवन में अभ्यास चलता रहे तो कठिन-से-कठिन व्रत को आत्मसात किया जा सकता है। अणुव्रत का जहां तक सवाल है, उसमें बहुत अधिक कठिनाई वाली बात नहीं है, बशर्ते आदमी का मानस तैयार हो जाये। इन सब तथ्यों को ध्यान में रखकर राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत साधना शिविर का आयोजन किया गया। 16 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 1966 तक चले उस पाँच दिवसीय शिविर के संयोजन का दायित्व सिविल जज उमरावचन्दजी मेहता ने संभाला। शिविर में साधकों को बहुविध प्रशिक्षण देने का काम सन्तों ने किया।

शिविर काल में बाहर से आने वाले व्यक्ति भी साधकों की चर्या और प्रशिक्षण की पद्धति देखकर प्रभावित हुए। नौसेना के आर्थिक सलाहकार बम्बई निवासी श्री नरेन्द्र मोरे, श्री सत्यनारायण खेतान और श्री फूलचन्द जैन एम. एल. ए. प्रवचन के समय आये। नरेन्द्रभाई ने विचार रखे। प्रवचन के बाद आगन्तुक व्यक्तियों के साथ आचार्य श्री का वार्तालाप हुआ। अणुव्रत तथा उसके परिपार्श्व में चलने वाली गतिविधियों के बारे में चर्चा चली।

"आचार्य तुलसी के प्रमुख कार्यक्रमों में एक रहा - अणुव्रत। यह लोककल्याणकारी उपक्रम है। लोकजीवन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा उसका उद्देश्य है। नैतिक मूल्य आकाश से उतरकर नहीं आते हैं। उनके प्रति आस्था पैदा करनी होती है।"

21 अक्टूबर को 'राजस्थान प्रान्तीय अणुव्रत समिति' तथा 'जैन दर्शन और संस्कृति परिषद्' का अधिवेशन एक साथ प्रारंभ हुआ। राजस्थान के समाज कल्याण मंत्री श्री अमृतलाल यादव ने अधिवेशन का उद्घाटन किया। अपने वक्तव्य में आध्यात्मिक मूल्यों की चर्चा करते हुए उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि वे आगामी चुनाव के समय अपने निर्वाचन क्षेत्र में किसी को पैसा देकर वोट नहीं लेंगे तथा अपने प्रचार के लिए किसी को शराब पिलाकर सहयोग प्राप्त नहीं करेंगे। उन्होंने कहा-"मिनिस्ट्री बड़ी चीज नहीं है। बड़ी होती है मनुष्यता। जब मनुष्य की कीमत उसके गुणों से आंकी जाएगी, तब ही देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा। अणुव्रत इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। मैं भी चाहता हूँ कि अणुव्रत के कार्य में सक्रिय योग करूं। अणुव्रत का कार्य मेरे लिए देश-सेवा का कार्य होगा।"

आचार्य श्री तुलसी ने अपने प्रवचन में अणुव्रत के चार सिद्धान्तों - पवित्रता, समानता, स्वतंत्रता और सहअस्तित्व की व्याख्या करते हुए कहा- "अणुव्रत का कार्यक्रम इन तत्त्वों की बुनियाद पर चल रहा है। किसी भी जाति, वर्ग या सम्प्रदाय से संबद्ध व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है। मानवता की सुरक्षा के लिए अणुव्रत जैसे रचनात्मक उपक्रम को व्यापक बनाने की जरूरत है।" उस अवसर पर उपाध्याय श्री अमर मुनि, राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन, श्री मोरारजी देसाई, श्री गुलजारीलाल नन्दा, राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया आदि विशिष्ट व्यक्तियों ने अपने संदेश प्रेषित किये थे। 'राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति' के मंत्री पन्नालाल बांठिया ने संदेश पढ़कर सुनाये। समिति के अध्यक्ष उमरावचन्दजी मेहता ने अध्यक्षीय भाषण दिया। आचार्य श्री ने अणुव्रत की प्रवृत्तियों को गतिशील बनाये रखने की प्रेरणा दी।

"आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के चार सिद्धान्तों - पवित्रता, समानता, स्वतंत्रता और सहअस्तित्व की व्याख्या करते हुए कहा- "अणुव्रत का कार्यक्रम इन तत्त्वों की बुनियाद पर चल रहा है। किसी भी जाति, वर्ग या सम्प्रदाय से संबद्ध व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है।""

राजस्थान में अणुव्रत-कार्य की पृष्ठभूमि

27 सितम्बर को राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष पुनः आचार्य श्री तुलसी से मिलने आये। वे लगभग एक महीने की यात्रा पर अफ्रीका जा रहे थे। उन्होंने मंगलपाठ सुना और आचार्य श्री से कहा- "राजस्थान विधानसभा के आगामी सत्र में अणुव्रत से सम्बन्धित प्रस्ताव आने वाला है। मेरे अध्यक्ष-काल में यह प्रस्ताव आ रहा है। उस समय आप वहां होते तो कितना अच्छा होता।"

राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री शिवचरण माथुर मंत्री बनने के बाद पहली बार आचार्य श्री तुलसी से मिलने के लिए आये। बातचीत के दौरान वे बोले-"आचार्यजी ! अणुव्रत के कार्यक्रमों से मैं परिचित हूँ। मेवाड़ के पुर गाँव में मुनि कानमलजी ने चर्मकारों के बीच जो काम किया है, मैं उससे पूर्णतः अवगत हूँ।" शिक्षामंत्री की बात सुनकर आचार्य श्री ने कहा- "राजस्थान की जनता और सरकार के लिए यह गौरव का विषय होना चाहिए कि भारत का एक नैतिक आन्दोलन राजस्थान से प्रारम्भ हुआ। यहां अणुव्रत के कुछ ऐसे कदम उठाये जाएं, जो अन्य प्रान्तों में काम करने की भूमिका बना सकें।" श्री माथुर ने उक्त विचार के साथ अपनी सहमति प्रकट करते हुए बताया कि विधानसभा के आगामी अधिवेशन में अणुव्रत के बारे में प्रस्ताव आने की संभावना है। विधानसभा में अणुव्रत की चर्चा होने से अन्यत्र भी उसका अच्छा प्रभाव हो सकेगा।

अणुव्रत दिवस का नया अभियान

5 नवम्बर को अखिल भारतीय स्तर पर 'अणुव्रत दिवस' का आयोजन था। मंगलदास-गिरधरदास टाउन हॉल में सार्वजनिक कार्यक्रम था। गुजरात के राजस्व मंत्री श्री प्रेमजीभाई ठक्कर, विधानसभा के अध्यक्ष श्री राघवजी, गुजरात विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री उमाशंकर जोशी, अहमदाबाद के मेयर श्री वासुदेव त्रिपाठी, व्यापार-मण्डल के अध्यक्ष श्री हरिदास-चरणदास, गांधी आश्रम के संचालक श्री गुलाम रसूल कुरैशी तथा शहर के विशिष्ट प्रबुद्धजन, व्यापारी एवं संभ्रान्त नागरिक अच्छी संख्या में उपस्थित थे। टाउन हॉल खचाखच भरा था। कई वक्ता बोले। कार्यक्रम प्रभावपूर्ण रहा। 'अणुव्रत दिवस' का आयोजन 'अखिल भारतीय अणुव्रत समिति' की ओर से किया गया था। रचनात्मक काम करने के उद्देश्य से समिति ने उस दिन से एक नये अभियान

का प्रारंभ किया। 'अपव्यय से बचो' - इस अभियान के अन्तर्गत जनता को तीन सूत्र दिये गये -

- मैं मादक व नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं भोजन में जूठन नहीं छोड़ूँगा।
- मैं विवाह-शादी, जन्म-मृत्यु, त्योहार आदि अवसरों पर आडम्बर व प्रदर्शन नहीं करूँगा।

अणुव्रत परिवार योजना

26 जनवरी को अपराह्न पाँच बजे 'कांग्रेस भवन' में आचार्य श्री तुलसी के प्रवचन हुए। मासिक पत्र 'नवनीत' के सम्पादक श्री सत्यकाम विद्यालंकार के साथ अणुव्रत साहित्य तथा सामयिक परिस्थितियों पर विचार-विमर्श हुआ। दिल्ली से समागत श्रीमती इन्दु जैन ने दर्शन किये। उस समय वे अणुव्रत के कार्यक्रमों में विशेष रूप से सक्रिय थीं। महाराष्ट्र के शिक्षामंत्री श्री मधुकर राव चौधरी, अणुव्रत समिति, मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. एन. एन. कैलाश आदि अनेक व्यक्ति आचार्य श्री से मिले। अणुव्रत के बारे में बहुआयामी चर्चा चली। रात्रि के समय समायोजित अणुव्रत गोष्ठी में 'अणुव्रत परिवार योजना' प्रस्तुत की गयी। आचार्य श्री तुलसी ने आह्वान किया कि इस योजना का प्रारम्भ मुम्बई में हो। आचार्य श्री के आह्वान पर जेठाभाई झवेरी ने अपने परिवार के तेरह सदस्यों के साथ खड़े होकर अणुव्रत परिवार के संकल्प स्वीकार किये। अणुव्रत परिवार की चर्चा आगे बढ़ी। कुछ दिन बाद वहां के चार और परिवार इस योजना के साथ जुड़े। उनमें तीन परिवार - नगीनभाई शाह, जया बहन और तारामणि बहन के परिवार मुम्बई के थे। बुधमलजी दूगड़ का परिवार सरदारशहर का था। आचार्य श्री ने इस उपक्रम को अभियान के रूप में आगे चलाने की अपेक्षा जतायी। बीस व्यक्तियों ने भोजन में जूठन छोड़ने का परित्याग किया।

आचार्य श्री 31 जनवरी को प्रातः उपप्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई के निवास स्थान पर उनसे मिले। लगभग पचहत्तर मिनट बात हुई। वार्तालाप के विविध विषय थे। उनमें प्रमुख बिन्दु थे-ईश्वरवाद, कर्तृत्ववाद, अहिंसा, गांधीवाद, अप्रिय सत्य क्यों नहीं बोलना, पण्डित नेहरू, साम्प्रदायिकता, असम, मद्रास, भाषा-विवाद में सरकारी नीति, आचार्य श्री की मद्रास यात्रा, आगम साहित्य, राज्य की अन्तरंग नीति आदि। कुल मिलाकर उस मिलन का असर अच्छा रहा।

> 30 जनवरी को राजस्थान विधानसभा में जनसंघ के श्री प्रेमसिंह सिंघवी ने अणुव्रत प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उसकी भाषा थी- "सदन यह निश्चय करता है कि अणुव्रत अभियान को समर्थन दिया जाये और उसे एक राष्ट्रीय नैतिक आन्दोलन के रूप में स्वीकार किया जाये।"

राजस्थान विधानसभा में अणुव्रत प्रस्ताव पारित

30 जनवरी को राजस्थान विधानसभा में विशेष गहमागहमी का वातावरण था। राजनीतिक प्रश्नों पर बढ़ती खींचातानी के दौरान श्री मूलचन्द डागा, वित्तमंत्री श्री मथुरादास माथुर, महारावल श्री लक्ष्मणसिंह आदि ने अणुव्रत प्रस्ताव पर चर्चा करने का सुझाव रखा। विधानसभा की उपाध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत ने अविलम्ब 'अणुव्रत प्रस्ताव' प्रस्तुत करने की व्यवस्था कर दी। जनसंघ के श्री प्रेमसिंह सिंघवी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उसकी भाषा थी- "सदन यह निश्चय करता है कि आचार्य श्री तुलसी प्रवर्तित अणुव्रत अभियान को समर्थन दिया जाये और उसे एक राष्ट्रीय नैतिक आन्दोलन के रूप में स्वीकार किया जाये।"

उक्त प्रस्ताव के समर्थन में अनेक सदस्यों ने अपनी बात प्रस्तुत की। उनमें श्री महेन्द्रसिंह पीपल्दा (जनसंघ), मास्टर आदित्येन्द्र (राजस्थान संसोपा के अध्यक्ष), श्री मूलचन्द डागा (कांग्रेस विधायक दल के सचिव), समाजवादी सदस्य पण्डित रामकिशन, विपक्षी नेता महारावल लक्ष्मणसिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री मूलचन्द डागा ने तो यहां तक कहा कि प्रत्येक विधायक अणुव्रती बनकर अणुव्रत आन्दोलन में सक्रिय सहयोग दे। चर्चा के अग्रिम दौर में विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री पूनमचन्द विश्नोई, निर्दलीय सदस्य श्री मनोहरसिंह मेहता, कांग्रेस सदस्य श्री गिरधारीलाल व्यास, श्री

गोकुलप्रसाद शर्मा, श्री फूलचन्द बाफना (स्वतंत्र), भारतीय क्रान्ति दल के नेता श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता, श्री दौलतराम सारण आदि ने 'अणुव्रत प्रस्ताव' के पक्ष में विचार व्यक्त किये।

समग्र सदन में एकमात्र साम्यवादी सदस्य श्री रामानन्द अग्रवाल उस प्रस्ताव के विरोध में बोले। उन्होंने कहा- "अणुव्रत का यह प्रस्ताव अनैतिकता को कायम रखने का प्रस्ताव है। सदन में यह नहीं लाया जाना चाहिए। यह सबसे बड़ा राजनीतिक प्रस्ताव है। यह समाजवाद के विरुद्ध और पूँजीवाद के पक्ष में है, जबकि समाज में अनैतिकता का कारण ही पूँजीवादी व्यवस्था है। पूँजीवाद ने ही हर दुराचार के लिए मनुष्य को विवश किया है। प्रस्ताव का उद्देश्य पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने वाले नारों को ओझल करना है। 'अणुव्रत प्रस्ताव' जन-जागरण का नहीं, अपितु लोगों की आँखों पर पट्टी बांधने वाला है, अनैतिकता के प्रति आँख मुंदवाने वाला और संघर्ष करने की प्रवृत्ति को ठंडा करने वाला है।"

अणुव्रत का प्रस्ताव न सत्तापक्ष द्वारा लाया गया था और न प्रतिपक्ष के द्वारा। उसमें प्रायः सभी राजनीतिक दलों की सहमति थी। इसके बारे में साम्यवादी सदस्य द्वारा उठायी गयी आपत्ति का उत्तर प्रतिपक्ष के नेता श्री भैरोंसिंह शेखावत ने दिया। उन्होंने कहा- "मैं सोच ही रहा था कि माननीय साम्यवादी सदस्य अणुव्रत आन्दोलन का इतने जोर-शोर से खण्डन कैसे कर रहे हैं? साम्यवादी सदस्य के विरोध का हेतु है अणुव्रत का यह नियम-"मैं राष्ट्र-विघातक तथा तोड़फोड़मूलक हिंसात्मक प्रवृत्ति में भाग नहीं लूँगा।" 'अणुव्रत आन्दोलन' यदि राष्ट्रीय सम्पत्ति को विध्वंस करने की छूट दे देता तो श्री रामानन्द अग्रवाल अणुव्रत का समर्थन अवश्य करते।"

> श्री भैरोंसिंह शेखावत ने कहा- "राजस्थान को तो इस बात का गौरव होना चाहिए कि राजस्थान से चलकर साधुओं की टोलियां देश के कोने-कोने में पहुँचकर नैतिकता का संदेश देती हैं। अणुबम का मुकाबला करने के लिए अणुव्रत के माध्यम से नैतिक बल दे रही हैं।"

श्री शेखावत ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- "राजस्थान को तो इस बात का गौरव होना चाहिए कि राजस्थान से चलकर साधुओं की टोलियां देश के कोने-कोने में पहुँचकर नैतिकता का संदेश देती हैं। अणुबम का मुकाबला करने के लिए अणुव्रत के माध्यम से नैतिक बल दे रही हैं।"

मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया ने इस विषय को आगामी सत्र तक चालू रखने का सुझाव दिया। अणुव्रत के समर्थन में बोलने वाले वक्ताओं की उत्सुकता देख लगभग ढाई घण्टे की बहस में राजस्थान विधानसभा का वातावरण अणुव्रतमय बना दिया। अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री के सुझाव पर सदन में राय माँगी। श्री शेखावत ने सदन का समय आधा घण्टा बढ़ाकर उसी समय प्रस्ताव को पारित करने की बात पर बल दिया। 'अणुव्रत प्रस्ताव' पर हुई चर्चा के अन्त में सदन के नेता मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया ने कहा- "अणुव्रत आन्दोलन न तो पूँजीवाद का समर्थक है और न ही किसी धर्मविशेष का प्रचारक। इसके पीछे कोई उद्देश्य है तो यही कि व्यक्ति निर्दोष हो, समाज निर्दोष हो और राष्ट्र का नैतिक धरातल ऊपर उठे। अणुव्रत में हमारी संस्कृति प्रतिबिम्बित है। इसमें सभी धर्मों के आधारभूत तत्त्व प्रतिबिम्बित होते हैं।"

मुख्यमंत्री महोदय ने 'अणुव्रत प्रस्ताव' पर गंभीरता से विमर्श करके उसका संशोधित रूप सदन में प्रस्तुत किया, जो इस प्रकार है- "सदन आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत अभियान की सराहना करता है।" अध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य ने इस सन्दर्भ में सदन का अभिमत जानना चाहा तो अधिसंख्य सदस्यों ने अपनी सहमति प्रकट की। अणुव्रत के बारे में हुई लम्बी चर्चा के बावजूद उक्त प्रस्ताव के विपक्ष में बोलने वाले साम्यवादी सदस्य श्री रामानन्द अग्रवाल एक भी सदस्य को प्रभावित नहीं कर पाये। लगभग साढ़े पाँच बजे प्रस्ताव पारित होने के साथ ही अणुव्रत से संबद्ध सब लोगों में प्रसन्नता की लहर छा गयी। मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया, प्रतिपक्ष के नेता श्री शेखावत, अध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य आदि का उसमें पूरा सहयोग रहा।

विधानसभा में 'अणुव्रत प्रस्ताव' पारित होने से सारे राजस्थान में उसकी गूँज हो गयी। आकाशवाणी से उसके संवाद प्रसारित हुए। स्थानीय समाचार पत्रों के मुखपृष्ठ पर समाचार प्रकाशित हुए। कुछ पत्रों के सम्पादकीय उसी विषय पर लिखे गये। दिल्ली के दैनिक पत्रों में भी यह संवाद छपा। अणुव्रत के दो दशकों में वह ऐसा समय था, जब

राजस्थान में जनप्रतिनिधियों ने अणुव्रत के कारण अपने प्रदेश को गौरवान्वित अनुभव किया। अणुव्रत द्वारा राष्ट्रीय चरित्र के उन्नयन का आचार्य श्री तुलसी का संकल्प पुष्ट हुआ। अणुव्रती कार्यकर्ताओं के मन में यह विश्वास जागा कि उनके कार्यों का समुचित मूल्यांकन होगा और अणुव्रत नैतिक मूल्यों का संवाहक बनकर लोकजीवन को प्रभावित करेगा।

भेंट में खोट की माँग

16 अप्रैल, 1968 को प्रातः आचार्य श्री तुलसी ने हुबली से सिरगुप्पी के लिए प्रस्थान किया। लगभग सोलह किमी. का रास्ता था। सड़क पर वंडवाड़ और मंटूर गाँव के लोग खड़े-खड़े उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी भक्ति भावना ने आचार्य श्री को वहां रोक लिया। उन्होंने कुछ समय खड़े रहकर लोगों को अणुव्रत की बात समझायी। प्रवचन की समाप्ति के साथ ही वे लोग एक-एक कर आगे बढ़े और दस-दस रुपये के नोट चढ़ाने लगे। आचार्य श्री ने पूछा- "आप यह क्या कर रहे हैं ?" उनमें से एक भाई बोला- "गुरुजी ! हम लोग गाँवों में रहते हैं। हमारे पास अधिक कुछ नहीं है। हमारी यह तुच्छ भेंट आप स्वीकार करें।" गाँववासियों को समझाते हुए आचार्य श्री ने कहा- "भाइयो ! हम आपके लिए नये हैं। आप हमारी विधि से परिचित नहीं हैं, इसलिए रुपये चढ़ा रहे हैं। हम घर के रुपये भी छोड़कर आये हैं। अब आपसे रुपये लेकर क्या करेंगे? हमें नोट नहीं चाहिए, वोट नहीं चाहिए, प्लॉट भी नहीं चाहिए। हमें तो आपकी खोट चाहिए। आप अपने जीवन की खोट चढ़ा सकें तो वह हमें स्वीकार्य है।"

अणुव्रत यात्रा बिना मोक्ष नहीं

कांग्रेस विधायक दल के नेता श्री करत्तिरमन आचार्य मध्याह्न में श्री तुलसी के दर्शनार्थ आये। वे रामायण के अच्छे व्याख्याता और ज्ञाता थे। बारह हजार पद्यों वाली तमिल रामायण के पाँच हजार पद्य उनको कण्ठस्थ थे। आचार्य श्री तुलसी से वार्तालाप के समय वे बीच-बीच में पद्य उद्धृत करते रहे। विद्वता और विनम्रता के संगम श्री करत्तिरमन कोयम्बतूर जिले में भूदान आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता थे। इस ओर इंगित करते हुए कांग्रेस विधायक भाई विजयराज सेठिया बोले–"भूदान यात्राओं में इनका पूरा योग रहता है।" यह बात सुनकर आचार्य श्री ने कहा- "आपने भूदान यात्राएं बहुत की हैं। कभी अणुव्रत यात्रा भी की है क्या?" करत्तिरमन संकोच का अनुभव करते हुए बोले- "नहीं, आचार्य श्री ! ऐसा सौभाग्य मुझे अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। जब मैं दिल्ली में था तो आपसे मिलने की इच्छा थी, किन्तु मौका नहीं मिल सका।"

अणुव्रत के प्रति उनकी अनुकूलता देखकर आचार्य श्री ने कहा- "अणुव्रत यात्रा किये बिना छुटकारा नहीं होगा। क्यों, ठीक है न?" श्री करत्तिरमन बोले- "छुटकारा क्या, अणुव्रत-यात्रा किये बिना मोक्ष भी नहीं मिलेगा। "

डॉक्टरों के बीच डॉक्टर

'इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन, मद्रास' एवं 'दक्षिण प्रादेशिक अणुव्रत समिति' का संयुक्त कार्यक्रम 'पी. एल. एम. मेमोरियल हॉल' में था। वह कार्यक्रम विशेष रूप से डॉक्टरों के लिए आयोजित था। उसका विषय था-'स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर'।

सहसा आचार्य श्री तुलसी के भीतर का चिकित्सक जागा। उन्होंने डॉक्टरों को सम्बोधित करते हुए कहा- "आप शरीर के चिकित्सक हैं और मैं आत्मचिकित्सक हूँ। आपके पास रोगी आते हैं, मेरे पास भी आते हैं। आपके हॉस्पिटल में जितने रोगी आते हैं, संभवतः मेरे हॉस्पिटल में आने वाले रोगियों की संख्या उनसे अधिक है। आप रोग की चिकित्सा करते हैं, मैं रोग के कारणों को मिटाने पर बल देता हूँ। आप दवा देते हैं, मैं संयम का रास्ता बताता हूँ। मेरा विश्वास है कि आप भी इस चिकित्सा-विधि का प्रयोग करके अपने मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य दे सकते हैं।" आचार्य श्री ने संयम की चर्चा के प्रसंग में अणुव्रत की व्याख्या की। अनेक डॉक्टर अणुव्रती बने।

सहसा आचार्य श्री तुलसी के भीतर का चिकित्सक जागा। उन्होंने डॉक्टरों से कहा- "आप शरीर के चिकित्सक हैं और मैं आत्मचिकित्सक हूँ। आप रोग की चिकित्सा करते हैं, मैं रोग के कारणों को मिटाने पर बल देता हूँ। आप दवा देते हैं, मैं संयम का रास्ता बताता हूँ।"

75

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

राजगोपालाचार्य के घर पर

आचार्य श्री तुलसी 15 नवम्बर को प्रातः साढ़े सात बजे आठ सन्तों और कार्यकर्ताओं के साथ भारत के मूर्धन्य चिन्तक और राजनीति के चाणक्य चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के निवास स्थान पर गये। राजाजी अपनी पुत्रियों के साथ द्वार पर उपस्थित थे। राजाजी ने अपनी पुत्रियों से फूल मँगवाये। इस पर आचार्य श्री ने कहा- "राजाजी! हमारा स्वागत भावना के सुमनों से होता है। इनको तो हम छू भी नहीं सकते।" राजाजी बोले- "आचार्यजी! ये सब पारिजात पुष्प हैं। आपके लिए विशेष हिंसा कर इन्हें नहीं मँगाया गया है। ये स्वतः भूमि पर गिरे हैं। इनसे स्वागत कराने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।" राजाजी की बात सुनकर आचार्य श्री ने कहा-"आपकी स्नेहमयी भावना से अधिक मूल्य किसका होगा? हम आपका भावनात्मक स्वागत स्वीकार करते हैं।" 'स्वराज्य' में प्रकाशित अणुव्रत की टिप्पणी के बारे में चर्चा चली तो राजाजी बोले- "मैं अणुव्रत को पसन्द करता हूँ। उसे अच्छा समझता हूँ, पर मुझे ऐसे उपक्रमों में नये सम्प्रदाय बनने का भय रहता है। आचार्यजी ! आप अणुव्रत को सम्प्रदाय बनने से जरूर बचाएं।" आचार्य श्री ने अपनी ओर से राजाजी को आश्वस्त करने का प्रयास किया, किन्तु उनकी आशंका दूर नहीं हुई। वे पुनः बोले, "शंकराचार्यजी अपना सम्प्रदाय बनाना नहीं चाहते थे, किन्तु कालान्तर में सम्प्रदाय बन गया। सम्प्रदाय एक ऐसा घास है, जो बिना बुवाई के उग आता है।"

अणुव्रत ग्राम की अवधारणा

8 मार्च को आचार्य श्री तुलसी अम्बलवाणपुर और पलूर गाँवों में रहे। अम्बलवाणपुर में आसपास के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की गोष्ठी चल रही थी। आचार्य श्री के वहां पहुँचते ही अध्यापक उनके पास आये। आचार्य श्री ने उन्हें अणुव्रत की बात बतायी। अध्यापकों को नयी दृष्टि मिली। अणुव्रत का दर्शन ही इतना व्यापक है कि आचार्य श्री किसी भी वर्ग के बीच उसकी चर्चा करें, वह ग्राह्य बन जाता। प्रथम उद्‌बोधन में बारह व्यक्ति अणुव्रती बन गये। अध्यापकों की जुबान पर दिन भर अणुव्रत की बात रही।

पलूर गाँव में गाँववासियों ने अणुव्रत के प्रति अतिरिक्त उत्साह दिखाया। इसे देख आचार्य श्री के मन में विचार उठा कि ऐसे गाँवों को 'अणुव्रत ग्राम' के रूप में विकसित किया जाये तो स्वस्थ समाज की संरचना का धरातल तैयार हो सकता है। गाँववासियों को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "भूदान आन्दोलन में गाँव की भूमि का एक सीमा तक दान करने से वह भूदान के अन्तर्गत आ जाता है। इसी प्रकार जिस गाँव में पचहत्तर प्रतिशत व्यक्ति अणुव्रती बन जाएं, उसे 'अणुव्रत ग्राम' मान लेना चाहिए।" इस सुझाव पर सत्रह व्यक्ति एक साथ खड़े होकर अणुव्रती बन गये।

समस्या तीनों कालों को जोड़ने की

अणुव्रत का काम करना जितना सुगम है, उसको स्थायित्व देना उतना ही कठिन है। कठिनाई का कारण अणुव्रत-आचार संहिता की कठोरता नहीं, जनता की अनुस्रोतगामिता है। जिस काल या देश में अधिक लोग मानवीय मूल्यों की अवहेलना करते हों तथा उनकी ओर अंगुलि-निर्देश करने वाला कोई न हो तो शेष लोगों की नैतिक आस्था को हिलने से कौन रोक पाएगा? एक बार सम्पर्क या प्रवचन-श्रवण से प्रभावित होकर अणुव्रती बनने वाले लोगों की समुचित सार-संभाल से उनका मनोबल मजबूत बनता है। 'अणुव्रत समितियों' के गठन का एक उद्देश्य यह भी है, किन्तु समितियों को भी ठोस आधार की अपेक्षा रहती है। आधार के अभाव में कोई भी संगठन दीर्घकाल तक सक्रिय नहीं रह पाता। अणुव्रत आन्दोलन के जन्मकाल से आज तक अणुव्रत का जितना काम हुआ है, वह कल्पनातीत है। भविष्य की संभावनाएं भी कार्य को नयी दिशा देने वाली हैं, पर व्यवस्थित योजना के अभाव में अतीत को वर्तमान और वर्तमान को भविष्य के साथ जोड़कर कौन रख पाएगा?

अणुव्रत का काम करना जितना सुगम है, उसको स्थायित्व देना उतना ही कठिन है। जिस काल या देश में अधिक लोग मानवीय मूल्यों की अवहेलना करते हों तथा उनकी ओर अंगुलि-निर्देश करने वाला कोई न हो तो शेष लोगों की नैतिक आस्था को हिलने से कौन रोक पाएगा?

अणुव्रत और सर्वोदय का संगम

2 अप्रैल 1970 का दिन। सूर्योदय का सुहावना समय। सेवाग्राम आश्रम के कार्यकर्ताओं से विदा लेकर आचार्य श्री तुलसी ने मन में विनोबा भावे से मिलने का भाव लिए प्रस्थान किया। उधर गोपुरी में आचार्य विनोबा भावे प्रवास कर रहे थे। वे भी सूर्योदय के समय वहां से आचार्य श्री के दर्शनार्थ चले। मार्ग में दोनों का मिलन हुआ। विनोबाजी ने सहजता के साथ आचार्य श्री का स्वागत और अभिवादन किया। आचार्य श्री और विनोबाजी दोनों साथ-साथ चले। विनोबाजी ने आचार्य श्री का हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उनके साथ सैकड़ों की संख्या में सर्वोदय और अणुव्रत के कार्यकर्ता थे। दो भिन्न-भिन्न दिशाओं से बहकर आने वाली दो सांस्कृतिक धाराएं एकमेक हो गयीं। गोपुरी पहुँचते ही सर्वोदयी कार्यकर्ताओं की एक बैठक आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में हुई। सर्व सेवा संघ के सेक्रेटरी ठाकुरदास बंग ने सर्वोदय की पद्धतियों की अवगति दी। श्री गोविन्दराव देशपाण्डे ने मद्यनिषेध और चुनावशुद्धि कार्यक्रमों के बारे में बताया। चर्चा का एक बिंदु यह भी था कि अणुव्रत और सर्वोदय के बीच समन्वय-सूत्र कैसे जुड़ सकते हैं।

आहार-पानी से निवृत्ति के बाद आचार्य श्री चहलकदमी कर ही रहे थे कि सामने से विनोबाजी आते हुए दिखायी दिये। पुस्तकालय के एक बड़े कक्ष में विनोबा-तुलसी आमने-सामने बैठ गये। वार्ता का प्रारंभ करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "लगभग बीस वर्ष पहले दिल्ली के राजघाट पर हमारा मिलन हुआ था। उसके बाद पुनः मिलने का अवसर आज ही आया है। वह समय हमारी यात्राओं के प्रारंभ का था। हमने अणुव्रत यात्रा प्रारंभ की और आपने भूदान यात्रा। आपने हमसे पहले ही अपनी यात्रा संपन्न कर ली। हमारी यात्रा अभी चालू है। हम यहां से नागपुर होते हुए उड़ीसा जाने वाले हैं।"

पवनार आश्रम में : 4 अप्रैल को वर्धा से नौ किमी. चलकर आचार्य श्री पवनार पहुँचे। वहां भी विनोबाजी का एक आश्रम है। उनकी भूदान यात्रा का प्रारंभ भी वहीं से हुआ था। आचार्य श्री ने आश्रमवासियों को अणुव्रत तथा जैन साधुओं की चर्या के बारे में जानकारी दी।

> अणुव्रत व्यक्ति-व्यक्ति का सुधार, पारिवारिक और सामाजिक सुधार के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण करता है। ग्राम निर्माण की योजना इसी प्रक्रिया के द्वारा क्रियान्वित हो सकती है। इस अवधारणा के आधार पर अणुव्रत के कार्यकर्ताओं ने 'अणुव्रत ग्राम' की रूपरेखा तैयार की।

अणुव्रत है एक नौका

आचार्य श्री तुलसी को मध्याह्न में हण्डिया से आगे नेमावार जाना था। दोनों गाँवों के बीच में नर्मदा नदी है। नदी पर पुल नहीं था। नौका द्वारा नदी पार करने की व्यवस्था थी। उस दिन नदी के दोनों तटों पर अच्छी हलचल थी। नाविक अपनी-अपनी नौकाओं के साथ किनारे पर खड़े थे। एक नौका में साध्वियां और बहनें चढ़ीं। साध्वियों के उस पार पहुँचने के बाद आचार्य श्री के साथ पच्चीस साधु और चालीस भाई नौका पर सवार हुए। जैसे ही नौका किनारे लगी, सैकड़ों भाई-बहनों ने हर्षध्वनि की। नौका पर बैठे-बैठे ही साधु-साध्वियों और उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा- "नौका से नदी को पार करना आगमों में विहित है। हमारे शिष्य साधु-साध्वियां पहले भी ऐसा कर चुके हैं, किन्तु मैं पहली बार नौका पर बैठा हूँ। हमारे साथ इस समय पच्चीस साधु, बत्तीस साध्वियां एवं विभिन्न प्रांतों के सैकड़ों श्रावक-श्राविकाएं यहां उपस्थित हैं। जिस प्रकार से हमने आज नौका के द्वारा नदी को पार किया है, उसी प्रकार संसार-समुद्र को भी हँसते-हँसते पार कर जाएं। जैसे हम पार करें, उसी प्रकार दूसरों को भी पार उतारें। इसके लिए 'अणुव्रत' नौका का कार्य करेगा, यह मुझे पूर्ण विश्वास है।"

बरड़ासर बना वरदासर

अणुव्रत सुधारमूलक आन्दोलन है। इसकी बुनियाद है व्यक्ति-सुधार। यह व्यक्ति-व्यक्ति का सुधार, पारिवारिक और सामाजिक सुधार के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण करता है। ग्राम निर्माण की योजना इसी प्रक्रिया के द्वारा क्रियान्वित हो सकती है। भारत की सही तस्वीर गाँव हैं। इस अवधारणा के आधार पर अणुव्रत के कार्यकर्ताओं ने 'अणुव्रत ग्राम' की रूपरेखा तैयार की। सरदारशहर के निकटवर्ती गाँव बरड़ासर पर कुछ का ध्यान केन्द्रित हुआ। उन्होंने वहां जनसंपर्क किया। छोटी-छोटी गोष्ठियों में अणुव्रत की

बात बतायी, लोगों को व्यसनमुक्त बनाया, अणुव्रती बनाया और सरदारशहर में आचार्य श्री के निकट पहुँचा दिया। महावीर जयंती के दिन बरड़ासर को 'अणुव्रत ग्राम' घोषित किया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बरड़ासर गाँव में कुल चौरासी परिवार थे। तिहत्तर घर हरिजनों के थे। दस चारणों के और एक घर पुजारी का था। गाँव की जनसंख्या लगभग साढ़े चार सौ थी। गाँव के प्रायः सभी लोग परिश्रमशील बुनकर और किसान थे। उनके घर छोटे-छोटे, पर बड़े लिपे-पुते और सफाईदार। गाँव में बिजली थी और मीठे-पानी का कुआं भी। लोगों का जीवन सीधा-सादा था। अब उसके साथ सदाचार की बात भी जुड़ गयी।

आचार्य श्री तुलसी 5 अप्रैल 1972 को लगभग साढ़े सात किमी. चलकर अपराह्न में 'अणुव्रत ग्राम' बरड़ासर पहुँचे। स्थानीय लोगों ने भावभीना स्वागत किया। रात्रि में आचार्य श्री ने प्रवचन किया। 'अणुव्रत ग्राम योजना' के बारे में विस्तार से समझाया। गाँव के प्रायः सभी लोग व्यसनमुक्त हो गये। एक सौ इक्कीस व्यक्ति अणुव्रती बने। रात को साढ़े ग्यारह बजे तक आचार्य श्री वहां बैठे रहे और एक-एक व्यक्ति से बात कर उसे ठीक करते रहे। गाँव का विकास होता रहे, इस दृष्टि से एक परामर्शक कमेटी का गठन किया गया। उस कमेटी के लिए मोहनजी जैन, बनवारीजी बेदी, मास्टर भाटी, सूरजमलजी दूगड़ और जबरमलजी दूगड़ के नाम लिये गये। अणुव्रत समिति का भी गठन हो गया। गाँववासियों की श्रद्धा, सरलता, जागरुकता और अणुव्रत के प्रति विशेष भावना के परिप्रेक्ष्य में गाँव का बरड़ासर नाम जमा नहीं। आचार्य श्री ने उन लोगों को सुझाया कि अणुव्रत का उपक्रम उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ है। ऐसी स्थिति में इस गाँव को 'वरदासर' क्यों न कहा जाये? लोगों ने प्रसन्नता से इस नाम को स्वीकार किया।

"21 सितम्बर को मध्याह्न में एक विशेष गोष्ठी रखी गयी। विमर्शनीय बिन्दु था - अणुव्रत को तेरापंथ तक ही सीमित न रखकर व्यापक बनाना। अणुव्रत में रुचि रखने वाले अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे। सबके मन में अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने की लगन थी।"

अणुव्रत का व्यापक स्वरूप

21 सितम्बर को मध्याह्न में एक विशेष गोष्ठी रखी गयी। विमर्शनीय बिन्दु था - अणुव्रत को तेरापंथ तक ही सीमित न रखकर व्यापक बनाना। अणुव्रत में रुचि रखने वाले अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे। सबके मन में अणुव्रत को जन-जन तक पहुँचाने की लगन थी। लक्ष्य, साधना और कार्यशैली के बारे में खुलकर चिन्तन हुआ। सीताशरणजी शर्मा ने अपना सुझाव प्रस्तुत करते हुए कहा- "अणुव्रत के प्रचार-प्रसार की सारी अर्थव्यवस्था तेरापंथ समाज द्वारा होती है। अणुव्रत के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण का एक कारण यह भी हो सकता है। यदि हमें अणुव्रत को एक घेरे से निकालना है तो अणुव्रत समिति के सदस्यों की तरह मिश्रित अर्थव्यवस्था का लक्ष्य बनाना होगा।" छगनलाल शास्त्री शर्माजी के विचारों से सहमत थे। उन्होंने अपनी ओर से नयी बात यह कही कि अणुव्रत के कार्यक्रम सार्वजनिक स्थानों पर आयोजित किये जाने चाहिए। रुक्मिणी बहन का चिन्तन था कि अणुव्रत आन्दोलन को जनव्यापी बनाने के लिए राज्य सरकार की भी सहायता लेनी चाहिए।

कार्यकर्ताओं के विचार आने के बाद आचार्य श्री तुलसी को अपना मन्तव्य प्रस्तुत करना था। गोष्ठी का उपसंहार करते हुए उन्होंने कहा- "विगत बीस वर्षों से तेरापंथ समाज के द्वारा अणुव्रत की गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है, फिर भी यह एक असाम्प्रदायिक आन्दोलन है। तेरापंथ को इससे लाभ यह हुआ कि एक सम्प्रदाय होते हुए भी इसका सम्प्रदायातीत रूप उजागर हो गया। भविष्य में भी अणुव्रत की किसी भी गतिविधि की व्यवस्था करने में तेरापंथ समाज की क्षमता पर किसी प्रकार का संदेह नहीं है। समस्या एक ही सामने आयी है कि एक सार्वजनिक आन्दोलन की सारी व्यवस्था का दायित्व एक ही समाज पर रहने से इसे साम्प्रदायिक समझने की भूल हो सकती है। संभव है इसी के कारण यह आन्दोलन उतना जनव्यापी नहीं बन पाया है, जितना बनना चाहिए। इस दृष्टि से कुछ कार्यकर्ताओं ने जो विचार रखे हैं, उनके औचित्य का अंकन होना जरूरी है। निष्कर्ष के रूप में इस तथ्य को प्रस्तुत किया जा सकता है कि अणुव्रत के साथ अन्य समाज के लोगों का भी उतना ही सम्बन्ध रहना

चाहिए, जितना तेरापंथ समाज का है।" अणुव्रत कार्य को सबल तथा तेजस्वी बनाने के लिए एक व्यवस्थित योजना बनायी गयी। उसकी क्रियान्विति का दायित्व मोतीलाल रांका को दिया गया। यदि वह योजना सफल रही तो अणुव्रत आन्दोलन को तो बल मिलेगा ही, मानवता को भी बड़ा त्राण मिलेगा।

वरदासर में अणुव्रत अधिवेशन

आचार्य श्री तुलसी 4 मार्च 1973 को प्रातः नौ किलोमीटर चलकर वरदासर पहुँच गये। छोटा-सा गाँव, हरिजनों की बस्ती और सब तरह से पिछड़ा हुआ गाँव कुछ अणुव्रती कार्यकर्ताओं के पुरुषार्थ से इस लायक हो गया था कि आचार्य श्री ने वहां अणुव्रत अधिवेशन करने का निर्णय ले लिया। अधिवेशन की व्यवस्था के लिए वरदासर में तम्बुओं से अणुव्रत नगर बसाया गया। छोटे-बड़े कुछ मकान तैयार करवाये गये। बड़ा प्रवचन-पण्डाल बनवाया गया।

चार दिवसीय तेईसवें अणुव्रत अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए देश के विभिन्न भागों से अनेक विशिष्ट व्यक्ति वरदासर पहुँचे। उनमें गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा, अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष एवं पूर्व गृह राज्यमंत्री श्री जयसुखलाल हाथी, सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं अणुव्रत प्रवक्ता श्री जैनेन्द्र कुमार, जीवन-साहित्य के सम्पादक श्री यशपाल जैन, भारतीय लोककला मण्डल उदयपुर के अध्यक्ष पद्मश्री देवीलाल सामर, स्विट्जरलैण्ड के पूर्व राजदूत एवं भारत में अनेक विशिष्ट संस्थाओं के संचालक डॉ. श्री मोहनसिंह मेहता, विसर्जन आश्रम इंदौर के संचालक श्री मानव मुनि, श्री मनोहरसिंह मेहता, अणुव्रत के सक्रिय कार्यकर्ता श्री पारसभाई जैन, श्री मोतीलाल एच. रांका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

अधिवेशन के अवसर पर आचार्य श्री का विशेष प्रेरणा-पाथेय पाने तथा अणुव्रत के संकल्पों को दोहराने के लिए अनेक गाँवों एवं नगरों के अणुव्रती अच्छी संख्या में उपस्थित हुए। आसपास के गाँवों में रहने वाले लोग भी बड़े उत्साह के साथ अधिवेशन के कार्यक्रमों में संभागी बने। जनता की उपस्थिति आशा से अधिक ही रही। हजारों लोगों के ठहरने की व्यवस्था वहीं की गयी। समाज के अच्छे-अच्छे परिवार हरिजनों के घरों में ठहरे। उन्होंने वहीं खाया, पीया और प्रसन्नता का अनुभव किया।

अधिवेशन की व्यवस्था को सफल बनाने में सरदारशहर के युवकों तथा वहां की स्वागत-समिति का पूरा सहयोग रहा। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के मंत्री श्री मोहनलाल जैन का श्रम वहां के हर उपक्रम में मुखर हो रहा था। वरदासर जैसे छोटे गाँव में अधिवेशन का प्रसंग अणुव्रत के इतिहास की पहली घटना थी। वास्तव में वह एक नया प्रयोग था, जो बहुत सफल रहा।

अणुव्रत और सर्वोदय, दोनों को अपना कार्यक्षेत्र बनाने वाले पारसभाई जैन ने अधिवेशन का उद्घाटन किया। अणुव्रत के अनेक पहलुओं का स्पर्श करते हुए उन्होंने कार्यकर्ता-शक्ति को बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार गांधीजी ने वर्धा को और विशेष रूप से सेवाग्राम को विश्व के नक्शे पर उभार दिया, ठीक उसी प्रकार यह वरदासर जैसा छोटा-सा गाँव विश्व में नहीं तो हमारे देश में एक प्रमुख गाँव के रूप में उभर रहा है।

> केन्द्रीय गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने देश में भ्रष्टाचार की समस्या का उल्लेख करते हुए कहा कि अणुव्रत आन्दोलन ने देश की बहुत बड़ी सेवा की है और आज भी कर रहा है। इंसान को इंसान बनाने अथवा मानव में मानवता लाने का कार्य अणुव्रत आंदोलन कर रहा है।

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा अणुव्रत के प्रथम अधिवेशन के कुछ समय बाद ही अणुव्रत के साथ जुड़ गये थे। प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपने और आचार्य श्री तुलसी के बीच सेतु के रूप में नंदाजी की नियुक्ति की थी। श्री नन्दा ने देश में भ्रष्टाचार की समस्या का उल्लेख करते हुए कहा कि अणुव्रत आन्दोलन ने देश की बहुत बड़ी सेवा की है और आज भी कर रहा है। इंसान को इंसान बनाने अथवा मानव में मानवता लाने का कार्य अणुव्रत आंदोलन कर रहा है।"

सभी विशिष्ट व्यक्तियों ने छोटे-से गाँव में अधिवेशन की आयोजना को मुक्त कंठ से सराहा। वरदासर में जो विचार-मंथन चला, उससे अणुव्रत को एक नयी दिशा मिली। अधिवेशन भविष्य के लिए दिशादर्शक बन गया।

अणुव्रत-सर्वोदय शिविर

आचार्य श्री तुलसी देश के किसी भी भाग में यात्रा या चातुर्मासिक प्रवास करते, उनके कार्यक्रमों में अणुव्रत का अहम स्थान रहता था। एक तरफ जहां अणुव्रत जन-जन को आत्मसंयम के सांचे में ढालने के उद्देश्य से काम कर रहा था, वहीं अणुव्रत का समकालीन आन्दोलन 'सर्वोदय' सब लोगों के विकास का लक्ष्य सामने रखकर चल रहा था। अणुव्रत और सर्वोदय के कार्यकर्ता संयुक्त रूप से कोई कार्यक्रम हाथ में लें, इस निर्णय की क्रियान्विति के फलस्वरूप अहिंसा में निष्ठा रखने वाले विचारकों का एक त्रिदिवसीय शिविर दिल्ली में आयोजित किया गया।

इस शिविर को सफल बनाने के लिए सुप्रसिद्ध साहित्यकार और अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री जैनेन्द्र कुमार ने बहुत श्रम किया। उन्होंने सर्वोदयी और अणुव्रती, दोनों मिलाकर 85 कार्यकर्ताओं को तैयार कर लिया। शिविर की आयोजना अणुव्रत विहार में की गयी। आचार्य तुलसी ने मुनि श्री राकेशकुमार और मुनि श्री रूपचंद को इस शिविर में उपस्थित रह कर मार्गदर्शन प्रदान करने का निर्देश दिया और एक विशेष सन्देश इस अवसर पर प्रेषित किया जो उस समय की परिस्थितियों और अपेक्षाओं को बखूबी व्याख्यायित करता है -

"आज संसार में राजनीति की हलचल है। अन्य जितनी भी नीतियां हैं, राजनीति उन पर हावी होने की दिशा में बढ़ रही है। उसकी उच्छृंखल गति को इसी प्रकार प्रोत्साहन मिलता रहा तो विश्व संत्रास के कगार तक पहुँच जाएगा। संत्रास और आक्रोश का व्यापक प्रभाव अहिंसा और अध्यात्म को समझने में सबसे बड़ी बाधा है। अहिंसा का तेज जब तक तिरोहित रहेगा, मानवता को त्राण नहीं मिल सकेगा। वर्तमान की उच्छृंखल राजनीति को नियंत्रित करने के लिए अहिंसा और अध्यात्म का ओज निखारना होगा। अहिंसा में सीमाहीन शक्तियों का विस्तार है, यह तथ्य निर्विवाद है। किंतु इसके प्रयोग में कोई ऐसी भूल हो रही है, जो उन शक्तियों की अभिव्यक्ति में अवरोध ला देती है। हिंसक शक्तियां मानवीय चेतना के हित में नहीं हैं, किंतु उनमें संगठित होकर काम करने की विशेषता है। अहिंसक शक्तियां इस मायने में आज भी पिछड़ी हुई हैं। यदि अहिंसक शक्तियां मिलकर काम करें तो हिंसा-शक्ति स्वयं निरस्त हो सकती है। इस शिविर में ऐसी चर्चाएं हों, जिनसे अहिंसा शक्ति को स्पष्ट रूप से समझने का अवकाश मिले। चिन्तन के माध्यम से ऐसी सशक्त आवाज उठायी जाये कि राजनीति और राजनीतिज्ञों को भी इस दिशा में विवश होकर कुछ सोचना पड़े। इस संयुक्त शिविर से निश्चित ही कोई ऐसा कार्यक्रम प्रस्तुत होगा, जो हिंसा से संत्रस्त संसार को शान्ति की दिशा दे सकेगा।"

> जहां अणुव्रत जन-जन को आत्मसंयम के सांचे में ढालने के उद्देश्य से काम कर रहा था, वहीं 'सर्वोदय' सब लोगों के विकास का लक्ष्य सामने रखकर चल रहा था। अणुव्रत और सर्वोदय के कार्यकर्ता संयुक्त रूप से कोई कार्यक्रम हाथ में लें, इसके लिए दिल्ली में शिविर में आयोजित किया गया।

लाल किले पर आचार्य श्री तुलसी का स्वागत

20 जनवरी का सुंदर प्रभात। उस दिन ऐतिहासिक लालकिले के विशाल प्रांगण में आचार्य श्री तुलसी के सार्वजनिक स्वागत का कार्यक्रम था। मंच से स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री गुलजारीलाल नन्दा ने आचार्य श्री का स्वागत करते हुए देश में होने वाले नैतिक पतन की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने विशेष रूप से खाद्य पदार्थों तथा दवाइयों में हो रही मिलावट में रोकथाम के लिए आचार्य श्री के सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की।

प्रतिरक्षा मंत्री बाबू जगजीवन राम स्वागत समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा- "हमारे देश की परम्परा के अनुसार महापुरुष वही होता है, जिसकी जिंदगी अपने लिए नहीं होती, समाज व राष्ट्र के लिए अर्पित होती है। हमारे देश में बड़ा वही होता है, जो अपना सब कुछ त्याग देता है और प्राणीमात्र को अपना समझता है। आचार्य श्री तुलसी इसी परम्परा के संवाहक हैं। भारत ने अहिंसा के बल पर आजादी हासिल की। दुनिया में यह एक अभिनव प्रयोग था। उस अहिंसानिष्ठ भारत में आज हिंसा नये-नये मुखौटे लगाकर जनजीवन को तहस-नहस कर रही है। मैं भारत का रक्षामंत्री हूँ, किंतु अहिंसा में विश्वास करने वाला हूँ। मैं जानता हूँ कि अहिंसा की शक्ति हिंसा की शक्ति से बड़ी होती है। अहिंसा के आचार्य यहां उपस्थित हैं। इसलिए इस विषय में

75

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अधिक कुछ कहने की अपेक्षा नहीं है। फिर भी मैं इतना अवश्य कहूँगा कि मिलावट आदि के रूप में जो व्यावसायिक हिंसा बढ़ रही है, उसे रोकना जरूरी है। आचार्य श्री अणुव्रत के द्वारा इस हिंसा का निवारण करने के लिए प्रयत्नशील हैं, इसलिए मैं उनका स्वागत कर रहा हूँ।"

उपशिक्षामंत्री श्री डी. पी. यादव ने कहा, "हमारे देश के रक्षामंत्री बाबू जगजीवनरामजी यहां उपस्थित हैं। वे आपको आश्वासन दे सकते हैं कि देश की सीमाएं सुरक्षित हैं। किंतु देश के अंदर जो कीड़े लगे हुए हैं, उन्हें मैं या बाबूजी अकेले नहीं मिटा सकते। हमारी नेता प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी इन कीड़ों से निपटने के लिए कृतसंकल्प हैं। ऐसे समय में आचार्य श्री के यहां आगमन से हमारा मार्ग प्रशस्त होगा। आचार्य श्री ने अणुव्रत का जो अभियान चलाया है, राष्ट्र का चरित्रबल उसी से ऊँचा होगा।"

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री जयसुखलालभाई हाथी ने कहा- "देश के सामने जो संकट है, उसका कारण कुछ लोग अर्थाभाव को मानते हैं। मेरे अभिमत से आर्थिक समस्या से भी बड़ी समस्या है नैतिकता का अभाव या चरित्र का ह्रास। यह एक ऐसी बीमारी है, जिसका एकमात्र उपचार अणुव्रत है। इस विषय में गंभीरता से विचार करके राष्ट्रीय चरित्र को समुन्नत बनाने का संकल्प ही आचार्य श्री का सच्चा स्वागत है।"

भूतपूर्व महापौर लाला हंसराज ने सामाजिक अस्वास्थ्य की चर्चा करते हुए स्वस्थ समाज की संरचना पर बल दिया। मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री राधारमण ने दिल्ली में हुए अणुव्रत के कार्यों का हवाला दिया और कहा कि चोरबाजारी जैसी समस्याओं का समाधान अणुव्रत द्वारा ही हो सकता है। सुप्रसिद्ध उद्योगपति साहू शान्तिप्रसाद जैन, जो 'अणुव्रत विहार' के ट्रस्टी की जिम्मेदारी भी संभाल रहे थे, ने कहा कि 'अणुव्रत विहार' का भवन बनकर तैयार हो गया है। अणुव्रत की गतिविधियों को बल देने के लिए आचार्य श्री का वहां रहना आवश्यक है।

अणुव्रत विहार में आचार्य श्री तुलसी

लालकिले से चल कर आचार्य श्री तुलसी अणुव्रत विहार (वर्तमान का अणुव्रत भवन) पहुँचे। 'अणुव्रत विहार' में यह उनका प्रथम आगमन था। अणुव्रत की गतिविधियों को व्यापक बनाने के उद्देश्य से लम्बे प्रयासों के बाद सब प्रकार की सुविधाओं से युक्त इस पाँच मंजिले विशाल भवन को साकार स्वरूप मिला था। 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली स्थित यह भवन आने वाले वर्षों में अणुव्रत की अनेकानेक प्रवृत्तियों का मुख्य केंद्र बना।

> 19 अप्रैल को 'अणुव्रत विहार' जाते हुए मार्ग में प्रधानमंत्री निवास पर आचार्य श्री तुलसी और श्रीमती इन्दिरा गांधी की मुलाकात का सहज संयोग बना। देश से जुड़े अनेक गंभीर मुद्दों पर श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ आचार्य श्री की लगभग चालीस-पैंतालीस मिनट बातचीत हुई।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से वार्तालाप

19 अप्रैल को पंचशील पार्क से 'अणुव्रत विहार' जाते हुए मार्ग में प्रधानमंत्री निवास पर आचार्य श्री तुलसी और श्रीमती इन्दिरा गांधी की मुलाकात का सहज संयोग बना। प्रधानमंत्री बनने के बाद आचार्य श्री के साथ यह उनकी प्रथम भेंट थी। वैसे आठ वर्ष पूर्व स्वर्गीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ हुए आचार्य श्री के वार्तालाप के समय वे उपस्थित थीं। उसके बाद पंडितजी की मृत्यु के अवसर पर आचार्य श्री तुलसी ने वहां पहुँचकर उनके परिजनों को मंगलपाठ सुनाया था, उस समय भी श्रीमती इंदिरा गांधी वहीं थीं। देश से जुड़े अनेक गंभीर मुद्दों पर श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ आचार्य श्री की लगभग चालीस-पैंतालीस मिनट बातचीत हुई, उसका सार-संक्षेप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है-

आचार्य श्री : आज बहुत वर्षों के बाद आपसे मिल रहे हैं।

प्रधानमंत्री : हां, मैंने सुना था कि आप दक्षिण भारत की यात्रा पर गये हैं। वहां आपको बहुत संकट झेलने पड़े।

आचार्य श्री : संकट तो सबको झेलने पड़ते हैं। उस समय आपने बहुत ध्यान रखा।

विरोधी लोगों ने जिस प्रकार हिंसात्मक परिस्थितियां पैदा कर दी थीं, उनमें सरकार की ओर से सतर्कता नहीं बरती जाती तो पता नहीं क्या होता? वैसे कठिनाइयां किसके जीवन में नहीं आतीं। जहां तक मेरी जानकारी है, आपको भी क्या कम मुसीबतों का सामना करना पड़ा?

प्रधानमंत्री : यह तो होता ही है। कठिनाइयों का भी समाधान खोजना पड़ता है।

आचार्य श्री : अब ऐसा लगता है कि बाहरी समस्या तो कम हो गयी, पर अंतरंग समस्या बढ़ गयी। वास्तव में अंतरंग समस्याएं ज्यादा भयंकर होती हैं।

प्रधानमंत्री : हां, अंतरंग समस्या बहुत जटिल होती है।

आचार्य श्री : बांग्लादेश की भीषण समस्या का समाधान जिस दूरदर्शिता से आपने किया, वह एक अनूठा इतिहास है। एक करोड़ शरणार्थियों का देश में आना, उन्हें निभाना और पुनः सकुशल लौटा देना कितनी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता की बात है। हमने सोचा, अब इंदिराजी भ्रष्टाचार के खिलाफ कदम उठाएंगी, किंतु वैसा नहीं हो सका। आप इस विषय में क्या सोचती हैं?

प्रधानमंत्री : मैं मानती हूँ कि इस समस्या का समाधान कैसे भी हो, होना चाहिए। किंतु हमें समय तो मिलना चाहिए। जनता हमें समय ही नहीं देती। बांग्लादेश की समस्या का समाधान हुए एक सप्ताह भी नहीं हुआ कि देश में हड़तालें, तोड़फोड़, आगजनी आदि सरकार विरोधी हरकतें प्रारंभ हो गयीं। इन परिस्थितियों में कोई बड़ा निर्णय कैसे लिया जा सकता है? आप ही बताएं कि हम भ्रष्टाचार को कैसे मिटा सकते हैं? यों मैंने अनेक देश देखे हैं। उनकी अपेक्षा हमारे यहां भ्रष्टाचार ज्यादा है, ऐसी बात नहीं है, पर यह नीचे स्तर पर आ गया है। इसे मिटाना ही चाहिए। पर ऐसी परिस्थितियों में कैसे मिटाया जा सकता है?

आचार्य श्री : फिर भी आप इनके समाधान के लिए जिस धैर्य और साहस से कार्य कर रही हैं, वह कम महत्वपूर्ण नहीं है। (साधु-साध्वियों की ओर इंगित करते हुए) ये ही हमारे सैनिक हैं, जो दूर-दूर तक पदयात्रा कर चरित्र और नैतिकता का प्रचार-प्रसार करते हैं। अभी तो यहां इनकी संख्या कम है। जब विज्ञान भवन में आपके आने का प्रोग्राम बना था, उस समय बहुत बड़ा संघ उपस्थित था। आप अस्वस्थ होने के कारण वहां आ नहीं सकीं।

प्रधानमंत्री : हां, उस समय मुझे फ्लू हो गया था। मैंने गृहमंत्री दीक्षित को संदेश देकर भेजा था।

आचार्य श्री : देश में बढ़ती हुई समस्याओं के समाधान के लिए उन लोगों का सहयोग लिया जा सकता है, जो तटस्थ हैं। हमने अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा देश में एक स्वस्थ वातावरण बनाने का प्रयत्न किया है। हालांकि हमारे साधन सीमित हैं।

प्रधानमंत्री : इस समय देश में जो घटनाएं घटित हो रही हैं, उन्हें देखकर दु:ख होता है। लोग स्वार्थ को मुख्य मानकर काम कर रहे हैं। प्राकृतिक संकट को तो किसी प्रकार सुलझाने का प्रयत्न किया जा सकता है, किंतु ये समस्याएं तो मनुष्य द्वारा निर्मित हैं। भ्रष्टाचार के मामलों में प्रॉपगैंडा अधिक होता है। वास्तविक तथ्य को प्रकट करने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता। प्रान्तों की और अधिक कठिनाई है। मैं मुख्यमंत्री को ही कह सकती हूँ। मैंने अन्य लोगों से भी कहा है कि वे किसी के संबंध में स्पष्ट सबूत दें तो मैं तत्काल कार्रवाई कर सकती हूँ। कुछ लोग कहते हैं कि कांग्रेस पार्टी ही खराब है, तब हमें उसका प्रतिकार करना ही पड़ता है। सब तो खराब हो नहीं सकते।

आचार्य श्री : गुजरात की जो घटना घटी, क्या वह आपसे अज्ञात थी?

प्रधानमंत्री : प्रारंभ में स्थिति का पूरा ब्योरा नहीं मिल सका। बाद में सत्तारूढ़ व्यक्तियों से मैं बराबर संपर्क बनाये हुए थी। परिस्थितियों ने जो मोड़ लिया, उससे आन्दोलन का स्वरूप बदल गया। मुझे कनाडा की यात्रा पर जाना था। यात्रा पर जाते ही पारस्परिक असहयोग से गुजरात की स्थिति वहां तक पहुँच गयी।

"प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने आचार्य श्री से कहा, "प्राकृतिक संकट को तो किसी प्रकार सुलझाने का प्रयत्न किया जा सकता है, किंतु ये समस्याएं तो मनुष्य द्वारा निर्मित हैं। भ्रष्टाचार के मामलों में प्रॉपगैंडा अधिक होता है। वास्तविक तथ्य को प्रकट करने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता।"

आचार्य श्री : गुजरात की तरह बिहार की भी स्थिति बदल रही है। जयप्रकाश बाबू भी इसमें सक्रिय रूप से आगे आ रहे हैं। उनके बारे में आपने कुछ कहा था क्या ? यह परस्पर संघर्ष-सा कैसे खड़ा हो गया?

प्रधानमंत्री : नहीं, आचार्यजी! मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा। जयप्रकाशजी हों या अन्य कोई, मैंने व्यक्तिगत रूप से किसी को कुछ नहीं कहा। वहां और भी बहुत लोग उपस्थित थे। कोई कहे कि कांग्रेस पार्टी ही खराब है, यह मानने को मैं तैयार नहीं हूँ। मैंने यही कहा था कि हिंसा भड़काना ठीक नहीं है। एक बार हिंसा भड़क गयी तो फिर उसे संभालना मुश्किल होगा।

आचार्य श्री : जहां कांग्रेस की सरकार नहीं है, वहां भ्रष्टाचार के आरोपों की क्या स्थिति है?

प्रधानमंत्री : वहां भी आरोप बहुत हैं। उनको प्रमाणित करने वाला भी तो चाहिए। जब तक लोग निर्भय होकर प्रमाणित करने का साहस नहीं करेंगे, तब तक उनका प्रतिकार कैसे किया जाये?

आचार्य श्री : हड़ताल, तोड़फोड़ आदि हिंसात्मक प्रवृत्तियों से देश कमजोर बनता है। इस विषय में आप क्या सोचती हैं?

प्रधानमंत्री : यों तो हड़ताल की इजाजत है, लेकिन तोड़फोड़ आदि से देश का अहित होता है। उसके समाधान के लिए तो हम प्रयत्नशील हैं ही।

“

राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि ने आचार्य श्री से कहा, "आज की विषम स्थिति में सत्य का लोप हो रहा है। मानव-मानव में घृणा और द्वेष फैल रहा है। स्वार्थ सर्वोपरि बन रहा है। ऐसी स्थिति में आप ही जनता के सामने कोई आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं, ताकि वह उस पर चल सके।"

”

अणुव्रत युवा सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति की ओर से 2 नवंबर को फुटबॉल स्टेडियम में 'अणुव्रत युवा सम्मेलन' का आयोजन किया गया था। उसकी अध्यक्षता मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री राधारमणजी ने की। केन्द्रीय मंत्री श्री उमाशंकर दीक्षित, डॉ. शंकरदयाल शर्मा आदि भी उपस्थित थे। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित थीं। प्रधानमंत्री ने अपने अभिभाषण में विद्यार्थियों को चरित्रवान और समाज को सुदृढ़ बनाने की प्रेरणा दी। देश को महान बनाने वाले विशिष्ट तत्त्वों की चर्चा करते हुए उन्होंने एकता की भावना, आत्मसंयम, अनुशासन और कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा दी। आचार्य तुलसी ने अपने प्रवचन में बताया कि भगवान महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी को 'संयम वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय किया गया है। संयम वर्ष मनाने की बात ने इंदिराजी को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त हुए कहा- "यदि हममें संयम न हो, अपने आप पर काबू न हो तो पता नहीं हम कहां जाएंगे। अगर हमें मंजिल तक पहुँचना है तो यह भी सोचना होगा कि हम अपने पैर कहां रख रहे हैं। हमें अपने दिमाग को स्वस्थ रखकर काम करना होगा। अगर हम अपने मन पर कंट्रोल नहीं रखेंगे तो यह गलत काम भी कर सकता है। इसलिए हमें अपने मन, दिमाग और शरीर पर काबू रखने की आवश्यकता है, संयम में रखने की आवश्यकता है।"

सभा में उपस्थित विद्यार्थियों की ओर इंगित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा-"आज हमारे सामने जो हजारों-हजारों विद्यार्थी बैठे हैं, इन्हीं में से कोई बड़ा खिलाड़ी बनेगा, कोई अच्छा कलाकार, साहित्यकार और वैज्ञानिक बनेगा, कोई बड़ा नेता बनेगा। उसके हाथ में देश की बागडोर होगी। देश को बड़ा बनाने के लिए बड़े काम ही नहीं, छोटे काम भी आवश्यक होते हैं। ये बड़ी-बड़ी मशीनें चलती हैं, जहाज उड़ते हैं, उनमें अगर एक छोटा-सा पुर्जा भी खराब हो जाता है तो सारा काम बिगड़ जाता है। एक पुर्जा बिगड़ते ही सारा काम ठप्प हो जाता है। इसलिए छोटा पुर्जा भी बड़े काम का होता है।"

कार्यक्रम में जनता की उपस्थिति बहुत थी। संख्या का आकलन करने वालों के अनुसार सम्मेलन में तीस हजार लोग थे। विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी। उस कार्यक्रम की पब्लिसिटी बहुत भारी हुई। अंग्रेजी अखबारों में प्रथम पृष्ठ पर वह फोटो प्रकाशित किया गया, जिसमें इंदिराजी आचार्य श्री के साथ बात कर रही थीं।

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

75

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन का यह 75वां वर्ष है। जन-जन में मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित करने के पवित्र उद्देश्य से फाल्गुन शुक्ल द्वितीया 1 मार्च 1949 को महान संत आचार्य तुलसी ने राजस्थान के सरदारशहर कस्बे से अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया था। किसी भी आंदोलन का इतना लम्बा सफर तय करने के बाद भी जीवंत और उपादेय बने रहना इतिहास की विरल घटना है। यह अणुव्रत दर्शन में निहित सार्वभौम सिद्धांतों और मूल्यों तथा इसके असाम्प्रदायिक स्वरूप से ही संभव हो सका है। बिना किसी जाति, धर्म, रंग और लिंग के भेदभाव के अणुव्रत का दर्शन मानव के श्रेष्ठ चरित्र को उजागर करने का एक व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत करता है।

अणुव्रत अनुशास्ता

इन 75 वर्षों में अणुव्रत आंदोलन को आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान में आचार्य महाश्रमण जैसे तपस्वी और साधक संतपुरुषों का अनुशास्ता के रूप में आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलता रहा है। यह इस आंदोलन की सुदीर्घजीवी सफलता की धुरी है। विभिन्न क्षेत्रों के शीर्ष भारतीय व विदेशी विद्वानों का समय-समय पर इस आंदोलन से जुड़ाव और समर्थन इसकी सार्वजनीनता को रेखांकित करता है। दूसरी तरफ, लाखों-लाखों लोगों ने अणुव्रत दर्शन को अपने जीवन में उतार कर सकारात्मक रूपांतरण को अनुभव किया है।

अणुविभा

अणुविभा के संक्षिप्त नाम से लोकप्रिय अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अणुव्रत आंदोलन की केंद्रीय प्रतिनिधि संस्था है। अणुविभा संयुक्त राष्ट्र संघ के सिविल सोसायटी विभाग से सम्बद्ध एक वैश्विक संस्थान है। अणुविभा के निर्देशन में देशभर में लगभग 200 अणुव्रत समितियां एवं अणुव्रत मंच आंदोलन की गतिविधियों को विस्तार देते हैं। विश्व के 40 देशों में शांति व अहिंसा के क्षेत्र में काम कर रही संस्थाओं व व्यक्तियों से अणुविभा की नेटवर्किंग है। हजारों कार्यकर्ता अणुव्रत आंदोलन से जुड़े हैं जो अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाते हुए समाज में भी बदलाव के अग्रदूत बन रहे हैं। समय-समय पर होने वाले राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से ये कार्यकर्ता आपसी अनुभवों को साझा कर अभियान को और भी प्रभावी बनाने का प्रयास करते हैं।

समस्याएं अनेक समाधान एक अणुव्रत जीवनशैली

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष को 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के रूप में वर्षपर्यंत मनाने का निर्णय लिया गया है। इस दौरान व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण और कार्यकर्ता निर्माण को लक्षित अनेक प्रकल्प हाथ में लिये गये हैं। ये कार्यक्रम स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किये जाएंगे। इनमें अणुव्रत अमृत महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ ही नियमित प्रकल्प भी शामिल हैं। आइए, मानव मात्र के कल्याण को लक्षित इस आंदोलन से जुड़कर स्वयं और इस दुनिया को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करें।

व्यक्ति निर्माण लक्षित कार्यक्रम

- जन-जन को अणुव्रत आचार संहिता के प्रति संकल्पित कराना।
- प्रत्येक मंगलवार 'संयम दिवस' के रूप में मनाना और संयमित जीवनशैली का अभ्यास करना - 1. एक घण्टा मौन साधना, 2. नशे से मुक्त रहना, 3. मांसाहार नहीं करना।
- विद्यालयों में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच अणुव्रत विचार का प्रसार।
- विभिन्न शहरों में अणुव्रत बालोदय किडजोन की शुरुआत।
- पार्क/कॉलोनी/अपार्टमेण्ट आदि सार्वजनिक स्थानों पर छोटे समूहों में अणुव्रत क्लब बना कर अणुव्रत जीवनशैली का प्रसार।
- 15 नवम्बर 2023 अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का जन्मदिन ''अणुव्रत दिवस'' के रूप में मनाना, इस दिन देशभर में अधिक से अधिक लोग उपवास/व्रत रख कर संयम का अभ्यास करें।
- अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉण्टेस्ट के माध्यम से गीत, भाषण, चित्रकला व लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता से जन-जन को जोड़ कर अणुव्रत विचार का प्रसार।
- नयी पीढ़ी के सर्वांग-संतुलित विकास हेतु जीवन विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण का विस्तार करना।
- अणुव्रत बालोदय कार्यक्रमों को व्यापक बनाना।

प्रत्येक मंगलवार

संयम दिवस

1. एक घण्टा मौन साधना
2. नशे से मुक्त रहना
3. मांसाहार नहीं करना

समाज निर्माण लक्षित कार्यक्रम

- विभिन्न क्षेत्रों में ''अणुव्रत वाहिनी'' बनाना जो बस्तियों, गाँवों में जा कर अणुव्रत जीवनशैली के प्रति लोगों में जागरुकता लाये।
- विभिन्न शहरों में अणुव्रत अमृत व्याख्यानमाला, परिचर्चा, संगोष्ठी आदि आयोजित करना।
- ''अणुव्रत शोध केन्द्र'' की स्थापना, अणुव्रत जीवनशैली पर शोधपरक सामग्री का निर्माण।
- ''अणुव्रत ब्लॉग'' की शुरुआत कर अणुव्रत दर्शन आधारित समसामयिक सामग्री का प्रसार।
- विभिन्न शहरों में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन।
- अणुव्रत प्रदर्शनी तैयार कर देश के विभिन्न शहरों में एक-एक सप्ताह के लिए प्रदर्शन।
- अणुव्रत दर्शन और अणुव्रत जीवनशैली पर शॉर्ट डॉक्यूमेंट्रीज तैयार करना।
- सार्वजनिक स्थानों पर अधिक से अधिक अणुव्रत आचार संहिता के पट्ट लगाना।
- अणुव्रत संसदीय मंच के कार्यक्रमों को विस्तार देना।
- नशामुक्ति हेतु राष्ट्रीय अभियान चलाना।
- पर्यावरण जागरुकता हेतु राष्ट्रीय अभियान चलाना।
- 'अणुव्रत फॉर कॉरपोरेट्स' कार्यक्रम के माध्यम से व्यावसायिक जगत में अणुव्रत का प्रसार करना।
- अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को नया व व्यापक स्वरूप देना।

अणुव्रत का उद्घोष
संयमः खलु जीवनम्
संयम ही जीवन है

समाज निर्माण लक्षित कार्यक्रम

- संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय में अणुव्रत पर एक सिंपोजियम का आयोजन।
- अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठियां आयोजित करना।
- अंग्रेजी में अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से एक त्रैमासिक डिजिटल पत्रिका का प्रकाशन करना।
- एक दिन, एक समय: अणुव्रत गीत का देशभर में वृहद् स्तर पर सामूहिक महासंगान।
- देशभर में विभिन्न रूट निर्धारित कर ''अणुव्रत यात्रा'' का आयोजन।
- 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले वर्ष पर्यन्त चुनावशुद्धि का व्यापक अभियान चलाना।
- लोकसभा और विधानसभाओं में अणुव्रत पर चर्चा अथवा अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन।
- अधिकाधिक राज्यों में राज्यस्तरीय अणुव्रत अमृत महोत्सव पर आधारित वृहद् कार्यक्रम का आयोजन।
- विभिन्न शहरों में अणुव्रत मार्ग, सर्किल, द्वार अथवा चौक बनाने का प्रयास करना।
- 'अणुव्रत पत्रिका' और 'बच्चों का देश' पत्रिका का डिजिटल वर्जन प्रारम्भ करना, सदस्यता विस्तार करना।

एक दिन
एक समय
अणुव्रत गीत
महासंगान

कार्यकर्ता निर्माण व संगठन सुदृढ़ीकरण लक्षित कार्यक्रम

- अणुव्रत प्रवक्ता, प्रबोधक और जीवनदानी कार्यकर्ता तैयार करना।
- विभिन्न क्षेत्रों में नयी अणुव्रत समिति/अणुव्रत मंच का गठन करना।
- अणुव्रत समितियों के सदस्यों की कुल संख्या 75 हजार तक पहुँचाना, उन्हें केन्द्रीय स्तर पर सूचीबद्ध करना।
- अणुव्रत दर्शन पर 10 पीएचडी स्कॉलर्स को 1 लाख रुपये की स्कॉलरशिप देना।
- विभिन्न देशों में अणुव्रत एंबेसडर मनोनीत कर अणुव्रत विचार को प्रसारित करना।
- विभिन्न देशों में अणुव्रत चैप्टर्स प्रारम्भ करना।
- अणुव्रत समितियों में महिलाओं, युवकों एवं विभिन्न जाति, धर्म, समुदाय के व्यक्तियों की सहभागिता बढ़ाना।
- अणुव्रत कार्यकर्ता की आचार संहिता को व्यापकता में लागू करना।
- अणुव्रत समितियों को वैधानिक, कार्यकारी और आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ करना।

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

> अणुव्रत स्वस्थ समाज संरचना की बुनियाद है। जो लोग अपने समाज को स्वस्थ बनाना चाहते हैं, वे व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन को अणुव्रत आचार संहिता के सांचे में ढालने का प्रयत्न करें। यह एक सामूहिक अनुष्ठान है।
>
> \- आचार्य तुलसी

अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में

- 21 फरवरी 2023 को 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' शुभारंभ कार्यक्रम।
- 1 से 7 अक्टूबर तक ''अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह'' का आयोजन।
- 18, 19 व 20 नवम्बर 2023 को 74वें अणुव्रत अधिवेशन का आयोजन।
- 75 वर्षों का अणुव्रत-इतिहास प्रकाशित कर अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में लोकार्पित करना।
- 75 वर्षों में जिन जीवनदानी कार्यकर्ताओं ने अपनी समर्पित सेवाएं अणुव्रत आन्दोलन को दी हैं, उनका सम्मान करना।
- अणुव्रत दर्शन के प्रचार की दृष्टि से एक ''अणुव्रत वाहन'' अणुव्रत अनुशास्ता के यात्रा पथ में साथ चलेगा।
- राष्ट्रीय स्तर पर अणुव्रत लेखक सम्मेलन का आयोजन।
- अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉण्टेस्ट की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- विभिन्न संगोष्ठियों का आयोजन।
- 5 से 9 जनवरी 2024 तक शांति व अहिंसक उपक्रम पर 11वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन।
- 12 मार्च 2024 को अणुव्रत कार्यकर्ताओं की वृहद् उपस्थिति में 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' समापन कार्यक्रम।

अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द (राजस्थान)
head.office@anuvibha.org +91 91166 34515
delhi@anuvibha.org +91 91166 34512
www.anuvibha.org

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

प्रबन्ध मण्डल 2022–24

1.	श्री अविनाश नाहर	जयपुर	अध्यक्ष	9829060328
2.	श्री प्रताप दुगड़	कोलकाता	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	9830091182
3.	श्री राजेश सुराणा	सूरत	उपाध्यक्ष	9376513000
4.	श्रीमती माला कातरेला	चेन्नई	उपाध्यक्ष	9841725560
5.	श्री निर्मल गोखरू	भीलवाड़ा	उपाध्यक्ष	9414115066
6.	श्री विनोद कोठारी	मुम्बई	उपाध्यक्ष	9892108601
7.	श्री भीखम सुराणा	दिल्ली	महामंत्री	9810155861
8.	श्री राकेश बरड़िया	जयपुर	कोषाध्यक्ष	9829060447
9.	श्री जगजीवन चौरड़िया	कांकरोली	सहमंत्री	9414171900
10.	श्री उमेन्द्र गोयल	जयपुर	सहमंत्री	9828041713
11.	श्री मनोज सिंघवी	मुम्बई	सहमंत्री	9869644733
12.	डॉ. कुसुम लुनिया	दिल्ली	संगठन मंत्री	9891947000
13.	श्री बजरंग बैद	गुवाहाटी	संगठन मंत्री	9434355575
14.	श्री राजेश चावत	बेंगलुरु	संगठन मंत्री	9110613732
15.	श्री जय बोहरा	जयपुर	अंतरराष्ट्रीय संगठन मंत्री	9829216435
16.	श्री राजेश जैन गांधी	बेंगलुरु	अंतरराष्ट्रीय संगठन मंत्री	9900218422
17.	श्री देवेन्द्र डागलिया	मुम्बई	प्रकाशन मंत्री	9820330061
18.	श्री धर्मेन्द्र डाकलिया	गंगाशहर	प्रचार–प्रसार मंत्री	9414137580

अणुव्रत अमृत महोत्सव कोर टीम

1.	श्री संचय जैन	उदयपुर	राष्ट्रीय संयोजक	9829052452
2.	श्री अविनाश नाहर	जयपुर	पदेन सदस्य	9829060328
3.	श्री तेजकरण सुराणा	दिल्ली	पदेन सदस्य	9810028754
4.	श्री भीखम सुराणा	दिल्ली	पदेन सदस्य	9810155861
5.	श्री गौतम चौरड़िया	रायपुर	सदस्य	9425513000
6.	श्री प्रताप दुगड़	कोलकाता	सदस्य	9830091182
7.	श्री राजेश सुराणा	सूरत	सदस्य	9376513000
8.	श्री मर्यादा कुमार कोठारी	जोधपुर	सदस्य	9414134340
9.	श्री रतन दुगड़	कोलकाता	सदस्य	98310 86310

राज्य प्रभारी

1.	श्री अर्जुन मेड़तवाल	सूरत	गुजरात	9374536344
2	श्री दानमल पोरवाल	भिलाई	छत्तीसगढ़	9826162011
3.	श्री छतरसिंह चौरड़िया	गुवाहाटी	असम / त्रिपुरा	9435190721
4.	श्री कैलाश बोराणा	बेंगलुरु	कर्नाटक (दक्षिण)	9845502718
5.	श्री केसरीचंद गोलछा	हुबली	कर्नाटक (उत्तर)	9880224320
6.	श्री पुष्पराज बाफना	चित्रदुर्ग	कर्नाटक (उत्तर)	9945953480
7.	श्री रमेश धोका	मुम्बई	महाराष्ट्र	9869049037
8.	श्रीमती पुष्पा कटारिया	पुणे	महाराष्ट्र (खानदेश)	9921395555
9.	श्री तिलोक सिपानी	हैदराबाद	तेलंगाना	9248039889
10.	श्री टीकम चंद सेठिया	कानपुर	उत्तरप्रदेश	9336814379
11.	श्री विनोद बच्छावत	चाड़वास	राजस्थान (बीकानेर संभाग)	8826328328
12.	श्री ओम बांठिया	बालोतरा	राजस्थान (जोधपुर संभाग)	9680582309
13.	श्री अभिषेक कोठारी	भीलवाड़ा	राजस्थान (जयपुर–उदयपुर संभाग)	7727867624

14.	श्री विजयराज सोलंकी	खिंवाड़ा	राजस्थान (कांठा क्षेत्र संभाग)	9930792111
15.	श्री विनय रांका	कोयम्बटूर	तमिलनाडु	9842410152
16.	श्री विमल बैद	विजयवाड़ा	आंध्रप्रदेश	9490337200
17.	श्री प्रेम बैद	इंदौर	मध्यप्रदेश (संभाग – 1)	9926185525
18.	श्री अरुण एस.बी. श्रीमाल	करवड़	मध्यप्रदेश (संभाग – 2)	9827824443
19.	श्री विनोद बोथरा	जयगांव	पश्चिम बंगाल (पूर्व)	9433227658
20.	श्री कुलदीप सुराणा	लुधियाना	पंजाब	7888538122
21.	श्री हरिसिंह तातेड़	सोलन	हिमाचल प्रदेश	9899355521
22.	श्री भरत चौरड़िया	धरान	नेपाल	9842055685

प्रकल्प संयोजक

1.	श्री अर्जुनराम मेघवाल	दिल्ली	अणुव्रत संसदीय मंच	
2.	श्री निर्मल गोखरू	भीलवाड़ा	अणुव्रत अर्थ सम्बल अभियान	9414115066
3.	श्री राजेश चावत	बेंगलुरु	अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट	9110613732
4	श्री मनोज सिंघवी	मुम्बई	डिजिटल पत्रिका प्रकाशन	9869644733
5	श्री रमेश पटावरी	इरोड	जीवन विज्ञान विभाग	9442600853
6.	श्री राजकरण दफ्तरी	किशनगंज	चुनाव शुद्धि अभियान	9430055555
7	डॉ. नीलम जैन	बीकानेर	पर्यावरण जागरूकता अभियान	8058183197
8	श्री अमित नाहटा	अररिया	जेल सुधार अभियान	7004718872
9	श्री राजेश मेहता	मुम्बई	नशामुक्ति अभियान	9869273412
10	श्री राकेश तैलंग	कांकरोली	स्कूल विद ए डिफरेंस	9460252308
11	डॉ. सीमा कावड़िया	राजसमंद	अणुव्रत बालोदय	9413664780
12	श्री अभिषेक कोठारी	भीलवाड़ा	अणुव्रत बालोदय एजुटूर	7727867624
13	श्री राजकुमार चपलोत	मुम्बई	सर्वधर्म सद्भाव मंच	9820051669

14	श्री सुरेंद्र नाहटा	दिल्ली	पत्रिका प्रसार	9899445249
15	श्री सुभाष सिंघी	सिलीगुड़ी	पत्रिका सम्प्रेषण	9434019210
16	डॉ. कमलेश नाहर	चेन्नई	अणुव्रत कार्यकर्ता प्रशिक्षण	9841073210
17	श्रीमती पायल चौरड़िया	बारडोली	अणुव्रत संकल्प शृंखला	7779045555
18	श्री अशोक चौरड़िया	गंगाशहर	अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता	9950030181
19	श्री विमल गोलछा	जयपुर	अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र	9414189321
20	श्री अर्जुन मेड़तवाल	सूरत	अणुव्रत परीक्षा	9374536344
21	श्री वीरेन्द्र भाटी मंगल	लाडनूं	अणुव्रत लेखक मंच	9413179329
22	श्री दीपक आंचलिया	गंगाशहर	अणुव्रत इन कॉरपोरेट्स	9933096899
23	श्री चमन दुधोड़िया	छापर	अणुव्रत बालोदय किडजोन	9829998444
24	श्री अनिल समदड़िया	सूरत	अणुव्रत ऑन व्हील्स	9374615000
25	श्री पंकज दुधोड़िया	कोलकाता	अणुव्रत मीडिया	7003423224
26	श्री प्रकाश तातेड़	उदयपुर	सह–संपादक 'बच्चों का देश'	9351552651
27	श्री प्रमोद घोड़ावत	दिल्ली	अणुव्रत इतिहास	9811020520
28	श्री पी. सी. जैन	दिल्ली	ग्लोबल ई–मैगजीन	9873245000
29	श्री आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	लाडनूं	अणुव्रत व्याख्यानमाला	9414870428
30	श्री प्रकाश भण्डारी	पिंपड़ी चिंचवड़	संयम दिवस	9371092562
31	श्री रमेश डोडावाला	सूरत	अणुव्रत गीत महासंगान	9374613000
32	श्री तिलोक सिपानी	हैदराबाद	अणुव्रत समिति ट्रस्ट पंजीयन	9248039889
33	श्री कैलाश बोराणा	बेंगलुरु	अणुव्रत अमृत स्मारक	9845502718
34	श्री बाबूलाल दुगड़	दिल्ली	जनप्रतिनिधि सम्मलेन	9811417470
35	श्री धनपत लुनिया	नई दिल्ली	अणुव्रत काव्यधारा	9891239000

36	श्री कुलदीप सुराणा	लुधियाना	राज्यस्तरीय आयोजन	7888538122
37	श्री दीपक डागलिया	मुम्बई	अणुव्रत ग्लोबल संगोष्ठी	9821005844
38	श्री ललित आंचलिया	चेन्नई	अणुव्रत यात्रा	93809 15456
39	श्री सुरेश बागरेचा	अहमदाबाद	अणुव्रत प्रदर्शनी	9429083290
40	श्रीमती पुष्पा कटारिया	पुणे	अणुव्रत अमृत किट	9921395555
41	श्रीमती रचना कोठारी	चूरू	विद्यार्थी एवं शिक्षक अणुव्रत	9079641997
42	श्री भरत चौरड़िया	धरान	अणुव्रत दिवस आयोजन	9842055685
43	श्री अरुण एस.बी. श्रीमाल	करवड़	अणुव्रत समूह	9827824443
44	श्री रमेश धोका	मुम्बई	अणुव्रत वाहिनी	9869049037

चुनावशुद्धि अभियान

1.	श्री उत्तमचंद पगारिया	कोल्हापुर	मध्यांचल प्रभारी	8805216999
2.	श्री विकास दूगड़	कोलकाता	पूर्वांचल प्रभारी	9804691087
3.	श्री राकेश चौरड़िया	सूरत	पश्चिमांचल प्रभारी	9374720647
4.	श्री विजयराज सोलंकी	खिंवाड़ा	उत्तरांचल प्रभारी	9930792111
5.	श्री अरविंद सेठिया	तिरूवन्नामलई	दक्षिणांचल प्रभारी	9655246521

अर्थ संबल अभियान

1.	श्री संजय जैन	फतेहाबाद	मध्यांचल प्रभारी	9215517430
2.	श्री प्रदीप सिंघी	कोलकाता	पूर्वांचल प्रभारी	9831085087
3.	श्री मुकेश भादानी	त्रिपुर	उत्तरांचल प्रभारी	7639999764
4.	श्री सुरेश दक	बेंगलुरु	दक्षिणांचल प्रभारी	9448383315
5.	श्री ज्योति कुमार बेंगानी	काठमांडू	नेपाल प्रभारी	9851020595

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट

1.	श्रीमती साधना कोठारी	इंदौर	सह संयोजिका मध्यांचल	9300728836
2.	श्री संजय चौरड़िया	गुवाहाटी	सह संयोजक पूर्वांचल	9864032611
3.	श्रीमती प्रणीता तलेसरा	उदयपुर	सह संयोजिका उत्तरांचल	9414159617
4.	श्रीमती सुभद्रा लुणावत	चेन्नई	सह संयोजिका दक्षिणांचल	9841622082
5.	श्रीमती मामुल कोटेचा	अम्बिकापुर	सह संयोजिका	9926512363

जीवन विज्ञान विभाग

1.	श्री कमल बेंगानी	रायपुर	सह संयोजक	9300673754
2.	श्री नीरज बम्बोली	मुम्बई	सह संयोजक	7710013400
3.	श्रीमती ममता श्रीश्रीमाल	ठाणे	स्कूल प्रबंधन प्रभारी	9320418410
4.	श्रीमती हंसा संचेती	दिल्ली	उच्च शिक्षा प्रबंधन प्रभारी	9350392081
5.	श्री राकेश खटेड़	चेन्नई	प्रशिक्षण प्रबंधन प्रभारी	9380184000
6.	श्री विमल गुलगुलिया	जयपुर	तकनीकी सहयोग प्रभारी	9460306844
7.	श्रीमती रीना सेठी गोयल	जयपुर	ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रभारी	9785026111
8	श्री सुरेश कोठारी	इंदौर	जीवन विज्ञान अकादमी,मध्यप्रदेश	9826909393
9	श्री दानमल पोरवाल	भिलाई	जीवन विज्ञान अकादमी, छत्तीसगढ़	9826162011
10	श्री ललित आच्छा	बेंगलुरु	जीवन विज्ञान अकादमी, कर्नाटक	9241767776

मीडिया टीम

1.	श्री जयंत सेठिया	लुधियाना	सदस्य	9782297977
2.	श्री संतोष सेठिया	चेन्नई	सदस्य	9043394568
3.	श्री बीरेन्द्र बोहरा	कोलकाता	सदस्य	9830084889
4.	श्री अमित कांकरिया	पिपंडी चिंचवड़	सदस्य	9422092222

अणुव्रत की बात

तुलसी का बिरवा

तुलसी का बिरवा

मनोज त्रिवेदी

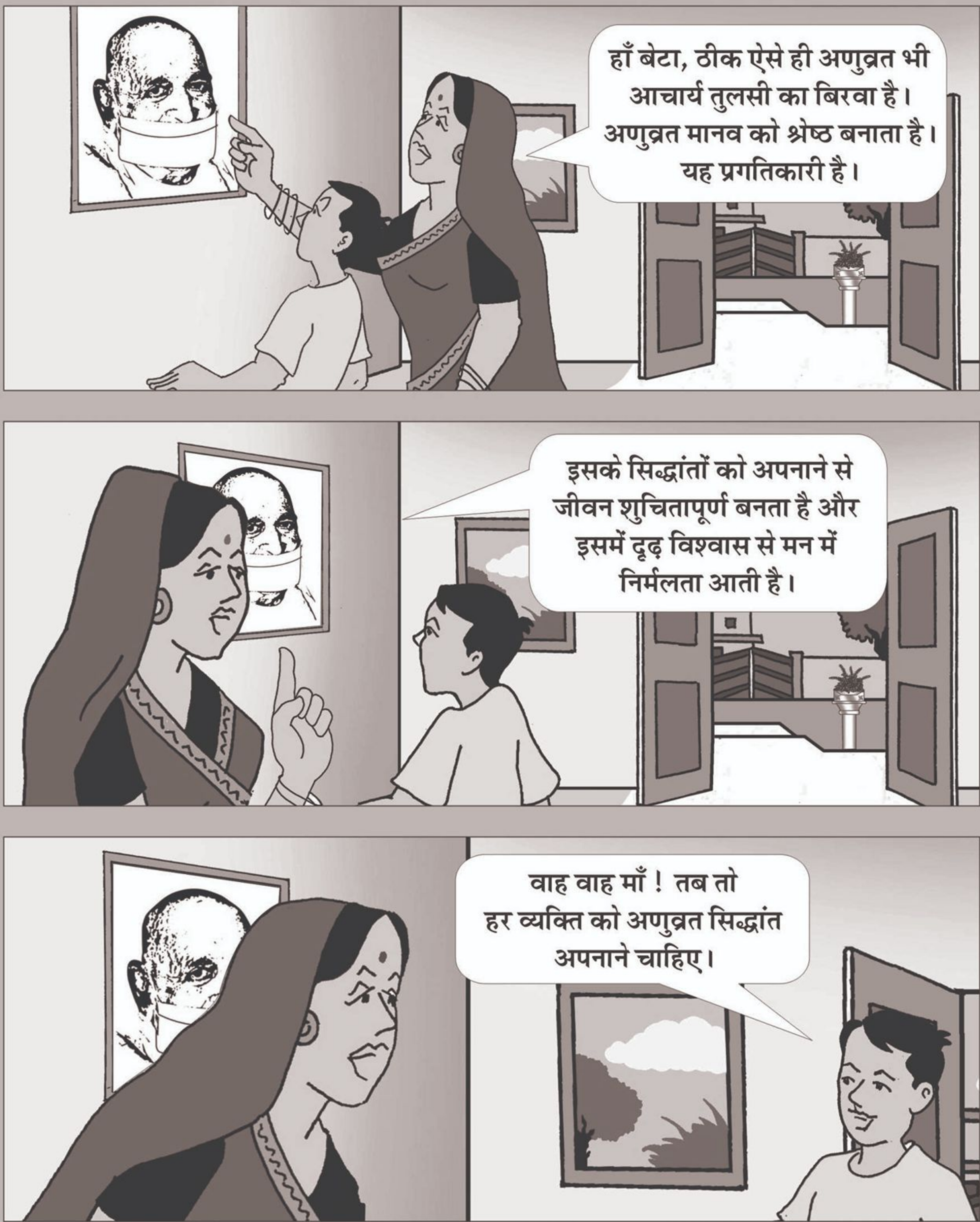

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
February-March, 2023

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/02/2023
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

अणुविभा

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

इस महाअभियान में जन-जन की सहभागिता का विनम्र अनुरोध

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**